श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : सिद्ध श्री शुभ ओपमा...)

दोहा : देवां रे सिरमोर ने, प्रथम मनावां आज ।
भगतां री अरजी सुणों, पत राखो महाराज ।।

घणे मान सूं भेज रह्या थाने, पाती लिख मनुहार जी,
रिद्धि सिद्धि संग आइज्यो थांसू, अरजी बारम्बार जी,
हे गोरी सुत गणराज, पधारो गणपत जी महाराज ।। टेर ।।

सब देवां में सबसूं पहल्यां, न्यूतो थाने भिजायो है,
श्याम धणी रो घणे चाव सूं, कीर्तन आज करायो है,
हे गोरी सुत गणराज... ।। १ ।।

अंतर केशर महक रह्या है, खूब सज्यो सिणगार जी,
ऊंचे आसण आप विराजो, रिद्धिसिद्धि रा भरतार जी,
हे गोरी सुत गणराज... ।। २ ।।

मोदक मिश्री थाल सज्या म्हारा, देवा थाने आणो है,
छप्पन भोग छत्तिसों मेवा, आकर भोग लगाणो है,
हे गोरी सुत गणराज... ।। ३ ।।

विघ्न विनाशक विघ्न हटाओ, कीर्तन सफल कराओ जी,
थां बिन कारज सिद्ध न होसी, ''हर्ष'' थे बेगा आओ जी,
हे गोरी सुत गणराज... ।। ४ ।।

श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : आ लौट के आजा मेरे मीत...)

आओ आओ जी पधारो गणराज, भगत थाने आज बुलावे जी,
थारी बाट उड़ीकां महाराज, भगत थाने आज बुलावे जी ।।

सबसूं पहल्यां थाने मनावां, कारज सिद्ध कराओ,
श्याम धणी रो उत्सव मांडयो, आके सफल बणाओ,
रिद्धि-सिद्धि ने सागे ल्याओ आज ।। १ ।।

मूसक री करके असवारी, बेगा आन पधारो,
सेवक थारा जोय रह्या है, देवा रस्तो थारो,
बेगा बेगा सा पधारो महाराज ।। २ ।।

गुड़ के मोदक भोग है प्यारो, थारे भोग लगाया,
छप्पन भोग छत्तिसों मेवा, थारे भेंट चढ़ाया,
जीमो जीमों जी जिमावां थाने आज ।। ३ ।।

विघ्न विनाशक हे गणनायक, सगला विघ्न हटाओ,
एक दंत गज वदन विनायक, ''हर्ष'' थे बेगा आओ,
बैठो बैठो जी थे ऊँचे आसण आज ।। ४ ।।

श्री पितरदेव वन्दना

(तर्ज : सरकाय लेओ खटिया...)

पित्तर जी म्हापे महर करो,
थारी किरपा की नजर करो।। टेर ।।

टाबरिया थांसू अरजी लगाई,
शरणे पड़या हाँ करल्यो सुणाई,
थारे टाबरां की आके विपदा हरो ।। १ ।।

पैन्डे में थारो दिवलो चसावां,
मावस ने थारी ज्योत जगावां,
म्हारे आंगणे में देवा खुशियां भरो ।। २ ।।

मनड़े री बात्याँ कीने सुणावां,
थे म्हारा रक्षक थाने बतावां,
म्हारे आँसुड़ा पे थोड़ो ध्यान धरो ।। ३ ।।

सगलो कबीलो धोक लगावे,
''हर्ष'' चरण में शीश झुकावे,
म्हारा अटक्योड़ा कारज सिद्ध करो ।। ४ ।।

श्री गुरुदेव वन्दना

(तर्ज : सौ बार जनम लेगें...)

गुरुदेव के चरणों में, हम शीश नवाते हैं,
उस ज्ञान के सागर की, हम आरती गाते हैं ।। टेर ।।

गुरुवर जो नहीं मिलते, जीवन ही नहीं खिलता,
सत्पथ पर चलने का, जरिया ही नहीं मिलता,
जीवन में सद्‌गुण का, वो दीप जलाते हैं ।। १ ।।

अज्ञान की राहों में, जब भी मैं कभी भटकूं,
दुष्कर्मों के झूठे, दलदल में कभी अटकूं,
झट थाम के वो ऊंगली, रस्ता दिखलाते हैं ।। २ ।।

है कौन सिवा इनके, जो मोक्ष दिलायेगा,
ईश्वर से मिलने का, रस्ता दिखलायेगा,
गुरुवर ही ''हर्ष'' हमें, भव पार लगाते हैं ।। ३ ।।

श्री गुरुदेव वन्दना

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादान...)

इक कोरे कागज पे, तूने कलम चलाई है ।
सतपथ की राह गुरु, तूने दिखलाई है ।। टेर ।।

माता ने जन्म दिया, गुरुवर को सौंप दिया,
अज्ञान अंधेरो का, क्षण भर में लोप किया,
सत्कर्म सरल भाषा, तूने सिखलाई है ।। १ ।।

तू ज्ञान का सागर है, गुणगान करें तेरा,
सदगुण की गागर है, सम्मान करें तेरा,
प्रभुवर से मिलने की, युक्ति बतलाई है ।। २ ।।

सतगुरु मिल जाने से, जीवन खिल जाता है,
भव पार उतरने का, जरिया मिल जाता है,
गुरु की किरपा से ''हर्ष'', मुक्ति मिल पाई है ।। ३ ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : चोरी चोरी मैंने भी तो...)

तेरी मेरी करते बन्दे उमरिया, बिताई रे-२,
जप ले हरि नाम-३ तुझको, मुक्ती मिले ।। टेर ।।

माटी की है काया प्यारे, जाने क्या ठिकाना है,
दो दिन का मेला है रे, पीछे सबको जाना है,
काहे तूने जिंदगानी, माटी में मिलाई रे ।। १ ।।

धर ले तू ध्यान बंदे, बड़ा काम आयेगा,
भव से उतर जाने का, रास्ता दिखायेगा,
थाम लेगा हाथ तेरा, सौंप दे कलाई रे ।। २ ।।

उसको भजे जा बंदे, कुंदन बन जायेगा,
जितना तपेगा उतना, निखरता ही जायेगा,
सोने जैसी काया ''हर्ष'', खोट में घड़ाई रे ।। ३ ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगों से...)

दोहा : जैसी जिसकी करनी प्यारे उसके वैसी लाग है ।
माता ने बस जन्म दिया रे अपना अपना भाग्य है ।।

दास कबीर कहे रे भगतो भाग्य का लेखा है न्यारा,
माता का क्या दोष है इसमें, कर्म पुत्र का न्यारा ।। टेर ।।

इक माता के चार पुत्र हैं, सबकी किस्मत है न्यारी,
एक बन गया राजकुंवर, दूजा करता चौकीदारी,
तीजा घूमे इधर उधर, चौथे को सत्संग है प्यारा ।। १ ।।

चार चार बछड़ों को भगतों, गोमाता ने जन्म दिया,
इक सूरज का सांड बन गया, दूजा शिव का नांदिया,
तीजा दिन भर हल को खींचे, चौथा कोल्हू को बेचारा ।। २ ।।

बरतन चार बने माटी के, सबकी है करनी न्यारी,
पहला शिव के शीश चढ़े, दूजे को थामे पणिहारी,
तीजा जल से भरी गागरी, चौथा मरघट का मारा ।। ३ ।।

एक बेल के चार तम्बूरे, ''हर्ष'' एक से एक बड़ा,
संत जनों के हाथ में पहला, दूजा गंगा घाट पड़ा,
तीजा बीण सपेरे की बनता, चौथा भिक्षुक को प्यारा ।। ४ ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : हमसफर मेरे हमसफर...)

भावना तो भक्ति है, भावना बलवान है,
भावना से खेल ना रे, भावना भगवान है ।। टेर ।।

भावना से राम चौदह, साल जंगल मे रहे,
भावनावश कृष्ण राधे, रानी के वश मे रहे,
भावना मे लिप्त हो, भक्तिमय हनुमान है ।। १ ।।

भाव से बढ़कर जहां में, दूजी ना सौगात है,
भावना से खेल करना, दुष्टता की बात है,
भावना से खेलता वो, आदमी शैतान है ।। २ ।।

भावना ही कौरवों के, नाश का कारण बनी,
बाल्मीकी की कलम से, देखो रामायण बनी,
भावना के बिन अधूरा, हर कोई इन्सान है ।। ३ ।।

जैसी तेरा भावना है, वैसा फल तू पायेगा,
''हर्ष'' काटें बोयेगा तो, कैसे कलियाँ पायेगा,
आदमी की जिन्दगी मे, भावना ही प्रधान है ।। ४ ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : इचकदाना...)

उपर वाले मानव तन को तूने रेल बनाया, ऊपर वाले,
पांच तत्व को मिलाके तूने, डिब्बों को जुड़वाया, ऊपरवाले ।।

अंगो को इस के पुरजे बनाये,
आशा-विश्वास के पहिये लगाये,
नो महिनों में इसे बनाया नीली छतरी वाले ।। ऊपरवाले... ।।

पाप और धरम की पटरी पे चलती,
कर्मों के सिग्नल से रूकती व चलती,
लख चौरासी स्टेशन छोड़े, भोगे भोग निराले ।। ऊपरवाले... ।।

उदर की अग्नि में ईधन है जलता,
भजनों से बिजली का लावा निकलता,
जीवन पथ को रोशन करती फैलाती उजाले ।। ऊपरवाले... ।।

मन रूपी गार्ड को झण्डी थमाई,
बुद्धि को टी.टी. की वरदी पहनाई,
'हर्ष' जहां ये मन जो चाहे झण्डी वही हिला ले ।। ऊपरवाले... ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : दुनिया बनाने वाले...)

दुनिया बनाने वाले, वाह रे तेरी माया, तेरा
पार न कोई पाया तेरा, पार न कोई पाया ।। टेर ।।

कोयल को काहे तूने, काला बनाया,
बगुले को उजले, रंग में रंगाया,
काहे किया रे रत्नाकर को खारा-२,
कोई ना समझा ये खेल तुम्हारा,
क्या क्या बतायें कैसी भूल तू करता आया ।। १ ।।

काबुल कुदेश में, मेवे उपजाए,
खट्टे करीर लेकिन, वृज में उगाए,
ब्राह्मण को तूने बनाया भिखारी-२,
अनपढ़ को दुनिया की दौलत दी सारी,
उलटे को सीधा और सीधे को उलटा बनाया ।। २ ।।

सोने को तूने इतना, सुंदर बनाया,
जिसने भी देखा उसका, मन ललचाया,
काहे ना इसमें सुगंध थोड़ी डाली-२,
बदले में हीरण की नाभी में डाली,
''हर्ष'' तुम्हारी महिमा, कोई भी जान न पाया ।। ३ ।।

(तर्ज : चांदी की दीवार...)

परमेश्वर की ना कोई काया, ना कोई आकार है,
कण-कण के वासी का जग में, पाया किसने पार है ।। टेर ।।
बिन पैरों के चलता है वो, कानों बिन हर बात सुने,
हाथ नहीं दिखते पर जग के, लाखों करोड़ो काम करे,
अजर-अमर वो निर्विकार है, महाप्रलय में भी ना मरे,
बिन सूई बिन धागा नर-तन, चोला ये तैयार है,
कण-कण के वासी... ।। १ ।।

पत्ता-पत्ता कतरन न्यारी, बिन कैंची कैसे कतरे,
अलग-अलग शक्लों के ठाँचे, बिन साँचे कैसे उतरे,
हर क्षण हर पल का ये नजारा, देख रही उसकी नजरें,
हर अफसर का है वो अफसर, सबका वो सरदार है,
कण-कण के वासी... ।। २ ।।

मेह बरसे तो यूं लागे ज्यूं, आसमान में सागर है,
सूरज चांद सितारे सारे, ''हर्ष'' उसी के चाकर है,
यथा योग्य सबको मिल जाता, जिसकी जितनी चादर है,
उसकी नजर में चीटीं-मानव, जीव सभी इकसार है,
कण-कण के वासी... ।। ३ ।।

(तर्ज : अजहू न आये बालमा...)

भजले रे मन प्रभु नाम को,
जीवन बीता जाये SSS जाये रे ।। टेर ।।

नींद से उठ अब ध्यान लगा रे,
प्रभु से मिलन की प्यास जगा रे,
काहे को देर करे मनवा...,
तेरे अपने है आज है आज पराये,
जीवन बीता... ।। १ ।।

पाप की गठरी सर पे उठाये,
''हर्ष'' तुम्हारा चित्त भरमाये,
आ रे प्रभु में जरा रम जा...,
तेरा वक्त गुजरता जाये,
जीवन बीता... ।। २ ।।

(तर्ज : है प्रीत जहां की रीत सदा...)

दोहा : हिन्दू परिवार का कहना क्या, हर रोज जहाँ उल्लास रहे ।
हर वार प्रभु को अर्पित है, हर मास यहां त्योहार रहे ।।
तिथियों की बात निराली है, हर तिथि की अपनी गाथा है ।
एकम से अमावश पूनम तक, यहां पर्व मनाया जाता है ।।

हर रोज रहे त्योहार यहां, सारे जग को बतलाता हूँ,
हिन्दू कुल में मैं जन्मा हूँ, हिन्दू का धर्म निभाता हूँ ।। टेर ।।

भोले शंकर का सोमवार, मंगल नवनिधि के दाता का,
गणपत का बुद्ध गुरू का बृहस्पति, शुक्र संतोषी माता का,
शनिवार शनि रवि सूरज का-२,
हर वार-२, की महिमा गाता हूँ ।। १ ।।

चैत सुदी हनुमान जयन्ति, आखा तीज बैसाख में है,
जेठ में आये गंग दशहरा, रथ का पर्व आषाढ़ में है,
सावन में झूलन उत्सव का-२,
त्योहार-२,खुशी से मनाता हूँ ।। २ ।।

(२)

श्री कृष्ण का जन्मोत्सव, हम भादो में मनाते हैं,
विजयादशमी व नवराते, हम अश्विन में मनाते हैं,
कार्तिक में दीपों से अपना-२,
घर बार-२, मजे से सजाता हूँ ।। ३ ।।

माँ राणीसती की जन्म जयंती, मंगसिर महिने में आये,
संक्रान्ति व वसन्त महोत्सव, पोष-माघ लेकर आये,
फागुन में होली खेलन मैं-२,
दरबार-२, श्याम के जाता हूँ ।। ४ ।।

कितनी महिमा है तिथियों की, हर तिथि की अपनी गाथा है,
एकम से अमावस-पूनम तक, यहाँ पर्व मनाया जाता है,
हर वार-तिथि उत्सव मेला-२,
मैं ''हर्ष''-२, तुम्हे बतलाता हूँ ।। ५ ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : धमाल)

मोडो हो ज्या रे तू हरि नाम का मणका पो ज्या रे।। टेर ।।

राम नाम की खेती करले, बीज भजन का बोज्या रे,
रूत आयां पर तू फल पासी, सुख सूं सो ज्या रे ।।

लगाके साबुण हरि नाम की, मैल पाप का धोज्या रे,
हरि नाम को उबटण मलके, उजलो हो ज्या रे ।।

राम सुधा रस पीले भाया, हरि भजन में खोज्या रे,
परमानन्द परमसुख पासी, करसी मोज्यां रे ।।

'हर्ष'' राम की मीठी मिश्री, भगतां ने तू देज्या रे,
मुंडो सै को मीठो कर खुद, मीठो हो ज्या रे ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : चाँद सी मेहबूबा हो...)

गंगा किनारे मंदिर तेरा, भूतों का तू स्वामी है,
सारी दुनिया बोले तुझको, बाबा औघड़दानी है ।। टेर ।।
पीछे में जल की धारा है, तेरे सामने मैया तारा है,
मरघट के पास में डेरा है, ''क्या अद्‌भुत रैन बसेरा है''-२,
देव तुम्हारी महिमा गावे, माया किसने जानी है ।।
सारी दुनिया ... ।। १ ।।
माथे पर तेरे चंदा है, तो बहती जटा में गंगा है,
भूतों के साथ में रहता है, ''क्या तेरा गोरख धंधा है''-२,
शमशानों में धूनी रमावे, ये क्या तूने ठानी है ।।
सारी दुनिया ... ।। २ ।।
जिसने भी तेरा नाम जपा, उसका तूने कल्याण किया,
जो रोज नियम से पूजा करे, ''उसको तो मालामाल किया''-२,
तीनों लोकों में दूजा ना, तुझसा कोई दानी है।।
सारी दुनिया ... ।। ३ ।।
तू भूतेश्वर कहलाता है, तू सबका भाग्य विधाता है,
जो ''हर्ष'' तुम्हारा ध्यान धरे, ''तू उनका साथ निभाता है''-२,
भूतेश्वर बाबा का भगतों, और न कोई सानी है ।।
सारी दुनिया ... ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : मेहन्दी रची थारे हाथां में...)

भूतेश्वर ने ध्याल्यो जी, सोया भाग्य जगाल्यो जी,
भगतां रो यो रखपाल बैठ्यो, भोलो-धणी ।। टेर ।।
माथे उपर चंदा सोहे, जटा में गंग बिराजे रे,
मुकुट मणी री आभा सोहे, नाग गले में साजे रे,
आने आज रिझाल्यो जी-२, बिगड़ा काम बणाल्यो जी,
भगतां रो यो रखपाल बैठ्यो, भोलो... ।। १ ।।
आक-धतूरा खावे बाबो, भंगिया भोग लगावे रे,
अंग-भभूत रमावे भोलो, धूनी अलख जगावे रे,
गंगाजल सूं नुहाल्यो जी-२, काचो दूध चढ़ाल्यो जी,
भगतां रो यो रखपाल बैठ्यो, भोलो... ।। २ ।।
नीलकंठ बाबा को म्हाने, रूप सुहाणो लागे रे,
भोला जी को ध्यान धरयां सूं, सगला संकट भागे रे,
भगतो मिलकर ध्याल्यो जी-२, सगला कष्ट मिटाल्यो जी,
भगतां रो यो रखपाल बैठ्यो, भोलो... ।। ३ ।।
सोमवार ने भूतनाथ दर्शन री महिमा भारी रे,
निशदिन आंके माथो टेकण, आवे नर और नारी रे,
''हर्ष'' के सागे चालो जी-२, जाकर दर्शन पाल्यो जी,
भगतां रो यो रखपाल बैठ्यो, भोलो... ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : ढ़ोला ढ़ोल मजीरा...)

भोला आक धतूरा खावे रे,
पीकर भंग का प्याला, तन पर भष्म रमावे रे,
भष्म रमावे रे, गले विषधर लिपटावे रे ।। टेर ।।

माथे उपर चन्द्र बिराजे, जटा में गंग की धार,
कर त्रिशूल व डमरु साजे, नन्दी को असवार,
गट-गट विष का प्याला पीवे रे, पीकर... ।। १ ।।

तीन लोक बस्ती में बसा कर, आप बसे बन माय,
भूतां को प्रेतां को सागो, माया अजब रचाय,
बाबो धूनी अलख जगावे रे, पीकर... ।। २ ।।

पर्वत राज की बेटी ब्याही, बन कर जोगी फकीर,
''हर्ष''कहे गौरा मैया की, आज खुली तकदीर,
देवता झूमे नाचे गावे रे, पीकर... ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : ढोल बाजे...)

‘‘बोल प्यारे-३’’,‘‘तू हर हर बम बम बोल”-२,
भोले जी को याद किये जा हर हर बम बम जाप किये जा,
काँधे काँवड़ धर के बोल, ‘‘तू हर हर बम बम बोल” ।। टेर ।।
धीरे-धीरे चलता जा, भोले की जय करता जा,
दुनियाँ से तू ध्यान हटा, भोले जी का ध्यान लगा,
एक पल में हरे, भोला दुखड़े तेरे -२,
भोले की जैकार करेगा, भोला बाबा पार करेगा,
देगा तेरी किस्मत खोल, ‘‘तू हर हर... ।। १ ।।
कंकर पत्थर पे चलना, चलते रहना ना रूकना,
संकट में तू ना डरना, घबरा के तू ना झुकना,
जबसे तुम हो चले, एक पल ना रूके-२,
चाहे जितनी मुश्किल आये, भोले बाबा दूर भगाये,
बाबाजी के चरणों में डोल, ‘‘तू हर हर... ।। २ ।।
‘‘हर्ष’’ भोले के दर जाके, कहना तू मन की बातें,
जो भी दरपे जाता है, मन इच्छा फल पाता है,
इनके दर जाना, तुझको है जाना-२,
जल से इनको नहला देगा, सोई किस्मत चमका देगा,
बाबा की दया का क्या मोल, ‘‘तू हर हर... ।। ३ ।।

श्री शिव विवाह

(तर्ज : चिरमी, फाल्गुनी पाठक...)

नन्दी के घुंघरू बाज रहे-२,
शिवशंकर की चली बारात,
भगत सारे नाच रहे ।। टेर ।।

होले होले बूंद पड़े दूल्हा बन कर आज चले,
भांत भांत के बाराती शंकर की बारात चले,
ढ़ोल नगाड़े बाज रहे-२, शिव शंकर... ।। १ ।।

अंबर से बम भोले पर पुष्प देवता बरसाये,
मंगल गान करे सारे मस्ती में नाचे गाये,
आज बधाई बांट रहे-२, शिव शंकर... ।। २ ।।

पर्वत राज की बेटी के ‘‘हर्ष’’ नसीबा आज खुले,
दुल्हा बनके गोरां को ब्याहने खुद भगवान चले,
नारद सेहरा बांध रहे-२, शिव शंकर... ।। ३ ।।

(तर्ज : सजन रे झूठ मत बोलो...)

भजन भोले का करले रे, ये तेरे काम आयेगा
ये भाई बंधु हैं तेरे, कोई ना साथ जायेगा ।। टेर ।।

मेरा भोला है भण्डारी, दयालू है ये त्रिपुरारी,
दया इसकी बड़ी भारी, दया इसकी बड़ी भारी,
यही रस्ता दिखायेगा, भजन भोले ... ।। १ ।।

जिन्हें अपना तू है माने, नहीं तेरे वो बेगाने,
करम ही साथ में जाने, करम ही साथ में जाने,
इन्हे ही साथ पायेगा, भजन भोले ... ।। २ ।।

जरा सा नाम तू जपले, तेरे कष्टों को ये हरले,
सुबह और शाम तू भजले, सुबह और शाम तू भजले,
ये दुखड़ों को मिटायेगा, भजन भोले ... ।। ३ ।।

अरे तू साथ क्या लाया, तू खाली हाथ ही आया,
ये झूठी जग की है माया, ये झूठी जग की है माया,
यही सतपथ दिखायेगा, भजन भोले ... ।। ४ ।।

(तर्ज : रुणिचे बुलाल्योजी, भोपाली राग...)

बाबा ने रिझास्यां जी, चालोजी भोले बाबा ने रिझास्यां जी,
आशीष पास्यां, मिलकर गास्यां, मीठा भजन सुणास्यां जी ।।

आक धतूरा भंगिया, आंके भोग लगास्यां,
भोला जी के सिर पर, काचो दूध चढ़ास्यां,
अंग-भभूत लगास्या जी, बाबा... ।। १ ।।

बाबो महारो भोलो, बेगो मान ही जावे,
एक ही लोटे जल सूं, भोलो खुश हो जावे,
गंगा जल सूं नुहास्यां जी, बाबा... ।। २ ।।

घृत-मधु-चीनी से, म्हे अभिषेक करास्यां,
उख के रस सूं बाबा, म्हे रसपान करास्यां,
अन्न-धन्न सूं कोठा भरवास्यां जी, बाबा... ।। ३ ।।

''हर्ष'' त्रिलोकी बाबो, निजरां सब पर राखे,
भूखो कोई ना सोवे, सबका संकट भागे
दर्शन सूं म्हे तर जास्यां जी, बाबा... ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : यशोदा तेरा लल्ला...)

गोरां ये तेरा भोला नहीं रे बिल्कुल भोला,
कभी तो खाये आक धतुरा-२, कभी ये भंग का गोला ।।

शमशानो में वास करे ये धुनी अलख जगाये,
साधु भेष बनाके बैठा भंगिया भोग लगाये,
गल सर्पों का हार विराजे-२, संग भूतों का टोला ।
गोरां ये तेरा भोला... ।। १ ।।

विष का प्याल गटगट पीये गांजा रोज चढ़ाये,
अम्मल के गोले खाकर ये अमली नाथ कहाये,
जब ये ताण्डव नाच दिखाये-२, धरती अम्बर डोला ।
गोरां ये तेरा भोला... ।। २ ।।

बूढ़े बैल करे असवारी ओरों से है हटके,
गांजा सुल्फा चरस तम्बाकू खाता है ये डटके,
''हर्ष'' कहे क्या तुझे बतायें-२, ये है बम का गोला ।
गोरां ये तेरा भोला... ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : होलिय में उड़े रे गुलाल...)

नांदिये पे होके सवार, भोला जी चाल्या गोरां के,
खाकर धतूरा और भांग, भोला जी गोरां के ।। टेर ।।

नंदी का घुंघरु, छम-छम बोले,
शंकर को डमरु, डम-डम बोले ,
कांधे पर नाचे कालो नाग, भोला... ।। १ ।।

भांत-भांत का, देख बाराती,
सारे नगर में, भगदड़ माची,
मच गई हा हा कार, भोला... ।। २ ।।

दुल्हे को अमली, रुप जो देखी,
गोरां की माता जी, हुई अचेती,
हाथां से छूट गयो थाल, भोला... ।। ३ ।।

नारद जी तब, उठ बोले माता,
''हर्ष'' ये सारे, जग का विधाता,
गोरां का खुल गया भाग, भोला... ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : तन डोले मेरा मन डोले...)

शिव भोले, बम बम बोले, तेरे सेवक करे पुकार रे,
तू तीन लोक का स्वामी है ।। टेर ।।

देवों में तू महादेव है बाबा औघड़दानी,
ब्रह्मा विष्णु महिमा गावे माया किसने जानी,
ओ बाबा माया किसने जानी,
चढ़े भंग के गोले, तुझपे मेरे भोले, बहे दूध की सिर पे धार रे ।।
तू तीन लोक ... ।। १ ।।

रोज नियम से दर्शन करने आते नर और नारी,
आक धतूरे से खुश होते भूतनाथ भण्डारी,
ओ बाबा भूतनाथ भण्डारी,
सब मिल बोले, तेरी जय भोले, खड़े दोनों हाथ पसार रे,
तू तीन लोक ... ।। २ ।।

सृष्टि के हो पालन कर्त्ता जग के भाग्य विधाता,
सोमवार जो ''हर्ष'' तुम्हारा दर्शन करने जाता,
ओ बाबा दर्शन करने जाता,
किस्मत खोले, शिव बम भोले, तू करता बेड़ा पार रे,
तू तीन लोक ... ।। ३ ।।

श्री मातृ वन्दना

(तर्ज : इक प्यार का नगमा है...)

तेरे दूध है आंचल में, आँखों में माँ पानी है,
ममता की मूरत तू, करूणा की निशानी है ।। टेर ।।

कितने ही दर्द सहे, इन्सान को जनम दिया,
अपने ही खून से माँ, हमको तूने सींच दिया,
संसार में तुझ जैसा, कोई और न दानी है ।। ममता की... ।।

संस्कार तुम्हीं ने दिये, शिक्षा और ज्ञान दिया,
बच्चों की खुशी के लिए, हर सुख का त्याग किया,
गुरुओं की गुरु तू ही, तेरी अजब कहानी है ।। ममता की... ।।

ममता का रस पीने, प्रभु ने अवतार लिया,
तेरी गोद में खेले वो, अमृत रसपान किया,
तेरे तप की महिमा को, वेदों ने बखानी है ।। ममता की... ।।

दुनिया इक हाट है ''हर्ष'', हर चीज यहाँ बिकती,
सब कुछ मिल सकता है, इक माँ ही नहीं मिलती,
ब्रह्माण्ड में ना दूजा, माँ का कोई सानी है ।। ममता की... ।।

(तर्ज : तू कितनी अच्छी है...)

माँ तू गीता है, माँ रामायण है,
कितना पावन है, तेरा नाम-२ ।। टेर ।।

मैं जो हँसू तेरी, पलके छलकती,
रोऊं तो तेरी, आँखे बरसती,
गंगा-जमना की धारा माँ, बहती है आँखों से ।
माँ तू गीता है... ।। १ ।।

आंचल में तेरे, शीतल छाया,
दुनिया का सुख, इसमें समाया,
वेद पुराण बसे रहते मां, तेरी ही बातों में ।
माँ तू गीता है... ।। २ ।।

चरणों को तेरे, धोकर पी लें,
''हर्ष'' खुशी से, जीवन जी लें,
बच्चों की खुशियां बसती है, तेरी ही सांसो में ।
माँ तू गीता है... ।। ३ ।।

हर वक्त मुझे अंबे, बस तू ही नजर आये,
माँ छोड़ के जग आया, अब दास किधर जाये ।। टेर ।।

अपनो ने ठुकराया, माया की फितरत है,
गर्दिश में आन पड़ा, क्या मेरी किस्मत है,
माँ ! तेरी शरण में हूं, तू रखे या बिसराये ।। १ ।।

चरणों में जगह दे दे, बस इतनी तमन्ना है,
तेरा नाम ही जपना है, बस तुझको ध्याना है,
वरना तो हे मां मेरी, कहीं जां ना निकल जाये ।। २ ।।

धरती और अम्बर पे, माँ राज तुम्हारा है,
इन सबकी क्या गिनती, ब्रह्माण्ड तुम्हारा है,
तेरे एक इशारे से, ये वक्त भी थम जाये ।। ३ ।।

सीने से लगाले माँ, बस इतनी दया कर दे,
आंचल में छुपा ले माँ, बेटे को सजा ना दे,
माँ ''हर्ष'' को आंचल की, बस छांव ही मिल जाये ।। ४ ।।

(तर्ज : जब कोई नहीं आता...)

''जय माता दी'' प्यारे, जयकार लगायेगा,
मातारानी को तू, तेरे पास पायेगा ।। टेर ।।
जैकारे से भगतो, शक्ति मिल जाती है,
माता के चरणों की, भक्ति मिल जाती है,
जितनी ऊँची प्यारे, जयकार लगायेगा,
मातारानी को तू ...।। १ ।।
ये मेहरांवाली मां, भगतों की सुनती है,
जो दिल से याद करे, दुखड़ों को हरती है,
सांचे मन से प्यारे, माता को बुलायेगा,
मातारानी को तू ... ।। २ ।।
जैकारे से मेरी, मां खुश हो जाती है,
भगतों की गूंज सुने, मां दौड़ी आती है,
जैकारे से मां का, आसन हिल जायेगा,
मातारानी को तू ... ।। ३ ।।
पर्वत की चोटी पर, मां गुफा में रहती है,
करुणा की नदी मां के, आंचल से बहती है,
मैया के दर पे ''हर्ष'' तू शीश झुकायेगा,
मातारानी को तू ... ।। ४ ।।

(तर्ज :ज्योत से ज्योत जगाते चलो...)

दास मुझे भी बना ले हे माँ, चरणों में मुझको बिठाले हे माँ,
दर तेरे आया माँ एक दुखी, अपने गले से लगा ले हे माँ ।।

दुनिया देखी, दौलत देखी, कोई न मुझको भाया,
मोह माया के, झूठे जग में, तुझको अपना पाया,
अपना मुझे भी बना ले हे माँ, चरणों में ... ।। १ ।।

सारा जीवन, दरदर भटका, मुझको मिला न सहारा,
आशाओं के, दीप बुझे माँ, एक भरोसा तुम्हारा,
दीप खुशी के जला दे हे माँ, चरणों में ... ।। २ ।।

जीवन की अब, बाकी घड़ियां, तेरे पास बिताऊं,
''हर्ष'' को दे माँ, आंचल-छाया, जीवन धन्य बनाऊं,
सोये भाग्य जगा दे हे माँ, चरणों में ... ।। ३ ।।

(तर्ज : चंदा मामा से प्यारा मेरा मामा...)

सारी दुनिया से न्यारी मेरी माता,
लागे मुझको तू प्यारी मेरी माता ।। टेर ।।

मुझको मां की मिले रे ममता, मैं मैया का प्यारा,
इसके चरणो में रहता हूँ, बनके माँ का दुलारा,
मेरा जीवन सुधारे-३, मेरी माता ।। सारी दुनिया... ।। १ ।।

मुझपे जो भी संकट आये, पल में आन मिटाती,
बीच भंवर जो अटके नैया, खींच किनारे लाती,
मेरी बिगड़ी संवारे-३, मेरी माता ।। सारी दुनिया... ।। २ ।।

भूल भी जाऊं तुझको गर मैं, तू ना मुझे भुलाना,
अपने आंचल की छाया में, देना मुझको ठिकाना,
''हर्ष'' तेरा सहारा-३, मेरी माता ।। सारी दुनिया... ।। ३ ।।

(तर्ज : सजना रात मिलन की...)

दुखड़े सुनाने आज हूँ आया, मैया तेरी शरण में,
मैंने तेरे चरणों में, सिर को झुकाया आया, मैया तेरी शरण में ।।

मेरे सिर पे धर दे माता, हाथ दया का तेरा,
लूट लिया इस दुनिया ने ऽऽऽ मेरा, सुख और चैन ही सारा,
तूने शरणागत को गले से लगाया आया, मैया... ।। १ ।।

तू है दया की सागर मैया, तेरी शान निराली,
तेरे सिवा इस दुनिया मेंऽऽऽऽऽ मेरी, कोन करे रखवाली,
तूने सबको कष्टों से मुक्त कराया आया, मैया... ।। २ ।।

आंखे खोलो शेरोंवाली, ले लो मेरी खबरिया,
तेरे आंचल की छैंया में, आया तेरी दुअरिया,
''हर्ष'' आके चरणों में शीश नवाया आया, मैया... ।। ३ ।।

माँ अपने दिवाने को, तुम दरश दिखा देना,
निश दिन मै तुझे पूजूं, चरणों में बिठा लेना ।। टेर ।।

है बीच भंवर नैया, दे इसको किनारा माँ-३,
तेरी मेहर करो थोड़ी, इसे पार लगा देना ।। १ ।।

शरणागत हूं तेरा, तेरे पास ही रहना है-३,
चरणों में मुझे अपने, थोड़ी सी जगह देना ।। २ ।।

चाहता हूं कि मैं हरदम, दरबार तेरे आऊं-३,
बस इतनी गुजारिश है, हर बार बुला लेना ।। ३ ।।

तूफां में जब भी ‘‘हर्ष’’, माँ तुझको याद करुँ-३,
बेटे की पुकार सुनो, तो दौड़ी चली आना ।। ४ ।।

(तर्ज : इतनी शक्ति हमे देना...)

अपने सीने से माता लगाले, मुझपे थोड़ी दया तेरी हो माँ,
तेरे आँचल में मुझको छुपा ले, माफ कर दे अगर भूल हो माँ ।।

मेरे अपनो ने मुझको सताया, इस जमाने ने माता रूलाया,
मैं भटकता रह दर बदर माँ, हार कर तेरे द्वारे मैं आया,
तेरे चरणों में दाती बिठा ले, आज इतनी महर तेरी हो माँ ।
अपने सीने से माता... ।। १ ।।

दुख की बदली ने डाला है डेरा, मेरे चारों तरफ है अंधेरा,
ऐसी गम की चली आज आँधी, टूट कर रह गया मां बसेरा,
देख तेरा दिवाना मां रोए, धीर थोड़ा सा मुझको भी दो माँ ।
अपने सीने से माता... ।। २ ।।

आस के सारे दीपक बुझे माँ, एक मुझको भरोसा है तेरा,
पूत कैसा भी हो माता लेकिन, माँ की आँखो का होता है तारा,
‘‘हर्ष’’ भी तेरा बेटा है अम्बे, सर पे मेरे तेरा हाथ हो माँ ।
अपने सीने से माता... ।। ३ ।।

(तर्ज : हे शंभु बाबा हे भोले नाथ...)

माँ शेरांवाली, मेरे गम हरो, ध्यान धरूं माँ, आ भी जा,
कैसे कहूं मेरे मन की बतिया, बेटे की मां लाज बचा, ।। टेर ।।
मैया परेशान हूँ, मैं तो हैरान हूँ,
तेरा छोटा सा बालक हूँ नादान हूँ,
बड़ा गमगीन हूँ, दुखो में लीन हूँ,
मेरा कष्ट मिटा माता मैं दीन हूँ,
कितना सताया माँ दुनिया ने, आज मेरा उद्धार करो ।। १ ।।
जिसका कोई नहीं, तू सहारा बनी,
भटकी नैया का तूही किनारा बनी,
देती सबको दुलार, देना मुझको भी प्यार,
तेरी महिमा बड़ी तेरी शक्ति अपार,
भूल अगर माँ हो जाये तो, दास समझ के माफ करो ।। २ ।।
जग की दाता है तू, मेरी माता है तू,
तेरे भगतों की भाग्य विधाता है तू,
आज जिद पे अड़ा, तेरे दरपे खड़ा,
तेरे चरणों मे सिर को झुकाये खड़ा,
''हर्ष'' के सिर पे मातारानी, आज दया का हाथ धरो ।। ३ ।।

(तर्ज : आधा है चन्द्रमा रात आधी...)

आंखे खुशी से मेरी भर आई,
सिंह पे भवानी मैया चढ़ आई, मेरे घर आई-२, ।। टेर ।।

ऊँचे आसन पे मैया को बिठाया,
इनके रोली का तिलक लगाया,
छप्पन भोग लगे, फल और मेवे सजे,
आके भक्तों के घर में प्रसाद खाई, मेरे घर आई... ।। १ ।।

मां को मीठे भजन हम सुनायें,
महिमा इन की हम सब मिल के गायें,
होके हम पे राजी, झट से मिलने भागी-२,
मैया खुशियों की लेके सोगात आई, मेरे घर आई... ।। २ ।।

मैया भगतों के घर आती रहना,
तेरे भगतो का आज ये कहना,
''हर्ष'' चरणों के दास , कहे सबसे ये आज-२,
प्यार भक्तों पे हरदम लुटाती आई, मेरे घर आई... ।। ३ ।।

(तर्ज : मणि मुकुट सोहे...)

ऊँचे भवन डेरा, दया के भण्डार खुले,
गूँज रहे जैकारे, भगत तेरे द्वार खड़े ।। टेर ।।

पर्वत पे गुफा निराली, बैठी माँ शेरोंवाली,
माता रानी के दर पे, जाते लाखों ही सवाली,
जो, दिल से नाम पुकारे, उसी का कल्याण करे... ।। १ ।।

माँ पिण्डी रूप बनाये, सच्चा दरबार लगाये,
भगतो को प्यारी लागे, छोटी-छोटी कन्यायें,
जो, उनके चरण पखारे, उसी को तेरा प्यार मिले... ।। २ ।।

माँ जिसपे खुश हो जाती, मुँह मांगा वर दे जाती,
तकदीर बदल डाले ये, बद किस्मति दूर भगाती,
वो, पाये माँ से मुरादें, भवानी का जो नाम जपे... ।। ३ ।।

मैया को ''हर्ष'' जो ध्याते, चरणों में शीश नवाते,
हर सफल कामना होती, माता का खजाना पाते,
जै, माता दी जैकारे, भगत दिन रात करे... ।। ४ ।।

(तर्ज : महफिल में जल उठी शमां...)

भूल गया पंछी मैं रस्ता मात भवानी का,
दर्शन करने दूर से आया मातारानी का ,
बतला दे तू बतला दे मंदिर का रस्ता बतला दे ।। टेर ।।
उसने पूछा कहो मुसाफिर, यहां पे क्या लेने आया,
बोला भगता सुनो रे पंछी, मां से मिलने मैं आया,
लेकर के विश्वास, मन में शेरांवाली का ।। दर्शन...।। १ ।।
पंछी बोला सुनो भगत तुम, सीधे ही चलते जाना,
सबसे पहले वाणगंगा में, तन-मन को निर्मल करना,
जय माता दी बोल, सहारा मेहरांवाली का ।। दर्शन...।। २ ।।
वाण गंगा से अरे भगत तू, चरण पादुका को जाना,
अर्द्धक्वारी में जाकर के, बंदे थोड़ा सुस्ताना,
करना तू गुणगान, मैयां लाटांवाली का ।। दर्शन...।। ३ ।।
अर्दक्वारी से आगे फिर, हाथी मत्था आयेगा,
वहां से सांझीछत तक प्यारे, पैदल चढ़ता जायेगा,
दिखने लगेगा भवन तुझे, मां ज्योतांवाली का ।। दर्शन..।। ४ ।।
जग जननी का दर्शन करके, भैरों घाटी तू जाना,
अपने संग-संग सभी को बंदे, मेरा भी वंदन करना,
''हर्ष'' करिश्मा देख तूं, पहाड़ांवाली का ।। दर्शन...।। ५ ।।

(तर्ज : दिल को देखो चेहरा ना देखो...)

जाके देखो, माँ के भवन पे, चमकेगा किस्मत का तारा
साँचा माँ का द्वारा भगतो, साँचा माँ का द्वारा ।। टेर ।।

मन में लगन ले, होके मगन मेरी, माँ के भवन जो भी जाये,
पापी से पापी, को माता रानी, अपनी शरण में बिठाये,
बहे ममता की धार, मिले सबको दुलार,
भरे भगतों का पल में भण्डारा... ।। १ ।।

लाखों दिवाने, माता के दरपे, हरदम ही शीश नवाये,
मां शेरांवाली, अपने भगत की, खुशियों से झोली भराये,
मिटे झंझट फसाद, मिले मन की मुराद,
पाये दुखड़ों से सेवक किनारा... ।। २ ।।

बैठा क्या सोचे, करले तैयारी, ‘‘हर्ष’’ कहीं रह न जाये,
आँचल से बहती, करूणा की धारा, जाकर तू गोता लगाये,
जाके देखो कमाल, करे सबको निहाल,
दोड़े जाओगे फिर से दुबारा... ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरे देश की धरती...)

तेरा दास भवानी-२, खड़ा है दरपे,
भर दे मेरी झोली, तेरा दास भवानी ।। टेर ।।

मैं तेरे दरश का प्यासा हूँ, ‘‘माँ प्यास बुझाने आया हूँ”-२,
चरणों में चढ़ाने कुछ भी नहीं, ‘‘अँखियों के आँसू लाया हूँ”-२,
सुन लो-२,भगत की अरजी मां, ‘‘क्यूं भला मुझे तरसाती हो”-२,
ठोकर में आन पड़ा हूँ मैं, ‘‘सेवक को क्यूं ठुकराती हो”-२,
तेरा दास भवानी-२,... ।। १ ।।

जब मिलते है दर्शन के पल, ‘‘दिल की तन्हाईयां सोती है”-२,
क्यूं ना देखूं उस माता को, जो ‘‘सारी खुशियाँ देती है”-२,
ऐ जननी तूने जन्म दिया, तेरा ही पाया प्यार सदा -२,
यहां मेरा अपना कोई नहीं-२, तू रखना सिर पे हाथ सदा-२,
तेरा दास भवानी-२,... ।। २ ।।

नादान हूँ तेरा बालक हूँ, ‘‘मिल जाये चरण की धूल मुझे”-२,
आके सम्भाल -२, माँ देख जरा, ‘‘ऐसे ना भवानी भूल मुझे”-२,
जंग छिड़ी हुई माँ दुखड़ो की, ‘‘रंग चढ़ा हया का मुखड़े पे”-२,
ढ़ंग बने निराले आज ‘‘हर्ष’’-२, ‘‘तंग हुआ भवानी दुखड़े से”-२,
तेरा दास भवानी... ।। ३ ।।

श्री नवदुर्गा वन्दना

(तर्ज : स्वरचित...)

कन्याओं का रूप बनाकर, नव दुर्गा घर आई रे आई,
बधाई हो बाधाई, माता आज घर आई ।। टेर ।।

प्रथम भवानी शैलपुत्री है, ब्रह्मचारिणी दूजी,
जिस घर चरण पड़े दोनों के, बढ़ती जाये पूँजी,
आज खजाना लुटाने दोनों, मेरे घर में आई रे आई ।।
बधाई ... ।। १ ।।

चांद सी बिंदिया चन्द्रघंटा के, माथे ऊपर चमके,
कुस्माण्डा के श्री चरणों में, पायल खन खन खनके,
स्कन्धन्मात भगतों के घर में, खुशियां लेकर आई रे आई ।।
बधाई ... ।। २ ।।

कात्यायनी महामाई का, रूप बड़ा ही निराला,
कालरात्री फैलाती है, सारे जग में उजाला,
अपने भगतों को नवदुर्गा, आशीष देने आई रे आई ।।
बधाई ... ।। ३ ।।

महागोरी मैया की महिमा, सारी दुनिया गावे,
सिद्धधात्री के चरणों में, हरदम शीश झुकावे,
''हर्ष'' किसी की नजर लगे ना, लेओ सारे बलाई बलाई ।।
बधाई ... ।। ४ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : तेरी शहनाई बोले...)

किसने दुल्हन बनाया, किसने कंगन पहनाया,
बोलो बोलो हे भवानी तेरे हाथ में ।। टेर ।।

तेरा मुखड़ा माँ चम चम चमके,
तेरी नथली में हीरा माँ दमके,
किसने चुनड़ी उढ़ाई, किसने मेहन्दी रचाई,
बोलो बोलो हे भवानी तेरे हाथ में ।। १ ।।

तेरी पायल माँ छम छम बाजे,
तेरे माथे पे बिन्दिया मां साजे,
किसने गजरा बनाया, किसने कजरा लगाया,
बोलो बोलो हे भवानी तेरे आँख में ।। २ ।।

तेरे रोली का टीका मां सोहे,
तेरे भगतों के मन को मोहे,
किसने चूड़ी मंगाई, किसने बिछिया पहनाई,
बोलो बोलो हे भवानी तेरे पांव में ।। ३ ।।

तेरा सोलाह श्रृंगार मां कराया,
तुझे दुल्हन सा ''हर्ष'' सजाया,
किसने इत्तर लगाया, किसने छत्तर चढ़ाया,
बोलो बोलो हे भवानी तेरे द्वार पे ।। ४ ।।

श्रृंगार भजन

(तर्ज : नखरालो देवरियो...)

सिणगार सज्यो प्यारो, कि दादी होले होले मुल्के,
मन मोह लियो म्हारो, भगत दादी थाने निरखे ।। टेर ।।

रंग बिरंगा गजरां सूं मां, खूब सजी है झांकी,
भगतां रे हिवड़े में बसगी, प्यारी सूरत थांकी,
मन बस में, नहीं म्हारो, भगत दादी... ।। १ ।।

अंतर केशर महक रह्या, दरबार अनोखो थारो,
और कठिने मिलसी दादी, सुरगां सो नजारो,
फीको लागे, है जग सारो, भगत दादी... ।। २ ।।

सोने रो सिंघासण थारो, सिर पे छत्तर बिराजे,
कर सौलह सिणगार भवानी, गुल बनड़ी सी लागे,
''हर्ष'' रूतबो, बड़ो न्यारो, भगत दादी... ।। ३ ।।

(तर्ज : चिरमी, फाल्गुनी पाठक...)

मेहन्दी सुरंगी राची जी-२, थारे हाथां में राणीसती माँ,
म्हे वारी जावां दादीजी ।। टेर ।।

रोली मोली गजरां सूं मां ने खूब सजाई है,
सज्यो बोरलो माथे पर चूनड़ लाल उढ़ाई है,
छमछम पायलिया बाजी जी-२,
थारे पैरां में राणीसती माँ, म्हे वारी जावां दादीजी...।। १ ।।

दादी के मुख मण्डल पर तेज सवायो चमके है,
कानां के कुण्डलियाँ में, हीरो दम दम दमके है,
मंगल शहनाई बाजी जी-२,
थारे स्वागत में राणीसती माँ, म्हे वारी जावां दादीजी...।। २ ।।

चाँदी की चौकी पर माँ बैठी बैठी मुस्कावे,
रूप सलूणो लागे है ''हर्ष'' को हिवड़ो हर्षावे,
सोने की बिदियाँ साजी जी-२,
थारे माथे पे राणीसती माँ, म्हे वारी जावां दादीजी ...।। ३ ।।

मेहन्दी

(तर्ज : नखरालो देवरियो...)

मतवाली मेहंदी ए दादी के हाथां रचगी,
कामणगारी, मेहंदी ए दादी के हांथां रचगी ।। टेर ।।

हे अनमोल सुहाग निशानी, तेरी किस्मत न्यारी,
दादी जी के हाथ रची तू, लागे प्यारी प्यारी,
श्यामलगारी, मेहंदी ए हाथां की शोभा बणगी ।। १ ।।

घणी राचणी मेहंदी गंगा, जल में म्हे घुलवाई,
चांदी की चौकी पर बैठी, दादी हाथ मण्डाई,
जादूगारी, मेहंदी ए दादी पर जादू करगी ।। २ ।।

सर्वसुहागण हे बड़-भागण, तन्ने हाथ रचावे,
लाल सुरंगी रचकर तू, हाथां को मान बढ़ावे,
बड़ी प्यारी, मेहंदी ए दादी के मन बसगी ।। ३ ।।

मेहंदी तेरा भाग अनोखा, दादी के मन भाई,
''हर्ष''दादी की किरपा तांई, तरसे लोग लुगाई,
किस्मतवाली, मेहंदी ए दादी के हिये रमगी ।। ४ ।।

मेहन्दी

(तर्ज : लोंग गवाचा...)

बड़ी दूर सूं टाबर आया, घणी राचणी मेहन्दी ल्याया,
हाथां आज मन्डाल्यो जी, माँ झूंझणुवाली ।। टेर ।।

चांदी री चौकी पे बिठास्याँ, गंगा जल सूँ चरण धुवास्याँ,
हाथां आज रचाल्यो जी, माँ झूंझणुवाली ।। १ ।।

प्रेम रंग में म्हे घुलवास्याँ, घणे प्रेम सूँ थारे मंडास्याँ,
चाव सूँ थे मन्डवाल्यो जी, माँ झूंझणुवाली ।। २ ।।

सभी सुहागण हाथां रचावे, मेहन्दी सबके मनड़े भावे,
''हर्ष'' थे आज रचाल्यो जी, माँ झूंझणुवाली ।। ३ ।।

चुनड़ी

(तर्ज : सज धज कर बैठ्यो सांवरियो...)

चम चम चम चमके चून्दड़ली, म्हारी मैयाजी रे मन भावे,
चालो आज उढ़ावां मैया ने, भक्तां रो मनड़ो ललचावे ।। टेर ।।

रंग रेजा सूं रंगवाई जी, सांचे तारां जड़वाई जी,
कोई लाल सुरंगी रंग दीन्ही, भगतां रो हिवड़ो हर्षावे ।। १ ।।

गोटे री झालर लागी है, लूमां सूं चूनड़ साजी है,
कोई प्रेम रंग में रंग दीन्ही, म्हारी मैया बैठी मुस्कावे ।। २ ।।

मैया चूनड़ स्वीकार करो, ''हर्ष'' म्हारो थे उद्धार करो,
म्हारो मान जरासो रख लीज्यो, आंखड़ल्यां आंसू टपकावे ।। ३ ।।

चुनड़ी

(तर्ज : पणिहारी...)

लाल सुरंगी चून्दड़ी ऐं दादी ल्याया रंगवाय-२,
मान बढ़ाद्यो जी, ओ दादी म्हारी ओढ़ के ।। टेर ।।

चार कूंट में मोरिया ऐ थारी चून्दड़ी के माय-२,
दरश दिखाद्यो जी, ओ दादी... ।। १ ।।

रंगी कसूमल चून्दड़ी ए लम्पी तारा जड़वाय-२,
किरपा करद्यो जी, ओ दादी... ।। २ ।।

मन भावन मन चून्दड़ी ऐ म्हारो मनड़ो लुभाय-२,
आस पुराद्यो जी, ओ दादी... ।। ३ ।।

टाबरिया ल्याया चाव सूं ऐ मनड़े रा भाव भराय-२,
हियो हरषाद्यो जी, ओ दादी... ।। ४ ।।

थाने उढ़ास्यां मावड़ी ऐ चान्दी चौकी पे बिठाय-२,
''हर्ष'' दिखाद्यो जी, ओ दादी... ।। ५ ।।

(तर्ज : सिर से जो सरकी वो धीरे-धीरे...)

ओढ़े माँ चुनरिया न्यारी न्यारी,
भगतों को लागे है प्यारी प्यारी,
तेरी चुनरिया ऽऽऽ माँ भा गई-२ ।। टेर ।।

जयपुर से चुनड़ी रंगाई है,
चाँदी के तारों जड़ाई है,
लम्पी लूमा लगी, ये सुरंगी रंगी ।
ओढ़े... ।। १ ।।

चाव से हमने उढ़ाई है,
दादी के मन को ये भाई है ।
बेल बूंटी सजे, माँ अनूठी लगे ।
ओढ़े... ।। २ ।।

दादी ने किरपा दिखाई है,
भगतों का मान बढ़ाई है,
गोटे तारां जड़ी, ''हर्ष'' सोणी बड़ी ।
ओढ़े... ।। ३ ।।

(तर्ज : होलिया में उड़े रे गुलाल...)

ओढ़े चुनरिया लाल, चांदी की चौकी बैठी माँ,
भगतां ने करी रे निहाल, चांदी की चौकी बैठी माँ ।। टेर ।।

चार कूंट में मोरिया साज्या,
सोने चांदी रा घुंघरू बान्ध्या,
उपर सूं लूमा रो कमाल, चांदी की... ।। १ ।।

रंग कसूमल रंगी चून्दड़ी,
गोटे तारां सूं जड़ी चून्दड़ी,
छटा बिखेरे लाल लाल, चांदी की... ।। २ ।।

सभी देवता चूनड़ निरखे,
इन्द्र धनुष री आभा चमके,
सगला होया माँ निहाल, चांदी की... ।। ३ ।।

सुरतां रो झीणो पोत मंगाया,
जयपुर मांही जाय रंगाया,
''हर्ष'' रंगाई म्हे तो लाल, चांदी की... ।। ४ ।।

(तर्ज : कदे आंख फड़के...)

तेरो लाल तरसे, तने याद करके,
आज टाबरियो माँ, सुधबुध खोय रह्यो,
आजा, आजा हे भवानी, हिवड़ो रोय रह्यो ।। टेर ।।

तू ही मेरी जीण माता, मैं तो तेरो दास रे,
भंवरावाली मैया तेरो, बेटो है उदास रे,
तेरो लाड़लो माँ, बाट तेरी जोय रह्यो ।। १ ।।

बेगी सी तू आ रे मैया, धीर छुट्यो जावे है,
आज मेरे आँसुड़ा को, बांध टुट्यो जावे है,
मेरे कालजे में, दर्द भारी होय रह्यो ।। २ ।।

मेरे घरां आके मैया, राख मेरी लाज ने,
नैणा बिछाके मैं तो, बैठ्यो तेरी आस में,
''हर्ष'' आंगणे ने, आँसुड़ा सूँ धोय रह्यो ।। ३ ।।

(तर्ज : उड़े जब-जब जुल्फें तेरी...)

सिंह चढ़के भवानी घर आई,
कि आज मेरे दिन बदले, शेरांवालिये ।। टेर ।।

मैं तो घर-घर बाटूं रे बधाई,
दिवाना मेरा दिल उछले, शेरांवालिये ।। १ ।।

तेरा रूप बड़ा माँ निराला,
ना मुख से नजर फिसले, शेरांवालिये ।। २ ।।

मेरे घर में हुआ माँ उजाला,
अंधेरे दिन दूर निकले, शेरांवालिये ।। ३ ।।

तेरे हलुए का भोग लगाया,
कि रूच-रूच आज चखले, शेरांवालिये ।। ४ ।।

तेरा ''हर्ष'' कहे महामाया,
तू चरणों में आज रखले, शेरांवालिये ।। ५ ।।

श्री दादीजी वन्दना

(तर्ज : भोपाली...)

आंगणिये पधारो जी, ओ दादी म्हारे, आंगणिये पधारो जी,
थाने बुलावाँ, मिलकर ध्यावाँ, मीठा भजन सुणास्याँ जी ।।

गंगा जल सूँ दादी, थारा चरण धुआस्याँ,
फूलां रे गजरां सूं, थारी झांकी सजास्याँ,
अन्तर केशर सूँ म्हे नुहास्याँ जी ।। १ ।।

लाल सुरंगी मेहन्दी, थारे हाथां रचास्याँ,
सांचे माल की दादी, चूनड़ थाने उढ़ास्याँ,
सौलह सिणगार सजास्याँ जी ।। २ ।।

बूंदी, बरफी, पेड़ा, छप्पन भोग लगास्याँ,
सेव, संतरा, केला, मेवा-मिश्री सजास्याँ,
नागरियो पान खुवास्याँ जी ।। ३ ।।

''हर्ष'' दादी री महिमा, सगला मिलकर गास्याँ,
थाने आज रिझाकर, थारा आशीष पास्याँ,
जीवन म्हें सफल बणास्याँ जी ।। ४ ।।

सुहाग पिटारी

(तर्ज : अपने पिया की मै तो...)

चालो जी सगला मिलके दादी ने सजावां-२,
दादी ने बनड़ी बणावां जी, म्हारी दादी ने सजावां ।। टेर ।।

गंगाजल सूं दादी जी का, चरण पखारां,
झूझंण वाली दादीजी की, झांकी ने निहारां,
अंतर-केशर भी छिड़कावां जी, म्हारी दादी... ।। १ ।।

तारां जड़ी चून्दड़ी या, दादी ने उढ़ायस्यां,
प्यारो प्यारो गजरो म्हे, दादी ने पहरायस्यां,
माथे पर बोरलो लगावां जी, म्हारी दादी... ।। २ ।।

सर्व सुहागण मिल, मेहन्दी मण्डाओ,
दादीजी के हाथां माही, चुड़लो पहराओ,
काना में कुंडलिया पहरावां जी, म्हारी दादी... ।। ३ ।।

हीरा जड़ी नथली म्हे, दादी ने पहरायस्यां,
सोनाजड़ी तागड़ी म्हे, दादी के बंधायस्यां,
चान्दी की पायलड़ी पहरावां जी, म्हारी दादी... ।। ४ ।।

पैरां माही घुंघरवाली, बिछिया पहरावां,
दादी जी के माथे ऊपर, बिन्दिया लगावां,
आंख्या में काजलियो घलावां जी, म्हारी दादी... ।। ५ ।।

निजरा उतारां चालो, लूण राई वारां,
भजन सुणावां मां की, आरती उतारां,
''हर्ष'' खुशी सूं नाचा गावां जी, म्हारी दादी... ।। ६ ।।

(तर्ज : सुपणो...)

पलक्यां उघाड़ के देखल्यो, म्हे आया थारे द्वार,
दादीजी म्हाने दर्शन दीज्यो जी । ।। टेर ।।

लाज भगत री, राखो नारायणी, बेगा बेगा आओ म्हारी माँ,
आस रो दिवलो, बुत जावेलो, सुणो सुणो राणी सती माँ,
दादी जी म्हाने... ।। १ ।।

दूर दिशां सूं, आयो टाबरियो, नैणा माही दरश री प्यास,
दर आये को, मान बढ़ाइज्यो, दर्शन दीज्यो म्हाने आज,
दादीजी म्हाने... ।। २ ।।

लाखां भगत रे, मन री पुराओ, लिज्यो लिज्यो सुध म्हारी आज,
श्री चरणां में, महाने बिठाओ, म्हे तो थारे चरणां रा दास,
दादीजी म्हाने... ।। ३ ।।

भूल हुई है, कांई रे म्हासूं, दियो दादी म्हाने बिसराय,
''हर्ष'' कठिने, जावे भवानी, राखो राखो सिर पे हाथ,
दादीजी म्हाने... ।। ४ ।।

झूला भजन
(तर्ज : चिरमी- फाल्गुनी पाठक...)

हिण्डो घलायो थारो आज जी-२,
झुलो झुलो-२, थे राणी सती माँ, झुलावे थारा दास जी ।।

रिमझिम रिमझिम सावणियों, बागां मांही बरसे जी,
झोटा देवण ताईं माँ, टाबर थारा तरसे जी,
भगतां री राखो लाज जी-२, झुलो झुलो... ।। १ ।।

मोर मोरणी बागां मे, पीहू पीहू बोले जी,
कानां माहीं कोयलड़ी, म्हारे मिश्री घोले जी,
आस पुराओ आज जी-२, झुलो झुलो... ।। २ ।।

टाबरियां की बात सुणी, दादी दौड़ी आई जी,
झूले रे आसण बैठी, म्हारो मान बढ़ाई जी,
''हर्ष'' ने थांपे नाज जी-२, झुलो झुलो... ।। ३ ।।

श्री दादीजी वन्दना

(तर्ज : थे तो आरोगो जी मदन गोपाल..)

निजरां उतारो, लूण राई वारो-२,
म्हारे आंगणिये पधारी म्हारी माँ,
म्हे वारी जावां दादी जी ।। टेर ।।

आंख्या माही दादी थारे, सूरज-चांद री आभा,
अग्नी री थारे माथे पर, घणी जोर री ज्वाला,
ऊँचे आसण पर, बिराजी म्हारी माँ, म्हे वारी... ।। १ ।।

सगला सेवक मिलकर थारी, झांकी खूब सजाई,
भगतां रो मन राखण तांई, दादी दौड़ी आई,
इब तो बरसे है, रे रस की फुहार, म्हे वारी... ।। २ ।।

चरणां की धूली सूं थारे, सुत्या भाग जगाया,
थारी किरपा सूं हे मैया, बिगड़या काम बणाया,
''हर्ष'' राखज्यो, यूं भगतां री संभाल, म्हे वारी... ।। ३ ।।

श्री दादीजी वन्दना

(तर्ज : छुप गया कोई रे...)
दुखियारी आई माँ, दुखड़े तू टाल रे,
गोद भरा दे मेरी, दे दे एक लाल रे ।। टेर ।।
गोद है सूनी सूनी, ममता बेचैन है,
पलकें उदास मेरी, खोये खोये नैन है,
नजरें दया की मैया, मुझपे तू डाल रे,
गोद भरा दे ...।। १ ।।
सूना पड़ा है मेरे, अंगने में पलना,
उसमें झुला दे माता, प्यारा सा ललना,
मुझको भी करदे मैया, थोड़ा सा निहाल रे,
गोद भरा दे ...।। २ ।।
तानों को सुन सुन, आये मैया लाज रे,
अपने-पराये सारे, बोले मोहे बांझ रे,
और सहा ना जाये, हुआ बुरा हाल रे,
गोद भरा दे ...।। ३ ।।
''हर्ष'' तू जग की माता, माँ का दुख जानती,
दर पे फैलाये झोली, इतना ही मांगती,
दे दे एक लाल या फिर, दे दे मोहे काल रे,
गोद भरा दे ...।। ४ ।।

श्री दादीजी वन्दना

(तर्ज : आ लौट के आजा...)

तू जाग जरा सी मेरी मां, भवानी झूंझणू वाली ऐ,
क्यूं आंखे तू मीचे बैठी आज, भवानी झूंझणूवाली ऐ ।। टेर ।।

मन में उमंग लिए, गोदी ललन लिए, तेरे दरश को मैं आई,
फूटे करम हाय, तेरे भवन पे, अपने ललन को गंवाई,
मैं तो हुई रे यहाँ पे बरबाद, भवानी झूँझणू... ।। १ ।।

पहले हँसाती, पीछे रूलाती, कैसी तुम्हारी ये माया,
लेना ही था तो पहले दिया क्यूं, मेरी ये कोख का जाया,
ये कैसा तुम्हारा इंसाफ, भवानी झूँझणू... ।। २ ।।

आजा जिला दे, मेरे ललन को, बेटी की सुनले दुहाई,
जो ना सुनी तो, सारे जगत में, होगी तेरी रूसवाई,
तू होगी जहां में बदनाम, भवानी झूँझणू... ।। ३ ।।

पीट के छाती, सिर को पटकती, आँखों में धधके रे शोला,
सुनके रूदन, इक माता का भगतों, दादी का आसन डोला,
चली शेर पे सवार होके माँ, भवानी झूँझणू... ।। ४ ।।

माँ के भवन पे, बिजली सी चमकी, अद्‌भुत सी ज्योति आई,
दीप जल उठे, तेरहों मंड में, ‘‘हर्ष’’ हुई रे सकलाई,
माँ कहके उठा रे माँ का लाल, भवानी झूँझणू... ।। ५ ।।

श्री दादीजी वन्दना

(तर्ज : वृंदावन में राधेजी का नाम जपना...)

संकट में तू दादीजी का नाम जपना,
हाँ नाम जपना, आराम मिल जायेगा ।। टेर ।।

भगतों पे जो संकट आये पलमें आन मिटाती,
सांझ सबेरे ध्यान लगाके भजले दादी दादी,
दादीजी के नाम का गुणगान करना ।। १ ।।

दुखड़े सारे दूर करे माँ कैसी अद्‌भुत माया,
भव सागर से पार हुआ वो जिसने माँ को ध्याया,
दादीजी की महिमा का बखान करना ।। २ ।।

भगतों की रक्षा करती है, मैया झूंझणूं वाली,
जो भी आशा लेकर आया, गया न कोई खाली,
दादीजी का ‘‘हर्ष’’ प्यारे ध्यान धरना ।। ३ ।।

(तर्ज : रघुपति राघव राजा राम...)

रोम रोम में बसाओ राम, हे बालासां भक्त महान,
हे बालासा भक्त महान, थाने करां सौ सौ प्रणाम ।। टेर ।।
संकट मोचन आप कुहाओ,
राम प्रभु का कष्ट मिटाओ,
भगता में थे ही सरनाम,
हे बालासा ... ।। १ ।।
दुनिया ने विश्वास दिलायो,
झट पट सीनो फाड़ दिखायो,
हृदय मांही बसाओ राम,
हे बालासा ... ।। २ ।।
राम का सगला काज संवारो,
राम का प्यारा राम उचारो,
एक ही नाम सुहावे राम,
हे बालासा ... ।। ३ ।।
''हर्ष'' राम की धुन में गावो,
राम प्रभु ने नाच दिखाओ,
सालासर में बसायो धाम,
हे बालासा ... ।। ४ ।।

(तर्ज : म्हारा लीले रा असवार...)

सुणल्यो भगतां री आवाज, म्हारा बालाजी महाराज,
थे तो बेगा-बेगा आओ जी, आओ जी बाला... ।। टेर ।।

बाबा थारे सेवकां ने, किर्तन आज करायो,
दर्शन ताई बाबा म्हारो, मनड़ो है हर्षायो,
म्हारा पंचमुखी हनुमान प्यारा, राम भक्त हनुमान,
म्हाने दरश दिखाओ जी, दिखाओ बाला... ।। १ ।।

शंकर रा अवतार बाबा, भगतां री सुध लेल्यो,
बेगा आओ बालाजी, म्हारो हिवड़ो मारे हेलो,
बरसे आंखड़ल्यां सूं नीर, उठे मनड़े में पीड़,
म्हाने दरश दिखाओ जी, दिखाओ बाला... ।। २ ।।

छप्पन भोग छत्तिसों मेवा, भगतां थाल सजायो,
भगतां रे घर आय बालासां, रूच-रूच भोग लगाओ,
खाकर नागरियो थे पान, ''हर्ष'' भगतां रो मान,
बाला आज बढ़ाओ जी, बढ़ाओ बाला... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : थाली भर कर ल्याई खीचड़ो...)

राम नाम को ओढ़ दुशालो, राम प्रभु ने ध्यावे जी,
पग में घुंघरू बांध बालाजी, छम छम नाच दिखावे जी ।। टेर ।।

राम प्रभु की महिमा गावे, राम हृदय में बसावे है,
सारी दुनिया दर्शन करले, सीनो फाड़ दिखावे है,
राम नाम बिन मोती माला, तोड़ तोड़ बखरावे जी ।। पग में... ।।

सियाराम का कारज सार्‍या, सगला कष्ट मिटाया जी,
अहिरावण को काल बण्यों और, राम लखन ने बचाया जी,
कांधे उपर राम लखन ने, बाबो ल्याय बिठावे जी ।। पग में... ।।

कपटी रावण सीता हरली, माता की सुधि ल्यायो जी,
शक्तिबाण लग्यो लक्ष्मण के, कपि करिश्मो दिखायो जी,
लक्ष्मणजी का प्राण बचा, संकट मोचन कहलावे जी ।। पग में.. ।।

सोने की लंका ने फूंकी, दानव वंश मिटाया जी,
राम लखन सीता के सागे, कपि अयोध्या आया जी,
मात कोशल्या करे आरती, 'हर्ष' कपि मुस्कावे जी ।। पग में... ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : चलत मुसाफिर मोह लियो रे...)

सोने की लंका जलाय गयो रे इक छोटो सो बानर,
रावण को पानी पिलाय गयो रे इक छोटो सो बानर ।। टेर ।।

शक्ति को बाण, लग्यो लिक्षमण के-२,
लिक्षमण के प्राण बचाय गयो रे इक छोटो सो बानर ।। १ ।।

धोखे से रावण ने, सीता को हर ली-२,
माता का पता लगाय गयो रे इक छोटो सो बानर ।। २ ।।

किसी ने पूछा, तेरा राम हैं कहां पर-२,
सीनो फाड़ दिखाय गयो रे इक छोटो सो बानर ।। ३ ।।

चुन चुन के सारे, दुष्टों को मारा-२,
दानव के छक्के छुड़ाय गयो रे इक छोटो सो बानर ।। ४ ।।

दानव संहारे ''हर्ष'' लंका को जीता-२,
सीता को राम से मिलाय गयो रे इक छोटो सो बानर ।। ५ ।।

(तर्ज : छम्मा छम्मा...)

कर ना सका जो कोई कर गया रे,
रामजी के दुखड़ों को हर गया रे-२,
रामा रामा रटे है वीर हनुमाना,
राम को मनाये बाबा, राम को रिझाये बाबा,
दिल में बसाये, रामा रामा... ।। टेर ।।

राम की सेवा, करे ये देवा, प्रभु का ध्यान धरे,
राम ही गावे, राम को ध्यावे, सदा गुणगान करे,
पग घुंघरूं बंधाये बाला झूमे नाचे गाये-२,
प्रभु महिमा सुनाये, रामा रामा... ।। १ ।।

बड़ी है भगती, बड़ी है शक्ति, बड़ा है नाम तेरा,
दयालू दाता, राम को ध्याता, करूं गुण गान तेरा,
राम दर्श कराये सीना चीर दिखाये-२,
राम दिल में बिठाये, रामा रामा... ।। २ ।।

राम का प्यारा, आंख का तारा, सदा श्री राम जपे,
राम की गाथा, सदा ही गाता, कभी ना ''हर्ष'' थके,
राम नाम नहीं पाये माला तोड़ गिराये-२,
बस राम सुहाये, रामा रामा... ।। ३ ।।

(तर्ज : जब कोई नहीं आता...)

जब राम पे विपदा के तूफान आते हैं,
संकट हरने दौड़े हनुमान आते है ।। टेर ।।

श्री राम के जीवन में, भूचाल सा आया था,
धोखा देकर रावण, सीता हर लाया था,
माता की खबर लेके, गुणवान आते हैं... ।। १ ।।

लक्ष्मण की मूर्छा पर, रामादल घबराया,
था और नहीं कोई, संजीवन जो लाया,
पर्वत को उठा करके, बलवान आते हैं... ।। २ ।।

पाताल में उस पापी, अहिरावण को मारे,
लंका में चुन चुन के, दुष्टों को संहारे,
श्री राम के ''हर्ष'' सदा, ये काम आते हैं... ।। ३ ।।

(तर्ज : तन डोले मेरा मन डोले ...)

रघुवर रोवे, धीरज खोवे, बजरंग उडीके बाट रे,
थे प्राण बचावण आ जाओ ।। टेर ।।

प्यारो भाई पड़्यो जमी पे, सुध बुध है बिसरायो,
मेघनाद शक्ति दे मारी, लिक्ष्मण होश गंवायो,
रे भाई लिक्ष्मण होश गंवायो,
बेसुध सोवे, इब के होवे, थारो राम करे है विलाप रे,
थे प्राण बचावण आजाओ ... ।। १ ।।

राजपाट के ठोकर मारी, भाई को धर्म निभायो,
बन में सागे फिरयो भटकतो, तनिक नहीं घबरायो,
रे भाई तनिक नहीं घबरायो,
मनड़ो रोवे, रस्तो जोवे, म्हारी लाज है थारे हाथ रे,
थे प्राण बचावण आजाओ ... ।। २ ।।

आज बचाल्यो प्राण लखन का, बूँटी लेकर आवो,
माता ने के जाय बतास्यूँ, बजरंग बेगा आवो,
रे म्हारा बजरंग बेगा आओ,
कद आवे, बूँटी ल्यावे, ''हर्ष'' राम करे संताप रे,
थे प्राण बचावण आ जाओ ... ।। ३ ।।

(तर्ज : सर्व सुहागण मिल...)

लाल लंगोटो थारे अंग बिराजे,
तो हाथ में घोटो साजे जी, बाला जी ।। टेर ।।

गल मोतियन को हार सुहाणो,
तो पांव पैजनिया बाजे जी, बाला जी... ।। १ ।।

लाल सिंदूर बदन पर सोवे,
तो माथे तिलक विराजे जी, बाला जी... ।। २ ।।

सालासर थारो बण्यो देवरो,
तो ढ़ोल नगाड़ा बाजे जी, बाला जी... ।। ३ ।।

गठ जोड़े सूं जात जडूला,
तो बारहूं महीना लागे जी, बाला जी... ।। ४ ।।

सवामणी को चढ़े चूरमो,
तो सिर पर छत्तर बिराजे जी, बाला जी... ।। ५ ।।

''हर्ष'' जो मन सूं थाने ध्यावे,
तो सगला संकट भागे जी, बाला जी... ।। ६ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : राधा की पायल छम छम बाजे...)

पैरां में घुघरूं छम छम बाजे,
छम छम बाजे बालो, खुश हो नाचे,
राम को सेवक निरालो, रिझावे राम मतवालो ।। टेर ।।

राम नाम की धुन में गावे,
राम प्रभु ने नाच दिखावे,
मां अंजनी को लालो, रिझावे राम... ।। १ ।।

राम नाम की लगन लगाई,
राम नाम लागे सुखदाई,
राम को ओढ़े दुशालों, रिझावे राम... ।। २ ।।

सियाराम का कष्ट मिटावे,
आंकी माया बरणी ना जावे,
संकट हरणे वालो, रिझावे राम... ।। ३ ।।

''हर्ष'' राम को पायक प्यारो,
भक्त शिरोमणी सबसूं न्यारो,
चरणां में शीश झुकाल्यो, रिझावे राम... ।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : सज धज कर बैठ्यो...)

जब जब श्री राम पे भीड़ पड़ी, बजरंगी दौड़े आये हैं-२,
सियाराम के सारे कष्ट हरे, संकट मोचन कहलाये हैं ।। टेर ।।

रावण ने जाल बिछाया था, सीता को वो हर लाया था,
तब एक छलांग में बजरंगी, सौ योजन पार लगाये हैं ।
जब-जब... ।। १ ।।

लक्ष्मण जब मुर्छित आन पड़े, श्री रामजी व्याकुल हुए बड़े,
हाथो में उठाकर पर्वत को, वो पवन वेग से आये हैं ।
जब-जब... ।। २ ।।

जब राम नाम नहीं पाया था, माला को तोड़ गिराया था,
जग को विश्वास दिला ही दिये, निज सीन फाड़ दिखाये हैं ।
जब-जब... ।। ३ ।।

पाताल में ''हर्ष'' पधारे थे, अहिरावण को वहां मारे थे,
कांधो पे बिठाकर क्षण भर में, वो राम लखन को लाये हैं ।
जब-जब... ।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : अंजनी को लाल निरालो...)

बजरंग ने जाय मनाल्यो जी, सालासर ।। टेर ।।

वीरबली को धाम निरालो,
धाम निरालो बठे धाम निरालो,
जाके आज रिझाल्यो जी, सालासर... ।। १ ।।

सवामणी को भोग लगे है,
भोग लगे है बठे भोग लगे है,
जाके भोग लगाल्यो जी, सालासर... ।। २ ।।

लाखां ही जाके शीश झुकावे,
शीश झुकावे बठे शीश झुकावे,
जाके धोक लगाल्यो जी, सालासर... ।। ३ ।।

''हर्ष'' रामजी को पायक प्यारो,
पायक प्यारो बाबो पायक प्यारो,
जाके किरपा पाल्यो जी, सालासर... ।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : सोना चांदी नहीं मांगू...)

सारे जग ने है माना, सियाराम का दिवाना,
मेरा सालासर सरदार, बाबा को बस राम चाहिये,
ये है रामजी का प्यारा, सियाराम का दुलारा,
मेरा सालासर सरदार, बाबा को बस राम चाहिए ।। टेर ।।

रामजी के चरणों में इनका ठिकाना,
बालाजी को भाये बस राम को मनाना,
सिया राम को मनाये, नाच नाच के रिझाये,
राम नाम की बजाये खड़ताल ।। १ ।।

भाई से बढ़कर रामजी को प्यारा,
भक्त शिरोमणि राम का दुलारा,
राम दिल में बसाये, सीना फाड़ दिखाये,
सिया राम की करे मनुहार ।। २ ।।

रामजी के सेवक को सारा जग ध्याये,
बालाजी को ध्याये ''हर्ष'' राम को वो पाये,
गर राम को है पाना, पहले इनको रिझाना,
सिया राम से मिलाये हनुमान ।। ३ ।।

(तर्ज : सावन का महिना...)

आयो चैत को मेलो, भगत रह्या झूम,
बालाजी के मंदिर माही, मच रही धूम ।। टेर ।।

लाखां ही नर नारी, दर थारे आया,
मीठा मीठा भजना सूं, थाने रिझाया,
नाचे थारा सेवक, मचावे घणी धूम ।। बालाजी... ।। १ ।।

लाडू-पेडां को थारे, भोग लगावे,
सगला भगत मिल, बालाजी ने ध्यावे,
बांटे है मिठाई, भगत घूम घूम ।। बालाजी... ।। २ ।।

लाल लंगोटो थारे, अंग बिराजे,
माथे पे टिको घोटो, हाथां में साजे,
लाल ध्वजा फहरावे, हवा ने चूम-चूम ।। बालाजी... ।। ३ ।।

रूप सजीलो बाबा, मनड़ो लुभावे,
''हर्ष'' बाला सां थापे, वारी वारी जावे,
मंदरिये के माही, म्हे नाचा झूम झूम ।। बालाजी... ।। ४ ।।

(तर्ज : उठे तो बोले राम...)

मनावे सीताराम, रिझावे सीताराम-२,
कपि रोम रोम के माही रमावे राम-राम-राम ।। टेर ।।

श्री राम प्रभु ने हिवड़े बसावे जी,
ना मानो तो सीनो, यो फाड़ दिखावे जी,
सोवे तो ध्यावे राम, जागे तो गावे राम,
सुपणे के माही टेर लगावे, राम राम-राम।। १ ।।

श्री राम का सगला, काज संवारे जी,
श्री राम को प्यारो है, श्री राम उचारे जी,
आख्यां के माही राम, हृदय के माही राम,
होठां सू निकले एक नाम बस, राम राम राम ।। २ ।।

पग बांध के घुघंरू, नाच दिखावे जी,
श्री राम नाम की ''हर्ष'' खड़ताल बजावे जी,
जठे भी जावे राम, बठे रैह्वे हनुमान,
आने एक ही नाम सुहावे, श्री राम राम-राम ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : गोरा गोरा गाल थारा...)

बाबा थारा टाबरिया नै, चैत में बुलाज्यो जी,
नाचता-गाता आस्यां जी मेले में ।। टेर ।।

ढपली की म्हे ताल पे थाने, मीठा भजन सुणास्यां,
भगता री टोली के सागे, झूम-झूम कर गास्यां,
लेकर हाथां मैं निशान, जां पर लिखकर ''जय श्री राम'',
म्हे तो पैदल चलकर आस्यां जी मेले मे ।। १ ।।

ध्वजा नारियल सवा रूपयो, थारे भेंट चढ़ास्यां,
सवामणी को बाबा थारे, आकर भोग लगास्यां,
भर-भर चूरमे का थाल, खाकर हो जावां निहाल,
थारे धोक लगावण आंस्यां जी मेले में ।। २ ।।

चैत सुदि पूनम ने थारे, भीड़ लगे अति भारी,
''हर्ष'' कहवे जाणे की बाबा, इबकी म्हारी बारी,
संकट मोचन थारो नाम, म्हारा करद्यो बिगड़ा काम,
थारा आशीष लेवण आस्यां जी मेले में ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : सालासर में मेहन्दीपुर में...)

हे दुख भंजन, मारूति नंदन,
कष्ट हरो जी हनुमान, दुहाई थाने राम जी की है ।। टेर ।।

राम प्रभु का, थे ही बाबा, संकट सारा दूर करो,
म्हारी बरियां, क्यूं भूल्या थे, आकर म्हारा कष्ट हरो,
संकट मोचन, नाम है थारो, जाणे है सकल जहान,
दुहाई थाने... ।। १ ।।

मेहन्दीपुर है, धाम निरालो, सालासर भी धाम बण्यो,
दो जाँटी में, बण्यो देवरो, पुनरासर सरकार सुणो,
थाने म्हे ध्यावां, दुखड़ा सुणावां, म्हे तो हां थारी संतान,
दुहाई थाने... ।। २ ।।

दुखड़ां से म्हे, हार गया हां, म्हारो थे कल्याण करो,
''हर्ष'' शरण में, आन पड्या हां, भगतां रा भण्डार भरो,
थां बिन म्हारो, नाहीं गुजारो, देद्यो दया को म्हाने दान,
दुहाई थाने... ।। ३ ।।

(तर्ज : इस जमाने में...)

इनके सीने में, इनकी आँखो में,
राम रहते हैं, इनकी सांसो में,
इनके हर रोम में भगतों, राम बसते हैं,
सोते उठते बजरंगी, राम जपते हैं ।। टेर ।।

बाबा की भगती का, अंदाज न्यारा है,
रघुवर को बालाजी, सगे भाई सा प्यारा है,
मुश्किल मिटाते हैं, दुखड़े हटाते हैं,
संकट में हो जब राम तो ये दौड़े आते हैं,
राम ने माना, इनको पहचाना,
बन गया है यें, राम दिवाना,
रात दिन राम की धुन में, रहा करते हैं... ।। १ ।।

(२)

पाये नहीं जो राम, माला को बिखराये,
जिसमें बसे ना राम वो, बिल्कुल नहीं भाये,
हर पल मनाते है, प्रभु को रिझाते हैं,
चरणों में ये श्री राम के आसन लगाते हैं,
राम की सेवा, राम की पूजा,
राम को छोड़ के, काम ना दूजा,
हर घड़ी राम की माला ये, जपा करते हैं... ।। २ ।।

होके मगन बाला, नाचे है मतवाला,
दूजा नही इनके सिवा, रघुवर का रखवाला,
राम धुन गाते हैं, राम को रिझाते हैं,
जग को सदा श्री राम की महिमा सुनाते हैं,
राम जाये जहां, इनको पाये वहां,
दास हनुमान सा, होये दूजा कहां,
''हर्ष'' भगतों में सिरमोर, हुआ करते हैं... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : तेरे नैना क्यूं भर आये...)

मेरे बाला SSS क्यूं नहीं आये-२, बिलख-बिलख तोहे राम पुकारे,
कौन जो धीर बँधाये ।। टेर ।।

सुख में दुख में, भाई लखन ने, ''मेरा साथ निभाया''-२,
चौदह बरस मेरे, संग में भटका, ''तनिक नहीं घबराया''-२,
आज पड़ा है, मुर्छित होके-२, तुझ बिन कौन जगाये ।।
मेरे बाला... ।। १ ।।

माता मुझसे, जब पूछेगी, ''क्या मैं जाके बताऊँ''-२,
ताने देगें, ये जग वाले, ''मुखड़ा कैसे दिखाऊँ''-२,
जब संकट की, घड़ियाँ आती-२, तूही लाज बचाये ।।
मेरे बाला... ।। २ ।।

मुँह को खोले, काल खड़ा है, ''बाला जल्दी आओ''-२,
रात की घड़ियाँ, बीत रही हैं, ''संजीवन ले आओ''-२,
बिन तेरे कोई, और न दूजा-२, ''हर्ष'' जो प्राण बचाये ।।
मेरे बाला... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : कदे आँख फड़के कदे आवे...)

थारो राम बिलखे, थारी बाट निरखे,
भाई लाडलो जमीन उपर सोय रह्यो,
बाला ल्यादे रे संजीवण, मनड़ो रोय रह्यो ।। टेर ।।

नाही कोई दिन देख्यो, देखी नाही रात ने,
बन बन सागे डोल्यो, आंधी बरसात में,
म्हारे कालजे रो, कोर सुध खोय रह्यो ।। १ ।।

कुणबे री आन तांई, लड्यो मेघनाद सूं,
जुलमी ने शक्ति मारी, धोखे और घात सूं,
बाण लिक्ष्मण री, छाती माही घोप गयो ।। २ ।।

थारे सिवा बाला कीने, दुखड़ो सुणावुं मैं,
दुनिया ने ''हर्ष'' कैयां, मुखड़ो दिखाऊं मैं,
म्हारी लाज थारे, हाथां माहीं सौंप रह्यो ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : नदिया बहे बहे रे धारा...)

दोहा : सूरज उगने को है आया, ना आये हनुमान ।
रो रो कर श्री राम पुकारे, आन बचाओ प्राण ।।

आँखें बहे बहे रे बाला, श्री राम का मनवा डोला,
तुझको आना होगा-२ ।। टेर ।।

प्यारे लखन को आज, शक्ति लगी है,
चौखट पे हम सबकी, आँखे गड़ी है,
बैठे हुए हैं तेरी आस लगाये-२,
भोर होने से पहले बजरंग तू आजा... ।। १ ।।

पग-पग पे भाई मेरा, साथ निभाये,
आज पड़ा है देखो, मुर्छा ये खाये,
हाथ पसारे तुझको राम बुलाये-२,
आके ओ बाला मेरी लाज बचा जा... ।। २ ।।

माता को जाकर के, क्या मैं बताऊँ,
दुनिया वालों को ''हर्ष'' मुँह क्या दिखाऊँ,
दूजा नहीं है कोई बूँटी जो लाये-२,
भाई लखन के तू प्राण बचा जा... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : सभी देव देते दुनिया मे छप्पर फाड़ के...)

राम नाम की माला फेरे, झंडा गाड़ के,
सियाराम का दरश कराये बाला, सीना फाड़ के ।। टेर ।।

सीता की सुध लेने पहुँचे, लंका में हनुमान,
प्रमदा वन में भूख लगी तो, व्याकुल हुए महान,
फेंक दिये सारे तरुवर, जड़ से उखाड़ के... ।। १ ।।

कपि पकड़ने राक्षस आये, मारी एक हूंकार,
उठा उठा के पटक दिये, सब दानव पवन कुमार,
महावीर ने अक्षय को, मारा पछाड़ के... ।। २ ।।

मेघनाद की ब्रह्मफांस में, फंस के लंका आये,
''हर्ष'' पूंछ में वीर बली के, दानव आग लगाये
जला के लंका को रख दी, हुलिया बिगाड़ के... ।। ३ ।।

(तर्ज : हरियाणवी...)

ताऊ बांधले सामान, मेला देखण जाणा सै,
सालासर के मंदिर माथा, टेकण जाणा सै ।। टेर ।।

घूम-घूम के घूमर घालां, और बजावां चंग,
सालासर में जाय मचावां, मेले में हुड़दंग,
मंदरिये के आगे तन्नै, खूब नचाणां सै ।। १ ।।

बाबै की है शान निराली, सेठ बड़ा ही मोटा,
सांचे मन से ध्याले ताऊ, रहे ना धन का टोटा,
खीर-चूरमा-लाडू-बरफी, भोग लगाणा सै ।। २ ।।

एक बरस मैं सुणले ताऊ, चैत का मेला आवै,
बेगा सा तै करले त्यारी, मतना देर लगावै,
तेरे सागै मन्नै भी, बजरंग रिझाणा सै ।। ३ ।।

घर का काड्योड़ा तैं ताऊ, घी का पिपा लेले,
''हर्ष'' कदे तैं भूल न जा, सिन्दूर का डिब्बा लेले,
बालाजी के डील पे घी, सिन्दूर लगाणा सै ।। ४ ।।

''हनुमान जन्म''

(तर्ज : चिरमी फाल्गुनी पाठक...)

जायो रे अंजनी के लाल जी-२,
वीर बजरंग लियो अवतार, बाजे रे बाजे थाल जी ।। टेर ।।

धन धन हुयो आंगणियो, माँ के घर में ठाठ हुया,
घर घर खुशियाँ छाई है, भक्त बधाई बांट रह्या,
नाचे रे नो नो ताल जी-२, बाजे रे... ।। १ ।।

चाँदी रो इक पालणियो, घर के बीच घलायो जी,
छोटे से बजरंगी ने, झाला देर झुलायो जी,
सुत्यो रे मां को लाल जी-२, बाजे रे... ।। २ ।।

बजरंग बणके भोला जी, ''हर्ष'' आज अवतार लियो,
राम प्रभु की सेवा को, कांधे उपर भार लियो,
दुष्टां रो जायो काल जी-२, बाजे रे... ।। ३ ।।

(तर्ज : हरियाणवी धमाल...)

घरने आजा रे बजरंगी तन्ने जाट बुलावे रे,
खड्या खेत के बीच आज तेरी याद सतावे रे ।। टेर ।।

चैत सुदि पूनम ने तेरा मेला जोर का लागै सै,
क्यूकर आवे जाट रात खेता में जागै सै ।
घरने आजा रे... ।। १ ।।

पीहर चलगी आज जाटणी घर की जिम्मेदारी सैं,
हम तो रोज आवासां इबकी तेरी बारी सै ।
घरने आजा रे... ।। २ ।।

सियाले में या मरजाणी भैंस बड़ी अरड़ावे सै,
खूंटे तै यो बंध्या काटड़ा उधम मचावे सै।
घरने आजा रे... ।। ३ ।।

‘‘हर्ष’’जाट की सुणले बाबा इबकी घर ने आजा रे,
रोट राबडी खाकर होजा मोटा ताजा रे ।
घरने आजा रे... ।। ४ ।।

‘‘श्री रामनवमी’’

(तर्ज : फाल्गुनी पाठक...)

बाज्या अवध में थाल जी-२, रघुनन्दन लियो अवतार,
नाचो रे नो नो ताल जी ।। टेर ।।

आज अयोध्या दुल्हन सी बण करके शरमाय रही,
आज लुगायां घर घर में मंगल गीत सुणाय रही,
उड़े है रंग गुलाल जी ... ।। १ ।।

धरती पर जद पाप बढ़्यो विष्णुजी अवतार लियो,
धर्म की रक्षा को रघुवर कांधे उपर भार लियो,
जायो कोशल्या के लाल जी ... ।। २ ।।

आज बड़ो ही शुभ दिन है दशरथ नंदन जायो जी,
अत्याचार मिटावण ने आज धरा पर आयो जी,
दुष्टां रो जायो काल जी ... ।। ३ ।।

जन्म जयन्ति को उत्सव सगला खूब मनाओ जी,
राम जन्म की नवमी पर खातो नयो घलाओ जी,
लाग्यो नयो ‘‘हर्ष’’ साल जी ... ।। ४ ।।

‘‘श्री रामचरित मानस भजन’’

(तर्ज : ताऊ बांधले सामान...)

घर में जिनके श्री राम की चर्चा होती है-२,
दौड़े आते है हनुमान पलमें किरपा होती है ।। टेर ।।

राम कथा जिस जगह पे होवे, क्षण में बजरंग आते,
बांध के घुघरूं हरिकिर्तन में, नाच नाच दिखलाते,
राम सुधा रस की घर में जब बरखा होती है... ।। १ ।।

राम चरित मानस का जो भी, घर में पाठ कराये,
दो शब्दों के राम नाम का, सार समझ वो पाये,
राम जाप से हृदय में शीतलता होती है ... ।। २ ।।

भगतों में सरनाम कपि का, राम के सेवक प्यारे,
विभिषण ने नाम जपा तो, हो गये वारे न्यारे,
‘‘हर्ष’’ जहां पे हरिगुणों की व्याख्या होती है... ।। ३ ।।

(तर्ज : वृन्दावन में राधेजी का नाम जपना...)

संकट मोचन बालाजी का ध्यान धरले,
तुझे राम मिल जायेगें ।। टेर ।।

रोम रोम में राम बसे हैं , राम का आज्ञाकारी,
राम प्रभु की सांझ सबेरे, करता चोकीदारी,
बालाजी का भक्त गुणगान करले ।
तुझे राम... ।। १ ।।

राम नाम की माला जपता, हृदय राम बसाये,
चीर के सीना बजरंगी, श्री राम का दर्श कराये,
बालाजी की महिमा का बखान करले ।
तुझे राम... ।। २ ।।

मिलना है जो राम से पहले, बालाजी को ध्याओ,
खुश हो जाये बजरंगी तो, राम की किरपा पाओ,
बालाजी से ‘‘हर्ष’’ फरियाद करले ।
तुझे राम... ।। ३ ।।

(तर्ज : मंगल भवन अमंगलहारी...)

श्याम वरण चितवन मनुहारी,
मोर मुकुट पीताम्बर धारी ।। टेर ।।

कमल नयन कर मुरली विराजे,
गल वैजन्ती माला साजे ।। १ ।।

चंदन टीका मस्तक सोहे,
कर्ण बालियां मन को मोहे ।। २ ।।

मुख पर लटके लट घुंघराली,
पुष्प हार की छटा निराली ।। ३ ।।

रतन जड़ित सिहांसन धारी,
बांकी अदा पर हम बलिहारी ।। ४ ।।

माखन मिश्री भोग है प्यारा,
''हर्ष'' श्याम पूजे जग सारा ।। ५ ।।

(तर्ज : वो खेत में मिलेगा खलिहान में मिलेगा...)

ये राम में मिलेगा, घनश्याम में मिलेगा,
भगवान प्यारे तुझको, हर नाम में मिलेगा ।। टेर ।।

देता नहीं दिखाई, महसूस पर ये होता,
हर एक शय में रब का, आभास हो ही जाता,
इन्सानियत से देखो, इन्सान में मिलेगा,
ये राम में मिलेगा... ।। १ ।।

मथुरा-अयोध्या-काशी, लाखों ही धाम इसके,
भोला-कन्हैया-विष्णु, कितने ही नाम इसके,
जिस नाम से भी पूजो, उस नाम में मिलेगा,
ये राम में मिलेगा... ।। २ ।।

छूना भी ''हर्ष'' चाहें, छूने कभी न पायें,
ये सामने हो फिर भी, हम देखने न पायें,
बस झांक ले ह्रदय में, निज प्राण में मिलेगा,
ये राम में मिलेगा... ।। ३ ।।

(तर्ज : बचपन की मोहब्बत को...)

कलयुग के कन्हैया को, तुम याद किया करना,
बाबा से मिलने की, फरियाद किया करना ।। टेर ।।

घर तेरे खुशियों के, ये दीप जला देगा,
सोई हुई किस्मत को, ये आके जगा देगा,
सोते उठते बंदे, बस नाम जपा करना... ।। १ ।।

इस नाम को जप करके, कितने ही तर गये हैं,
माया से मुक्त हुए, भव पार उतर गये हैं,
जब काम न हो कोई, तब काम यही करना... ।। २ ।।

दुखियों और दीनों का, मेरा श्याम सहारा है,
क्षण भर में प्रकट हुआ, जब जिसने पुकारा है,
इस लीले वाले का बस ध्यान किया करना... ।। ३ ।।

बाबा से मिलने की, जब आश जगाओगे,
बंद करना आँखो को, इसे सामने पाओगे,
ऐ ''हर्ष'' तू सांसो में, बस श्याम बसा रखना... ।।४ ।।

(तर्ज : मिलती है जिंदगी में...)

बच्चे पुकारे सांवरे, आते हो क्यूं नहीं,
बेटों पे थोड़ा सा रहम, खाते हो क्यूं नहीं ।। टेर ।।

हम पे जो बीती सांवरे वो हम ही जानते-२,
भक्तों के दुखड़े आके उठाते हो क्यूं नहीं ।। १ ।।

मन का ये दीप जल रहा, बाती भी रो रही-२,
करूणा का थोड़ा तेल पिलाते हो क्यूं नहीं ।। २ ।।

ठण्डक सी मिलती है तुझे, भगतों की पीड़ से-२,
वरना हमारी आग बुझाते हो क्यूं नहीं ।। ३ ।।

पीते रहे हैं आग ''हर्ष'' पानी के नाम पर-२,
अमृत जरा सा आके पिलाते हो क्यूं नहीं ।। ४ ।।

(तर्ज : आ जाओ तड़पते हैं अरमां...)

आ जाओ मेरे ओ श्याम प्रभु, ''मै तेरी आस लगाया हूँ''-२ ।
ऐसे न रूला मुझको बाबा, ''चरणों में शीश झुकाया हूँ''-२ ।।

ये पलकें जरा सी तुम खोलो, तेरे बेटे को कान्हा देख तो ले, देख तो ले ।
छुप बैठे कहाँ, मैं ढूंढू यहां, ''दर्शन की आस मैं लाया हूँ''-२ ।।

भगतों के मन की सुनते हो, क्या मुझको बाबा भूल गये, भूल गये ।
मिलने की इच्छा लेकर के, ''बड़ी दूर से चलकर आया हूँ'' -२ ।।

तेरी याद में रोता रहता हूँ, अब नैनों के आंसू सूख गये, सूख गये ।
ना और सता मुझको कान्हा, ''मैं शरण तुम्हारी आया हूँ''-२ ।।

दर दर की ठोकरे खाई हैं, अब 'हर्ष' कन्हैया हार गया, हार गया ।
स्वीकार करो, मुझको बाबा, ''मैं जग से हार के आया हूँ''-२ ।।

(तर्ज : सर से जो सरकी वो धीरे-धीरे...)

बाजी रे मुरलिया धीरे-धीरे,
घायल किया रे मोहे धीरे-धीरे,
तेरी बांसुरिया, दिल ले गई ।। टेर ।।

कान्हा ने मुरली बजाई है,
राधा पे मस्ती सी छाई है,
वो कदम के तले, श्याम राधा मिले... ।। १ ।।

सावन की रूत ये सुहानी है,
रिमझिम बरसता पानी है,
कान्हा रास रचे, राधा अंग लगे... ।। २ ।।

बंशी ने जादू चलाया है,
''हर्ष'' को अपना बनाया है,
होश खोने लगे, तेरे होने लगे... ।। ३ ।।

(तर्ज : जिसकी रचना इतनी सुंदर...)

तुझे देखकर, श्याम हमारा, मन वश में, क्यूं कर होगा-२,
तेरी प्रतिमा, इतनी सुंदर, ‘‘तू कितना, सुंदर होगा’’-२ ।।

तुझे देखने को मैं क्या हर, सेवक तरसा करता है,
इन नैनों से झरझर कर ‘‘यूँ सावन बरसा करता है’’-२,
इन्द्रधनुष की छटा बिखेरे, रूप का तू सागर होगा ।। १ ।।

श्याम रंग नंद के नंदन, अंधरों पे मुरली प्यारी है,
तेरी बांकी अदायें यूं लागे ‘‘ज्यूं तिरछी कोई कटारी है’’-२,
अंबर से अमृत बरसेगा, सामने जब ईश्वर होगा ।। २ ।।

हे कमल नयन मुरली वाले, भगतों को यूं तरसाओ ना,
नैनों की प्यास बुझा दो तुम, ‘‘अपनों पे सितम यूं ढ़ाओं ना’’-२,
तेरा रूप निरखने को तेरे, ‘हर्ष’ का मन आतुर होगा ।। ३ ।।

(तर्ज : श्याम थारी ओल्यूं आवे जी...)

श्याम थांपे केशर छिड़कां जी-२,
ज्यूँ लागे बनड़ो आज सांवरो, थाने निरखां जी,
श्याम थांपे केशर छिड़कां जी ।। टेर ।।

कानां कुण्डल सोहे थारे, गल वैजन्ति हार, सांवरा,
मोर छड़ी हाथां में सोहे, खूब सज्यो सिणगार,
नैण म्हारा थांपे अटक्या जी, ... ।। १ ।।

केशर तिलक विराजे माथे, सिर घुंघराला बाल, सांवरा,
थाने बिठाकर लीलो चाले, तिरछी-तिरछी चाल,
लगावे जोर का ठुमका जी, ... ।। २ ।।

बांकी अदा सूं थे इतरावो, होठां पर मुस्कान, सांवरा,
प्यारी प्यारी मुरली बजावो, छेड़ो मीठी तान,
सांवरा म्हे तो भटक्या जी, ... ।। ३ ।।

कालो टीको आज लगावां, लेवां निजर उतार, सांवरा,
‘‘हर्ष’’ सांवरा लाड लडावां, छिड़कां इत्तर फुहार,
करां फूलां री बरखा जी, ... ।। ४ ।।

(तर्ज : उठे तो बोले राम...)

अठिने दिखे श्याम, बठिने दिखे श्याम,
जठिने मुंडो फेरूं, दिखे श्याम-श्याम श्याम ।। टेर ।।

सांवरिया थारी, झांकी सजाई जी-२,
थे दोड्या आया हो, किर्तन के माहीं जी,
प्यारो सो मुखड़ो चमके, लागे ज्यूं हीरो दमके,
थारी गूंज रही जयकार, बाबा श्याम-श्याम-श्याम ।। १ ।।

कान्हुड़ो म्हारे, हिवड़े समायो जी-२,
आंको रूप सुहाणो है, म्हारे मनड़े भायो जी,
जांगु तो दिखे श्याम, सोऊं तो दिखे श्याम,
म्हारे रोम-रोम में बसग्यो, बाबो श्याम-श्याम-श्याम ।। २ ।।

बाबा जी थांसू, अरजी लगावां जी-२,
थे बेगा आज्यो जी, जद ‘‘हर्ष’’ बुलावां जी,
म्हारी आख्यां माही श्याम, सुपणे के माही श्याम,
होठां सू निकले एक नाम, बस श्याम-श्याम-श्याम ।। ३ ।।

(तर्ज : चांदणिये में चमके चीर...)

तिरछा तिरछा निरखो श्याम, होले होले मुल्को श्याम,
क्यूं म्हारा, कान्हुड़ा SSओ कान्हुड़ा SS
सलूणो लागे म्हाने सांवरो ।। टेर ।।

गल वैजन्ति हार बिराजे, केशर को है टीको,
घुंघराली लटकण के स्यामी, सै क्यूं लागे फीको,
थारे मोर छड़ी, हाथां में पड़ी-२,
कोई बागो घेर घुमेर, कान्हुड़ा ... ।। १ ।।

कानां माही कुण्डल साजे, लीले की असवारी,
पचरंगी पेचे ने निरखे, बाबा दुनिया सारी,
ओ श्याम धणी, म्हारो घड़ी घड़ी-२,
मनड़े रो नाचे मोर, कान्हुड़ा... ।। २ ।।

लाल गुलाबी होठं रसीला, आँख्या रस बरसावे,
श्याम सलूणी चितवन थारी, भगतां ने भरमावे,
फूलां री लड़ी, थारो हार बणी-२,
थे ‘‘हर्ष’’ घणा चितचोर, कान्हुड़ा... ।। ३ ।।

(तर्ज : म्हारा लीले रा असवार...)

थारे भगतां री पुकार, म्हारा सांवरिया सरकार,
थे तो बेगा बेगा आओ जी, आओ जी कान्हा ।। टेर ।।

बाबा थारे सेवकां ने, किर्तन आज करायो,
रूप सलोणो देखबा ने, मनड़ो है हर्षायो,
म्हारा सांवरिया हजूर, थाने देखांला जरूर,
म्हाने दरश दिखाओ जी, दिखाओ कान्हा... ।। १ ।।

भगतां रे संग लूक मीचणी, कान्हुड़ा क्यूं खेलो,
बेगा आओ सांवरिया, म्हारो हिवड़ो मारे हेलो,
बरसे आंखड़ल्यां सूं नीर, उठे मनड़े में पीड़,
म्हाने घणो ना सताओ जी, सताओ ना कान्हा... ।। २ ।।

खीर चूरमो, फल और मेवा, छप्पन भोग सजायो,
भगतां रे घर बैठ सांवरा, रूच-रूच भोग लगाओ,
खाकर नागरियो थे पान, ''हर्ष'' भगतां रो मान,
कान्हा आज बढ़ाओ जी, बढ़ाओ कान्हा... ।। ३ ।।

(तर्ज : म्हारी चन्द्र गवरजा...)

या श्याम सुरंगी, मेहंदी मंडवाल्यो थारे हाथ जी ।। टेर ।।

घणी राचणी, ई मेहंदी ने, भजना में घुलवाई,
लाख छुड़ायां ना छूटे-ली-२, एकर हाथ मंडाई जी ।। १ ।।

ई मेहंदी सूं, हाथ मंडाया, तन मन भी रच जावे,
श्याम नाम हाथां के सागे-२, हिवड़े में रच जावे जी ।। २ ।।

नानी-नरसी, करमा बाई, सगला हाथ मंडाई,
भात भरायो खीचड़ खायो-२, हुंडी ने सिकराई जी ।। ३ ।।

''हर्ष'' श्याम की, जादूगारी, मेहंदी जो मंडवासी,
उन भगतां पर श्याम धणी को-२, जादू सो चढ़ जासी जी ।। ४ ।।

‘‘गजरा’’

(तर्ज : बीरा बेगा बेगा थे तो...)

थारो सोणो सोणो गजरो बणाया,
थाने बनड़ो सो आज बणाया जी ।। टेर ।।

चुन चुन के कलियां ल्याया, प्यारो इक हार बणाया,
ज्यां में लाल गुलाब लगाया जी ।। थारो सोणो... ।। १ ।।

अंतर केशर छिड़कायो, भीणो - भीणो - महकायो,
गोटा तारा में गुंथाया जी ।। थारो सोणो... ।। २ ।।

यो लाल गुलाबी गजरो, सांवलियो पहर के संवर्‌यो,
काले ने लाल बणाया जी ।। थारो सोणो... ।। ३ ।।

मुल्को थे ‘‘हर्ष’’ मुरारी, थां पर जावां म्हे वारी,
थाने निरख निरख सुख पाया जी ।। थारो सोणो... ।। ४ ।।

(तर्ज : मृदंग चंग बाजे...)

मणी मुकुट सोहे, हाथां में थारे मोर छड़ी,
सांवलो श्याम सलूणो, सांवरियो श्याम धणी ।। टेर ।।

घुंघराली लटकण लटके, बागे की शोभा हट के,
होठां पर मुरली प्यारी, सिंहासण बैठ्यो डट के,
यूं, मुलके कृष्ण कन्हाई, सुहाणी लागे छवि घणी ।
सांवलो श्याम... ।। १ ।।

माथे पर तिलक बिराजे, कानां में कुण्डल साजे,
थारो नोलख हार कन्हैया, भगतां ने प्यारो लागे,
यो, रूप बड़ो सुखदाई, आँसू की म्हारे लागी रे झड़ी ।
सांवलो श्याम... ।। २ ।।

कजरारी नैण कटारी, गजरे की शोभा भारी,
क्यूं तिरछा-तिरछा निरखों, भगतां ने श्याम बिहारी,
के, थारे मनमे समाई, सतावो म्हाने घड़ी-घड़ी ।
सांवलो श्याम... ।। ३ ।।

सेवकिया चंवर ढुलावे, चरणा में शीश झुकावे,
थारे झांझ नगाड़ा बाजे, थारी ‘‘हर्ष’’ आरती गावे,
थे, सबकी करो सुणाई, दयालू म्हारा देव धणी ।
सांवलो श्याम... ।। ४ ।।

(तर्ज : अजमल जी रा कंवरा भूलू न...)

सिंहासण बैठ्यो, मुलकै यो श्याम धणी,
मुलकै यो श्याम धणी,
भगतां ने पल-पल, निरखे यो श्याम धणी ।। टेर ।।

पचरंगो बागो सोहे, मुरली अधर जी, हाथां में मोर छड़ी,
ओ बाबा थारे हाथां में मोर छड़ी, ... ।। १ ।।

केशरियो टीको माथे, काना में कुण्डल जी, फूलां री लटके लड़ी,
ओ बाबा थारे फूलां री लटके लड़ी, ... ।। २ ।।

सांवली सुरत थारी, मोहनी मुरत जी, गल वैजन्ती पड़ी,
ओ बाबा थारे गल वैजन्ती पड़ी, ... ।। ३ ।।

भगतां रे ''हर्ष'' थारो, रूप निरख जी, आंसुड़ा री लागी झड़ी,
ओ बाबा म्हारे आंसुड़ा री लागी झड़ी, ... ।। ४ ।।

(तर्ज : थाने परदे में राखाजी म्हारा श्याम...)

तीन बाण धारी, तीन बाण धारी-२,
म्हाने तिरछो तिरछो, मतना देखे श्याम,
भगत मर जावे लो ।। टेर ।।

सिंहासन पर बैठ्यो कान्हो, नैणा तीर चलावे,
भगतां रो मन घायल करके, होले से मुस्कावे,
म्हाने इतणो ना सतावे घनश्याम,
भगत मर जावे लो ।। १ ।।

आज बुलावे थारो सेवक, भगतां के घर आजे,
रूखी सूखी तने परोसूं, घणे चाव सूं खाजे,
म्हारो राखजे ओ कान्हा थोड़ो मान,
भगतो मर जावे लो ।। २ ।।

नानी, नरसी, मीरा, करमा, सबके आडो आयो,
मेरी बरियां बांके छलिया, क्यूं घणो इतरायो,
तेरे ''हर्ष'' ने भी आके तू संभाल,
भगत मर जावे लो ।। ३ ।।

(तर्ज : आज म्हारे आंगणिये में...)

आज म्हारे आंगणिये में आया बाबा श्याम जी,
आया बाबा श्याम जी, पधारया बाबा श्याम जी ।। टेर ।।

अहिलावती का लाल कुहावो, कलयुग रा अवतारी जी,
तीन बाण तरकश में राखो, महिमा थारी भारी जी,
लीलो थारे, संग बिराजे-२, छम छम नाचे,
छम छम नाचे जोर जोर का, मारे ठुमका आज जी... ।। १ ।।

घर घर पूजा होवे थारी, हारे का थे साथी जी,
सुपणे माहीं नाम सुण्या, दुष्टां री फाटे छाती जी,
सेवक थाने, आज रिझावे-२, छन-छन बाजे,
छन-छन बाजे झांझ नगाड़ा, धुन गूंजे झंकार जी... ।। २ ।।

ऊंचे आसण आप बिराजो, खूब सज्यो सिणगार जी,
''हर्ष'' सांवरा भोग लगाओ, भक्त करे मनवार जी,
बाबो म्हाने, आशिष देवे-२, खिल खिल हांसे,
खिल खिल हांसे आज सांवरो, सुण लीन्ही पुकार जी... ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरी मटकी को कर गयो टूक...)
तेरे कान्हुडे ने थोड़ो सो सम्भाल, मैया यो तो हद कर दी,
म्हाने मोकलो सतावे, म्हारे ताबे कोनी आवे-२,
सारी गूजर्यां को, करे बुरो हाल-हाल-हाल ।। टेर ।।
आँगली मरोड़े कुबदी, मटकी ने फोड़े रे,
जमना नहाणे जावां, बठे कोन्यां छोड़े रे,
म्हारा कपड़ा चुरावे, म्हाने लाज घणी आवे-२,
चढ़ जावे रे, कदम की डाल-डाल-डाल ।। १ ।।
सोवणा सा केश मैं तो, राखती सम्भाल के,
साबता मां बच्या कोनी, जुल्मी के जाल से,
मन्ने सूती ने सतायो, घणो जुलम यो ढ़ायो-२,
मेरा कतर्या, कतरनी से बाल-बाल-बाल ।। २ ।।
पाणी लेण जांवती के, आवे लेरे लेरे रै,
एकली ने देख बैरी, रास्ते में छेड़े रै,
इका चोखा कोनी ढ़ंग, मन्ने रोज करे तंग-२,
मन्ने करे रे, शरम सै लाल-लाल-लाल ।। ३ ।।
बांसरी बजावे ''हर्ष'' जादू सो जगावे है,
नैणा का बाण मारे, तीर सा चलावे है,
इकी चोखी कोनी बाण, मैया खींच इका कान-२,
बैरी चालै है रे, टेढ़ी मेढ़ी चाल-चाल-चाल ।। ४ ।।

(तर्ज : सासुजी तेरा लल्ला...)

यशोदा तेरा लल्ला, सताये खुल्लम खुल्ला-२,
कभी ये फोड़े मेरी गगरिया-२,
कभी ये खींचे पल्ला ।। टेर ।।

सांझ ढ़ले मोहे, रस्ते में घेरी,
पकड़ी कलाई, करी बरजोरी,
झट से उंगली थाम के बोला-२,
आ पहना दूं छल्ला ।। यशोदा तेरा... ।। १ ।।

रात को जब मैं, नीन्द में सोई,
सुंदर सलोने, सपनों में खोई,
सारे बाल कतर डाले रे-२,
जान गया मोहल्ला ।। यशोदा तेरा... ।। २ ।।

भोर भये जाऊं, जमना नहाने,
पीछे ये ''हर्ष'' आये, मोहे सताने,
चढ़ जाये माँ पेड़ पे लेके -२,
कपड़े ये निठल्ला ।। यशोदा तेरा... ।। ३ ।।

(तर्ज : मन क्यूं बहका रे बहका आधी रात को...)

कैसी बंशी बजाई तूने सांवरे,
बैरन निदिंया चुराई हुए, बावरे ।। टेर ।।

बहका बहका, सा रहता हूँ, होश नहीं है ठिकाने,
तेरी बंशी, में बसते हैं, लाखों ही पैमाने,
सीधे पड़ते नहीं है मेरे पांव रे... ।। १ ।।

मीठी मीठी, टीस उठे है, दिल में ओ परवाने,
जाने कैसा, जादू कीन्हा, दास लगे भरमाने,
कैसा दिल पे लगाया तूने घाव रे... ।। २ ।।

मनवा रहता, खोया खोया, नैन हुए दीवाने,
तेरी मुरली, मस्त बनाये, हमको ओ मस्ताने,
''हर्ष'' घाले ठिठोरी सारा गांव रे... ।। ३ ।।

(तर्ज : इचकदाना...)

रोज चुराके माखन खाना, तेरा रोग पुराना, ओ रे कान्हा,
खोल के खिड़की रोज रात को, चोरी-चोरी आना,
ओ रे कान्हा ।। टेर ।।

मैया बनाये तेरी, कितने ही व्यंजन,
फिर काहे चोरी, करता तू माखन, ओऽऽऽ
चुपके चुपके ग्वालों के संग, छींके पे चढ़ जाना, ओ रे कान्हा..

जिसके कमी हो, चोरी वो करता,
लेकिन तू काहे, माखन पे मरता,
रात रात भर सो ना पायें, नीन्दे तू उड़ा ना, ओ रे कान्हा...

खाना ही हो गर, मांग के खा ले,
जी भर के अपनी, भूख मिटा ले,
छीकें चढ़के मटकी फोड़े, माखन ना गिरा ना, ओ रे कान्हा...

अच्छे नही रे, लल्ला तेरे ढंग,
''हर्ष'' तू हमको, करता है क्यूं तंग,
माखन का तू करके बहाना, हमको यूं सता ना, ओ रे कान्हा...

मणिहारी

(तर्ज : थारे झांझ नगाड़ा...)

कान्हो, कैसो रूप बणायो रे,
बण मणिहारी राधाजी से मिलणे आयो रे,
मिलणे आयो रे सांवरो मिलणे आयो रे ।। टेर ।।

घेर घुमेरे घाघरे पर, चूनड़ ओढ़ी लाल
नैणा माही काजल घाल्यो, होठां लाली लाल,
चुड़ला, सिरपे धर कर ल्यायो रे... ।। १ ।।

गली गली में हेला मारे, मथुरा को सरदार,
प्रेम दिवानों बण बेचे जी, चुड़ला लखदातार-२,
कान्हो, कैसो गजब यो ढ़ायो रे... ।। २ ।।

सोणो सो इक छांट के चुड़लो, बोली राधा प्यारी,
घणे जतन सूं हाथा माहीं, पहरादे मणिहारी,
कान्हो, मन ही मन मुस्कायो रे... ।। ३ ।।

पूछण लागी दाम बता जद, मुल्क्या कृष्ण कन्हाई,
''हर्ष'' तेरे सै दाम के लेस्यूं, झांकले आंख्या माहीं,
जुल्मी, कैसो भेष बणायो रे...
त्रिलोकी को नाथ आज के स्वांग रचायो रे... ।। ४ ।।

(तर्ज : म्हाने एकर तो दरबार में...)

ओ भाया सांवरिये सरकार ने मनाय लीज्यो रे-२,
बाबो सांचो न्याय चुकावे, मतना भूल जाज्यो रे ।। टेर ।।

ध्यान मगन हो जो भी ध्यावे, बाबो परचा देवे, म्हारो-३
आंख मीच के थे बाबा को, ध्यान लगाज्यो रे ।। १ ।।

भगतां उपर भीड़ पड़े तो, दौड़्यो दौड़्यो आवे, बाबो-३,
कान्हुड़े के चरणां माही, धोक लगाज्यो रे ।। २ ।।

जद फागण को महिनो आवे, हेला मार बुलावे, बाबो-३,
भगतां री टोली रे सागे, खाटू जाज्यो रे ।। ३ ।।

फागणिये में ''हर्ष'' सांवरो, मोकलो माल लुटावे, बाबो-३,
खाली झोली लेकर जाज्यो, भरके ल्याज्यो रे ।। ४ ।।

(तर्ज : उठे तो बोले राम...)

बागां में झूलो घाल्यो, बाबा ने आज झुलाल्यो,
दे दे कर झाला जोर का, बाबा ने आज रिझाल्यो ।। टेर ।।

यो रंग बिरंगो झूलों सजायो जी,
झूले रे आसण पर, बाबा ने बिठायो जी,
रेशम री डोर हिलाल्यो, और श्याम धणी ने हिण्डाल्यो,
करके जयकारो जोर को, बाबा ने आज मनाल्यो ।। १ ।।

बादल में बिजली, चम-चम चमके जी,
रिमझिम रिमझिम बूदां, बागां में बरसे जी,
भगतों बागां में चालो, बाबा ने आज नुहाल्यो,
बरसे सावणियो जोर को, बाबा के साथ नहाल्यो ।। २ ।।

बागां में मोरियो, पिऊं पिऊं बोले जी,
''हर्ष'' कानां में कोयल, मिश्री सी घोले जी,
बाबा ने भजन सुणाल्यो, भक्ति री ज्योत जगाल्यो,
मन रो दरवाजो खोल के, बाबा ने आज बिठाल्यो ।। ३ ।।

(तर्ज : गोरा गोरा गाल थारा...)

बाबा म्हारे लाडले के ब्याह मे तन्ने आणा सै,
आके मान बढ़ाणा सै सांवरिया, ओ म्हारा ।। टेर ।।
घणे दिनां तै यो दिन आया, किरपा होगी थारी,
मन का चाया सगा मिल्या सै, बाँछा खिलगी म्हारी,
म्हारा नूता कर स्वीकार, तन्नै आणा सै सरकार-२,
खरचे का हिसाब चुकाणा सै सांवरिया ।।
बाबा म्हारे लाडले... ।। १ ।।
तेरी किरपा तै ही बाबा, चोखा मिल्या घराणा,
बेगा सा तै आजा तन्नै, ब्याह का काम पटाणा,
म्हाने कर दे रे निहाल, आके थेली ने सम्भाल-२,
तेरे संग हेत पुराणा सै सांवरिया ।।
बाबा म्हारे लाडले... ।। २ ।।
छोरे-छोरी की या जोड़ी, भोत घणी सै प्यारी,
''हर्ष'' हमेशा बणी रहवे जी, आं पर किरपा थारी,
बेगा आजा लखदातार, इब क्यूं घणी लगावे बार-२,
म्हारे ब्याह ने सफल बणाणा सै सांवरिया ।।
बाबा म्हारे लाडले... ।। ३ ।।

(तर्ज : लोगं गवाचा...)

जाट भगत के घर में आजा, दूध-मलाई-माखन खाजा,
मोटा तागड़ा होजा रे, मेरा श्याम धणी तैं ।। टेर ।।

रोट बाजरा साग फली का, खाय खीचड़ा देशी घी का,
छाछ राबड़ी, पी जा रे, मेरा श्याम...।। १ ।।

काचर और मतीरे खाले, गाजरपाक का भोग लगाले,
गूंद के लाडू खा जा रे, मेरा श्याम... ।। २ ।।

बिठा ऊंट पर तन्ने घुमाऊं, माट का ठण्डा पाणी प्याऊं,
आके प्यास बुझा जा रे, मेरा श्याम... ।। ३ ।।

एक बार आजा सांवरिया, तगड़ा करद्यूं मेरे बरगा,
आके सेहत बणा जा रे, मेरा श्याम... ।। ४ ।।

खाण पीण का जरा न टोटा, भर्या नाज का मेरा कोठा,
''हर्ष'' के घर में आजा रे, मेरा श्याम... ।। ५ ।।

(तर्ज : ताऊ बांधले समान...)

फागणिये की मस्ती में नाचागां गावागां-२,
होली खेलस्यां ओ बाबा थारे रंग लगावागां ।। टेर ।।

भांत भांत का रंग मगायां, सोने की पिचकारी,
बाबा जी के रंग लगावां, सगला बारी बारी,
ना मानो तो बाबा थाने आज मनावागां... ।। १ ।।

फाग सुणावा धूम मचावां, एक सुणा ना थारी,
प्रेम रंग में रंग देस्यां, थाने म्हे आज बिहारी,
ना छुटेलो ऐसो पक्को रंग लगावागां... ।। २ ।।

ढ़ोलक ढपली चंग बजावां, बाबा ने रिझावां,
ठण्डाई में घोट घोट के, थाने भंग पिलावां,
घणे चाव सूं थाने छप्पन भोग जिमावागां... ।। ३ ।।

बाबा जी के भांग चढ़ी जी, चिमटो ''हर्ष'' बजावे,
भगतां सागे नाचे गावे, अमृत रस बरसावे,
मस्ती के पावन सागर में गोता खावागां... ।। ४ ।।

(तर्ज : थाली भर कर ल्याई...)

इबकी मेरे घर ने आजा, सुणले बाबा जाट की,
जी भर के तै माखन खाजा, खाण पीण के ठाठ जी ।। टेर ।।

चर चर बोले दरवाजा जद, प्यास मिलण की भड़के रे,
मेरे कालजे के भीतर ज्यूँ, बिजली कड़ कड़ कड़के रे,
मैं तो ठहर्या नपट ऊत इब, सुणले सम्पट पाट की ।। १ ।।

दिनगै पहली चाणचकी सी, दांई आँख क्यूं फड़के रे,
कूकण लाग्या आज कागला, छाती धड़-धड़ धड़के रे,
घर आवेगा आज बटेऊ, बोले सुसरी खाट भी ।। २ ।।

क्याने बाबा यूं तरसावे, आजा लीले चढ़के रे,
भगतां सागे राड़ मचा ना, बैठ्या सै क्यूं अड़ के रे,
साँचे मन तै आज बुलावूँ, आणे में के आँट जी ।। ३ ।।

चार चार गायां सै घर में, दूध भतेरा देवे रे,
मैं तो बाबा धाप चुक्या हूँ, कोण चूँटीया खावे रे,
''हर्ष'' उड़ीके बाट साँवरा, ले माखन की माटकी ।। ४ ।।

हरियाणवी भजन

(तर्ज : गोरा गोरा गाल थारा...)

बाबा मेरे आंगणे में गीगला खिलादे रे,
कि माथा टेकण आंऊला रे सांवरिया ।। टेर ।।

निहाल हो जाऊं बाबा मन्ने, देदे तैं इक छोरा,
तेरे बरगे आंखड़-नाकड़, रंग हो गोरा गोरा,
तन्ने बोले सै यो जाट, बाबा सुणले मेरी बात-२,
मेरे आंगणे में पालणा घलादे रे सांवरिया... ।। १ ।।

दूजा कोई माणस कोनी, मेरे घर में बाबा,
खेत भी जाऊं घर भी देखूं, होग्या रे मैं आधा,
मैं तो होग्या पिचपन पार, इब तो सुणले रे दातार-२,
तेरे लाडूआं का भोग लगाऊंगा रे सांवरिया... ।। २ ।।

''हर्ष'' बुढ़ापा स्यामी दिखे, ढीली पड़गी काठी,
बेगा सा तैं मन्ने दे दे, बुढ़ापे की लाठी,
तै तो भोत घणा दिलदार, मेरी सुणले रे इकबार-२,
तेरे जात जडूला आंऊला रे सांवरिया... ।। ३ ।।

(तर्ज : आओ जी आओ म्हारा हिवड़े रा पावणा...)

ऐसो दातार कठे देख्यो ना सुण्यो जी-२,
शरणे पड़यां को बाबो काम बणावे जी,
आने जो ध्यावे बोतो मौज उड़ावे जी,
ऐसो दातार कठे देख्यो ना सुण्यो जी ।। टेर ।।

निज भगतां पर, भीड़ पड़े तो, झट से उबारे म्हारो, श्याम धणी,
दर आये की, आस पुरावे, दर पे जो लेके जावे, आस घणी,
ऐसो दातार... ।। १ ।।

आंधलियां ने, आँख्या देवे, पागंलिया ने देवे, टांगड़ली,
निर्धणिया, ने, दौलत देवे, बेटो पावे अठे, बाँझड़ली,
ऐसो दातार... ।। २ ।।

बिन बोल्यां ही निज भगतां की, पीड़ पिछाणे म्हारो, सांवरियो,
''हर्ष'' सुमिर ले, कान्हूड़े ने, घर भर देसी तेरो, नटवरियो,
ऐसो दातार... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना ''छप्पन भोग''

(तर्ज : पल्लो लटके...)

खाले डट के रे भोग लगाले डट के,
कि तेरे, छप्पन भोग लगायो बाबा खाले डट के ।। टेर ।।
लाडू पेड़ा खीर चूरमो हलवो भोग लगाया,
राजभोग रसगुल्ला बरफी माखन मिश्री ल्याया,
इमरती, सांख भरी रसदार बाबा... ।। १ ।।
फलका पूड़ी मिसी रोटी मोठ चणा और भात,
पंचमेला की दाल कढ़ी और सांगर सरसो साग,
कि कोन्या, फोगले रो रायतो गले में अटके,... ।। २ ।।
माठी भुजिया दालमोठ सिंघाड़ा चनाचूर,
बड़ा पकोड़ी और कचौड़ी चटणी ल्यो भरपूर,
सांगरी, कैर फली पापड़ को स्वाद लागे हटके,...।। ३ ।।
पाछे खाओ सेव संतरा चीकू केला खजूर,
आम अनार अंगूर पपीता आडू खाओ हजूर,
कि पीयो, बेदाणा लीची को रस गट गट के,... ।। ४ ।।
दाख छुआरा काजू पिस्ता खुरमाणी बिदाम,
केशर रबड़ी दूध मलाई नाटण को के काम,
कि पीले, चांदी को गिलास बाबा भर-भर के,... ।। ५ ।।
गंगा जल सूं चलू करावां थारा हाथ धुलावां,
केशरियो कलकत्ती बीड़ो थाने ''हर्ष'' खिलावां,
ओ बाबा, बेगो आके जीम म्हारो हियो भटके,... ।। ६ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : धन बरसे धन बरसे...)

हीरा बरस्या, पन्ना बरस्या, बरस्या माणक मोती,
सोनो चांदी इत्ता बरस्या, धरती पड़गी छोटी,
थां पर महर करी कान्हुड़ो, आसमान सूं धन बरस्यो,
कांई करस्यो -२, नानीबाई इत्तो मायरो कठीने धरस्यो ।।

बाबो मोडो बण बैठ्यो, दुनिया में हुई हंसाई,
घर का जद ताना मार्‌या, डूबण सरवर में आई,
मां को जायो बीर नहीं यो-२, सोच सोच के मन तरस्यो... ।।

नानी जद नीर बहाई, सांवरियो दोड़यो आयो,
आकरके चुनड़ी उढ़ाई, और झट पट भात भरायो
धरम भैण की पत राखी जी-२, नानी बाई को मन हरस्यो... ।।

यो जगत सेठ अलबेलो, भगता रा कारज सारे,
अटकी नैया ने कान्हों, क्षण भर में पार उतारे,
''हर्ष''कान्हां सूं करे विनती-२, सब भगतां रा घर भरद्यो... ।।

(तर्ज : प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी...)

दोहा : श्रृगार तेरा इन आंखों को क्या खूब सुहाना लगता है ।
अंखियों से बैठा तीर चलाये मेरा श्याम सलोना हंसता है ।।

प्यारा लागे रे मोहे आज सांवरिया,
करे भगतों के दिल पे राज सांवरिया ।। टेर ।।

तिरछी नजर के तीर चलाये-२, तूने
घायल किया है मोहे आज सावंरिया ।। १ ।।

सांवला मुखड़ा ये बाकीं अदायें-२, काहे
ढ़ाये सितम मोपे आज सांवरिया ।। २ ।।

ऊंचे सिघांसन पे श्याम विराजे-२, देखो
बनड़ा सा लागे मोहे आज सांवरिया ।। ३ ।।

तेरा दिवाना लीला छम छम नाचे-२, तेरे
लीले घोड़े पे तोहे नाज सांवरिया ।। ४ ।।

''हर्ष'' नजर ना लागे रे तोहे-२, तेरी
लेवें बलाई सारे आज सांवरिया ।। ५ ।।

(तर्ज : पंचवटी के घाट-घाट पर...)

अहिलवति के लाल श्याम तेरा दुनियां में है नाम
आज घर आ जाना-२ ।। टेर ।।

फूलों के गजरों से तुझको सजाया-२,
केशर चन्दन महक उठे है, सजा तेरा दरबार
आज घर... ।। १ ।।

मीठे मीठे भजनों से तुझको रिझाया -२,
गणपत-हनुमत-शंकर के संग, खाटू के सरदार,
आज घर... ।। २ ।।

मोदक-मिसरी का थाल सजाया-२,
आज हमारे घर भी जीमो, ''हर्ष'' करे मनुहार,
आज घर... ।। ३ ।।

(तर्ज : खुदा भी आसमां से...)

कन्हैया इक नजर जो, आज तुझको देखता होगा,
मेरे सरकार को किसने सजाया, सोचता होगा ।। टेर ।।

सजाकर, खुद वो हैरां है कि ये तस्वीर किसकी है,
सजाया, तुझको जिसने भी हसीं तकदीर उसकी है,
कभी खुश हो रहा होगा, खुशी से रो रहा होगा,
कन्हैया इक नजर...।। १ ।।

जमाने, भर के फूलों से कन्हैया को लपेटा है,
कलि को, गूंथ कर कितने ही गजरों में समेटा है,
सजा सिंगार ना पहले, ना कोई दूसरा होगा,
कन्हैया इक नजर...।। २ ।।

फरिश्ते, भी तुझे छुप छुप के कान्हा देखते होंगे,
तेरी, तस्वीर में खुद की झलक वो देखते होंगे,
''हर्ष'' के दिल पे जो गुजरे, ये वो ही जानता होगा,
कन्हैया इक नजर...।। ३ ।।

''श्री श्याम अखण्ड ज्योति भजन ''

(तर्ज : ताऊ बांधले सामान...)

श्री श्याम अखण्ड की जिसके घर में ज्योति जलती है,
मेरे खाटू वाले श्याम की तब किरपा मिलती है ।। टेर ।।

बहुत बड़े है भागी वो जो इसका पाठ कराये,
श्याम प्रभु की महिमा का दुनिया को ज्ञान कराये,
श्याम धणी की किरपा से सब विपदा टलती है ।। मेरे .. ।।

बर्बरीक की जीवन गाथा छन्दो में जो गाये,
उस प्राणी के दुख के सारे फंदे ही कट जाये,
सुख का सूरज उगे दुखों की शाम ढ़लती है ।। मेरे ... ।।

खाटू का है देव निराला खुशियां देने वाला,
श्याम प्रभु के संग में जो भी ध्याये बजरंग बाला,
वीर बलि का ध्यान धरे तो भक्ति फलती है ।। मेरे ... ।।

''हर्ष'' कहे सब अपने घर में इसका पाठ कराओ,
वंश बेल बढ़ जायेगी रे महिमा ठाठ से गाओ,
श्याम नाम से हम भगतों की नैया चलती है ।। मेरे ... ।।

(तर्ज : इक परदेशी मेरा दिल ले गया...)

सुनो रे भगत तुझे जाना है वहां,
खाटूवाला श्याम बाबा रहता है जहां ।। टेर ।।

उसको मनाले, अपना बना ले,
सोई हुई किस्मत, जाके जगा ले,
बाबा जैसा देव सारे जग में कहां,
खाटूवाला श्याम... ।। १ ।।

लीले वाले श्याम की, यही है निशानी,
कलयुग के देव की, दुनिया दिवानी,
सबकी मुरादें पूरी करता वहां,
खाटूवाला श्याम... ।। २ ।।

बिगड़ी बनाता सारे, दुखड़े मिटाता,
भगतों को पल में ये, परचा दिखाता,
''हर्ष'' मेरे श्याम जैसा दानी है कहां,
खाटूवाला श्याम... ।। ३ ।।

(तर्ज : बोलती है मुरती बुलाके देखले...)
सांवरे से दिल को लगा के देख ले,
खोल देगा किस्मत रिझा के देख ले,
एक बार दर पे तू जाके देख ले,
खोल देगा किस्मत रिझा के देख ले ।। टेर ।।

करोगे जो पुकार, तुम्हें न्याय मिलेगा,
तेरे दुःख के समय में, सहाय बनेगा,
खुशियों की बरखा कराता है यही,
दुखड़ों की बदली हटाता है यही,
एक बार मन से तू ध्याके देख ले ।। १ ।।

प्यारे तू हर घड़ी, उसी का नाम ले,
संकट में ये तेरे, हाथों को थाम ले,
होगा हर घड़ी तेरे पास सांवरा,
फिर तू क्यूं होता हताश बावरा,
चरणों में सिर को झुका के देख ले ।। २ ।।

दयालू है बड़ा, जवाब नहीं है,
बाबा की रहमतों का, हिसाब नहीं है,
बिना बोले दुखड़ों को जानता है ये,
भक्तों को ''हर्ष'' अपना मानता है ये,
एक बार दिल मे बिठा के देख ले ।। ३ ।।

(तर्ज : जिंदगी की ना टूटे...)

जब भी भगतों पे विपदा पड़ी, दौड़ा आया ये श्याम धणी,
सच्चे हृदय से ध्यान धरो-२, टल जायेगी संकट घड़ी ।। टेर ।।

श्याम-बाबा से नेहा लगा, शीश के दानी दाता बड़े,
सोई किस्मत जगा देते ये, इनके चरणों में जो आ पड़े,
इनकी महिमा है, जग में बड़ी... ।। १ ।।

कभी भगतों को भूले नहीं, भूल जाते हम इनको मगर,
खींच लाते किनारे पे ये, नाव मझधार अटके अगर,
बिना पानी के, नैया चली... ।। २ ।।

मुरली वाला दयालू बड़ा, काम भगतों के आये सदा,
सारी दुनिया में डंका बजे, ''हर्ष'' रहमत बरसती सदा,
दर पे लाखों की, बिगड़ी बनी... ।। ३ ।।

(तर्ज : ये माना मेरी जां...)

अगर तुम न होते, दयालू कन्हैया,
बता कैसे होती हिफाजत हमारी,
गरीबों की दुनियां, है आबाद तुमसे,
हमारे दिलों पर हैं, हुकूमत तुम्हारी ।। टेर ।।

तुम्हीं को मनायें, तुम्हीं को रिझायें,
कन्हैया को अपने, दिल में बसायें-२,
हमें न्याय मिलता, सदां दरपे तेरे,
खुली रहती कान्हा, अदालत तुम्हारी ।। १ ।।

कोई विपदा आये, कोई गम सताये,
कन्हैया के दरपे, जाकर सुनाये-२,
सिवा तेरे मोहन, नहीं और दूजा,
सुनता जो हरदम, शिकायत हमारी ।। २ ।।

हमें ना भुलाना, कभी ना रूलाना,
चरणों में ''हर्ष'' को तू, देना ठिकाना-२,
तेरा ही भरोसा, तेरा ही सहारा,
होती रहे हमपे, इनायत तुम्हारी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : हर खुशी हो वहाँ...)

होंठ जब भी खुले, तेरा नाम आ गया,
है दुआ का असर, मेरा श्याम आ गया ।। टेर ।।

याद में अब तलक, दिन गुजारा किये,
रात दिन श्याम को, हम पुकारा किये-२,
दिल में था जो यकीं, मेरे काम आ गया,
है दुआ... ।। १ ।।

इस कदर ना मुझे, तुम रूलाया करो,
अपने बेटे के घर, श्याम आया करो-२,
आज बनके मेरा, मेहमान आ गया,
है दुआ... ।। २ ।।

था भरोसा मुझे, ये जरूर आयेगा,
प्रीत की डोर से, 'हर्ष'' बंध जायेगा-२,
रोते दिल को मेरे, अब आराम आ गया,
है दुआ... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बचपन की मोहब्बत...)

पलकों से उदासी को, जरा दूर भगा दे श्याम,
रोती हुई आँखों को, आकर के हंसा दे श्याम ।। टेर ।।

तेरी याद में ओ कान्हा, मेरी आंखे बरसती हैं,
दीदार कन्हैया का, पाने को तरसती हैं,
आ बहती आंखों को, दर्शन दिखला दे श्याम ।। १ ।।

माना इन आंखों में, आंसू भी जरूरी हैं,
दर्शन के बिना लेकिन, ये आंख अधूरी हैं,
खुशियों के आंसू दे, दुखड़ो के हटा दे श्याम ।। २ ।।

आँखो की पुतली में, तेरा अक्श उभरता है,
आँखों के जरिये तू, इस दिल में उतरता है,
तेरे ''हर्ष'' की आँखों को, ऐसी ना सजा दे श्याम ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मौसम है आशिकानां...)

भगतो को यूं सता ना, ऐ श्याम मुरली वाले,
ऐसे भी तू रूला ना।। टेर ।।

कह दे कि तू कहाँ है, सेवक तरस रहे हैं,
आंखे हमारी खोई, आंसू बरस रहे हैं,
आकर के तू सम्भाले, 'आँसू का क्या ठिकाना'-२ ।। १ ।।

रोते है हम अकेले, आके खबर तू ले ले,
भगतों के दिल से कान्हा, काहे तू ऐसे खेले,
दिन हो गये है जालिम, 'रातें है कातिलाना'-२ ।। २ ।।

करदे दया ओ कान्हां, हमको शरण मे ले ले,
आखिर बता कहाँ तक, कठिनाइयों को झेले,
आजा रे ''हर्ष'' को तू, 'मुखड़ा जरा दिखा ना'-२ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : गम उठाने के लिए...)

सर झुकाने के लिए मैं तो चला आया हूँ,
सांवरे लब पे तेरा नाम लिये आया हूँ ।। टेर ।।

आज तक तुझको ख्यालों में बसा कर रखा,
और मैने तुझे इस दिल में छुपा कर रखा,
तेरा सेवक हूँ मैं ऐ मेरे रंगीले देवा,
तेरी तस्वीर को सीने से लगा कर रखा ।
सर झुकाने... ।। १ ।।

क्या करूं दिल तू मेरा लेके मुकर जाता है,
थोड़ा हंसकर मेरी आंखो में उतर जाता है,
शक्ल फिरती है निगाहों में तेरी प्यारी सी,
मेरे इस दिल में सुलगती कोई चिंगारी सी ।
सर झुकाने... ।। २ ।।

तू बुलायेगा मुझे जब भी चला आऊंगा,
तेरे दर्शन की इन आँखो में उम्मीदें लेकर,
मैंने नींदे करी कुर्बान तेरी चाहत में,
''हर्ष'' जीता रहा यादों का सहारा लेकर ।
सर झुकाने... ।। ३ ।।

(तर्ज : नदिया बहे बहे रे धारा...)

पलके बिछी बिछी रे कान्हा, भगतों का तू मान बढ़ाना,
तुझको आना होगा-२ ।। टेर ।।

चौखट पे भगतों की, आँखे लगी है,
तेरे दरश की बाबा, प्यास जगी है,
बैठे दिवाने तेरी आस लगाये-२,
जल्दी से आजा हमे ऐसे ना रूला ना, तुझको... ।। १ ।।

पहले तरसाना तेरी, रीत पुरानी,
पीछे चुपके से आके, प्रीत निभानी,
बैठे हैं सारे दरबार सजाये-२,
आ जा कन्हैया हमे यूं ना सता ना, तुझको... ।। २ ।।

इतने कठोर हुए, क्यूं मेरे दाता,
''हर्ष'' विरह में तेरे, आँसू बहाता,
बैठे हैं मन मे तेरी मूरत बसाये-२,
भक्तों की आके कान्हां आस पुरा ना, तुझको... ।। ३ ।।

(तर्ज : आपके पहलू में आकर...)

श्याम तेरे दर पे आकर रो पड़ा-२,
दिल के सब दुखड़े सुनाकर रो पड़ा ।। टेर ।।

बेबसी में घिर गया अब तो हे नाथ-२,
तज दिया अपनों ने जब मेरा ही साथ,
सामने तुझको मैं पाकर रो पड़ा ।। १ ।।

अब तलक आँसू छुपाता मैं रहा-२,
गम को सीने में दबाकर सह रहा,
दास्तां गम की सुना कर रो पड़ा ।। २ ।।

कुछ सुझाई अब मुझे पड़ता नहीं-२,
साँवरे बिन अब ये दिल लगता नहीं,
''हर्ष'' दर पे सर झुका कर रो पड़ा ।। ३ ।।

(तर्ज : छोड़ गये बालम...)

हार गया बाबा, तेरे प्यार मे सब कुछ हार गया,
वार दिया बाबा, मैने तन मन तुझपे वार दिया ।। टेर ।।

दूर से तू इतराये छलिये, क्यूं ऐसे मुस्काये,
देख के तुझको अंखिया मेरी, झर झर नीर बहाये,
हाय झर झर नीर बहाये ।। १ ।।

दिल को लगाया तुझसे मोहन, तू जाने मैं जांनू,
तोड़ के सारे माया बंधन, तुझको अपना मानूं,
मैं तुझको अपना मांनू ।। २ ।।

हर पल तेरा ध्यान धरुँ मैं, तुझसे करुँ अरदास,
''हर्ष'' को लेले शरण में अपनी, कर दे पूरी आस,
मेरी कर दे पूरी आस... ।। ३ ।।

(तर्ज : मै तो तुम संग प्रीत लगाके...)

मै तो कबसे नाम पुकारूँ, आजा मेरे घनश्याम,
पल पल छिन छिन राह निहारूँ, आजा मेरे घनश्याम ।। टेर ।।

बैरन अंखियाँ नीर बहाये,
याद में तेरी भर भर आये-२,
कब आओगे दीन के घर में, खाटू वाले श्याम ।। १ ।।

बिन देखे तोहे चैन न आये,
बिरहा की अग्नि जियरा जलाये-२,
रूठ गये हो भगतो से क्यूँ, लीले वाले श्याम ।। २ ।।

सो गई खुशियाँ और गम जागे,
लाख जतन करूँ चित नहीं लागे-२,
''हर्ष'' से आकर प्रीत निभाजा, मुरली वाले श्याम ।। ३ ।।

(तर्ज : बदली से निकला है चांद...)

ग्यारस की आई है रे रात, ओ खाटूवाले,
श्याम मेरे घर आजा, घर आजा ।। टेर ।।

ज्योत जलाकर, तुझको मनाये,
गा गा भजन बाबा, तुझको रिझायें,
सुनके पुकार लीले,
चढ़के तू आजा हो , चढ़के तू आजा ।। १ ।।

पलकें बिछाकर, तुझको बुलायें,
बैठे हैं दरपे, आस लगाये,
आकर ओ श्याम तेरा,
मुखड़ा दिखा जा हो, मुखड़ा दिखा जा ।। २ ।।

दुखड़े ये दिल के, किसको सुनाये,
तू ना सुने तो, किस दर जायें,
''हर्ष'' तू आके सारे,
दुखड़े मिटा जा हो, दुखड़े मिटा जा ।। ३ ।।

(तर्ज : मै तो कबसे खड़ी इस पार...)

मैं तो कबसे करूं इंतजार, ओ छलिये,
तुझको रही मैं पुकार, आजा रे SSS निर्मोही ।। टेर ।।

मैने तुम संग प्रीत लगाई, भूल गये क्यूं ओ हरजाई,
तोसे मिलन की आस लगाई,ओSSSआजा रे SSS
मैं तो कबसे... ।। १ ।।

सांसो का हर तार पुकारे, दिल की धड़कन श्याम उचारे,
आ मिल मेरे प्राण पिया रे, ओSSSआजा रे SSS
मैं तो कबसे... ।। २ ।।

मैं छलिये हूँ तेरी दासी, जन्मों जनम की हूँ मैं प्यासी,
बिन तेरे चंहु और उदासी, ओSSSआजा रे SSS
मैं तो कबसे... ।। ३ ।।

तू छलिया है छलना जाने, प्रेम की भाषा क्या पहचाने,
''हर्ष'' तू आजा प्रीत निभाने, ओSSS आजा रेSSS
मै तो कबसे.... ।। ४ ।।

(तर्ज : औलाद वालो फूलो ...)

दीदार तेरा मुझको मिले-२,
लेकर उम्मीद बाबा दर तेरे आया
दीदार तेरा मुझको मिले ।। टेर ।।

बड़ी दूर से चल कर आया,
तेरे दरश की आश मै लाया,
कितनो की तूने मुरादें पूरी कर दी,
दीदार... ।। १ ।।

सारे जगत में चर्चे है भारी,
भगतों की तूने बिगड़ी सँवारी,
मैने तो बस ये अरजी लगायी,
दीदार... ।। २ ।।

कहते है जो भी दर तेरे आता,
अपने भगत की सुनते हो दाता,
''हर्ष'' भी इतनी उम्मीद ले के आया,
दीदार... ।। ३ ।।

(तर्ज : साजन जी घर आये...)

तेरे दर्शन की तो हमने आस लगाई,
तूने अब सुनली ओ मेरे श्याम कन्हाई,
तेरे दिवाने तो नाचे हैं छम छम-छम छम,
सांवरिया घर आया घर में खुशियां लाया ।। टेर ।।

खाटूवाला सांवरा, सेवक के घर आ गया,
भोले भाले भगतों का, आके मान बढ़ा गया,
अपने सेवक की, तू करता सदा सहाई,
तूने अब सुनली... ।। १ ।।

आओ भगतो मिल करके, इनको खूब सजायें हम,
मीठे-मीठे भजनों से, इनको आज रिझायें हम,
पूरी वो कर दी, जो मैंने आस लगाई,
तूने अब सुनली... ।। २ ।।

माखन मिश्री-मेवों का, भगतो भोग लगाओ तुम,
''हर्ष'' कन्हैया आया है, पलकें जरा बिछाओ तुम,
तेरे स्वागत में, नाचे है लोग लुगाई,
तूने अब सुनली... ।। ३ ।।

(तर्ज : जोगी तेरे द्वार का, भूखा तेरे प्यार का...)

आया तेरे द्वार पे, दुखड़ों से हार के,
जग ने मुझे दी रूसवाई, दर दर की ठोकर खाई,
आकर संभाल रे ओ ऽऽऽ,
मेरे श्याम, मेरे श्याम, ओ मेरे श्याम ।। टेर ।।

अपना बनाके मुझे, दुनिया ने लूटा है,
तेरे पास आके जाना, सारा जग झूठा है,
जिसको भी अपना माना, निकला वो ही बेगाना,
आकर संभाल रे... ।। १ ।।

सच्चा दरबार तेरा, जो भी दरपे आता है,
भगतों के खाटू वाले, दुखड़े तू मिटाता है,
हारे के साथी आजा, निर्बल का साथ निभा जा,
आकर संभाल रे... ।। २ ।।

थाम ले तू हाथ मेरा, डर मोहे लागे है,
सूझे न रस्ता कोई, अंधकार आगे है,
''हर्ष'' की सुनले कान्हा, बेटे को यूं बिसरा ना,
आकर संभाल रे... ।। ३ ।।

(तर्ज : फूल तुम्हे भेजा है...)

दास खड़ा है दरपे तेरे, मनवा मेरा आकुल है,
दर्शन दे दो मुरली वाले, तेरे दरश को व्याकुल है ।। टेर ।।

अन्तर्मन से ध्यान धरूँ मैं, अरजी तुम स्वीकार करो,
दिव्य रूप का दर्श दिखाकर, श्याम मेरा उद्धार करो,
आस भगत की टूट न जाये, आज दया करतार करो ।
दास खड़ा... ।। १ ।।

मस्तक टेके करूं याचना, चरणों की रज दे देना,
मधुर कंठ से करूं वंदना, शरण तुम्हारी ले लेना,
हाथ कन्हैया सिरपे धरके, दान दया का दे देना ।
दास खड़ा... ।। २ ।।

''हर्ष'' सुना है निज भगतों की, हरदम तू सुनता आया,
मुझसे कैसी खता हुई जो, मुझको इतना तरसाया,
आस का दीपक बुझ जायेगा, तूने गर जो बिसराया ।
दास खड़ा... ।। ३ ।।

(तर्ज : मातारानी फल देगी...)

जिनको बुलाये लखदातार,
वो फिर नाचे बीच बाजार ।। टेर ।।

फागुन में जो रंग बरसे,
जाने को ये मन तरसे-२,
आ जाये जिसका समाचार ।। १ ।।

जिसका बुलावा आता है,
श्याम मगन हो जाता है-२,
भूल के अपना कारोबार ।। २ ।।

ले निशान दर वो जायें,
मन इच्छा फल वो पाये,
झोली भर देता सरकार ।। ३ ।।

''हर्ष'' जो मन से ध्यान धरे,
खाटू को प्रस्थान करे-२,
उनको हो जाता दीदार ।। ४ ।।

(तर्ज : सब कुछ सीखा हमने...)

तेरे दर पे आया मैं बनके भिखारी,
दे दे या ठुकरा दे ये मरजी तुम्हारी ।। टेर ।।

दुनियाँ ने मुझको बिसराया,
आखिर तेरे द्वारे आया,
अपना ले हे देव दयालु,
चरणों में तेरे शीश झुकाया,
हारे के हो साथी ये चर्चा है भारी ।। १ ।।

बनती विगड़ती किस्मत देखी,
मोहमाया कीं फितरत देखी,
गर्दिश में जब आन पड़ा तो,
अपनों ही की नफरत देखी,
छूटा हर सहारा शरण ली तुम्हारी ।। २ ।।

दीप दया का आज जलादे,
दुखियों के दुख दूर भगा दे,
''हर्ष'' को लेले शरण में तेरी,
माया के सब फंद छुड़ादे,
मैंने ज्योति जलाई है दिल में तुम्हारी ।। ३ ।।

(तर्ज : गंगा मैया में जब तक...)

कान्हा ओ मेरे कान्हा-२,
मेरे कान्हा मैं तेरा दिवाना बना,
तेरे चरणों में मेरा ठिकाना बना ।। टेर ।।

जब से तेरी शरण में मैं आया,
सारी दुनियां को मैंने भुलाया,
तजके सारा जंहा, अब मैं जाऊं कहां,
कौन मेरा है अब तो तुम्हारे बिना-२ ।। १ ।।

एक पल भी ना तुझको भूलाऊं,
अपनी पलकों पे तुझको बिठाऊं,
तुमको मेरी कसम, करना इतना रहम,
भूल से भी ना मुझको भुलाना बाबा-२ ।। २ ।।

श्याम चरणों में मुझको बिठालो,
वरना दुनियां से मुझको उठालो,
''हर्ष'' कहता तुझे, अपना ले मुझे,
जी सकूंगा ना इकपल तुम्हारे बिना-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : यूं ही तुम मुझसे बात...)

खाटू नगरी में वास करता है, मेरा बाबा बड़ा निराला है,
अपने भगतों के काम आता है, सारे कष्टों को हरने वाला है ।।

रेत की वादियों में बाबा का, एक सुंदर सा धाम है न्यारा,
संगेमरमर के पत्थरों से बना, देवरा मेरे श्याम का प्यारा,
ग्यारस की रात जगे, बारस को धोक लगे,
हारे का साथ देने वाला है ।। खाटू नगरी में... ।। १ ।।

रात दिन दर पे मेरे बाबा के, लाखों दीदार करने जाते हैं,
नाम ले ले के दर पे रोते हैं, अपने दुखड़े सुना के जाते हैं,
भक्तों का काम करे, झोलियां सबकी भरे,
भक्तों पे मेहर करने वाला है ।। खाटू नगरी में... ।। २ ।।

मेरा बाबा है दया की मूरत, खाटूधाम एक बार जाओ तुम,
तेरा बेड़ा ये पार कर देगा, जाके चरणों से लिपट जाओ तुम,
''हर्ष'' आंगन में तेरे, पल में खुशियां ये भरे,
सबका मंगल ये करने वाला है ।। खाटू नगरी में...।। ३ ।।

(तर्ज : मै जट यमला पगला...)

मुझे खाटू नगरिया बुलाले ओ बाबा, चरणों में तेरे बिठाले,
कि मैं तेरा ध्यान धरता हूँ, तेरा गुणगान करता हूँ ।। टेर ।।

रात रात भर मुझको नीदं न आती है,
रह रह कर मुझे तेरी याद सताती है,
तेरे जैसा सेठ दूजा देखा ना सुना है,
जिसने भी ध्याया तुझे दुखड़ा टला है,
मुझसे भी प्रीत ''निभाले''-३, मुझे खाटू... ।। १ ।।

अपने भगत को ऐसे क्यूं सताते हो,
तरसाओ ना बोलो काहे रूलाते हो,
तेरा ही भरोसा बाबा तेरा ही सहारा है,
नंगे पैरों दौड़ा आया जिसने पुकारा है,
चरणों का दास ''बनाले''-३, मुझे खाटू... ।। २ ।।

श्याम सलोने ''हर्ष'' की अर्जी सुन लेना,
दर पे बुलाके मेरी झोली भर देना,
गम का सताया हुआ और कहां जाऊँ मैं,
सब हैं पराये तुझे अपना ही पाऊँ मैं,
दुखड़ो से आके ''बचाले''-३, मुझे खाटू... ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरी गलियों मे ना...)

तेरी महिमा को मैं, गाऊंगा सदा, ओ श्याम मेरे,
तेरे दर्शन को मैं, आऊंगा सदा, ओ श्याम मेरे ।। टेर ।।

दिल की हर धड़कन, तुम्हारे गीत गाती है,
मुझको रह रह कर, तुम्हारी याद आती है,
ख्वाबों में तुझको मैं, देखूगां सदा, ओ श्याम मेरे,
तेरे महिमा... ।। १ ।।

मैं तुझको अपना, समझ के दरपे आया हूँ,
केवल अंसुओं की, सौगातें लेके आया हूँ,
पलकों पे अपनी मैं, रखूंगा सदा, ओ श्याम मेरे,
तेरे महिमा... ।। २ ।।

ओ मेरे कान्हा, शरण में ''हर्ष'' को ले ले ना,
अपने चरणों की, जरा सी धूली दे दे ना,
ह्रदय से अपने मैं, चाहूँगा सदा, ओ श्याम मेरे
तेरे महिमा... ।। ३ ।।

(तर्ज : संसार है इक नदिया...)

स्वीकार हमें करले , हम दुखड़ो के मारे है,
तू कहदे कहाँ जायें, बस तेरे सहारे है ।। टेर ।।

जो दर पे तेरे गया, सम्मान दिया तूने,
बिन बोले कष्टों को, 'पहचान लिया तूने'-२,
तू अन्तर्यामी है, हम मूरख सारे है ।
तू कहदे... ।। १ ।।

धन दौलत की हमको, परवाह नही दाता,
चरणो की धूल मिले, 'बस चाह यही बाबा'-२,
दर से ना ठुकराना, तेरी आँख के तारे है ।
तू कहदे... ।। २ ।।

जिस ओर नजर फेरूँ, बस तूही नजर आये,
अब छोड़ के दर तेरा, 'ये ''हर्ष'' किधर जाये'-२,
आ हमको माफी दे, हम पापी सारे हैं ।
तू कहदे... ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ दुनिया के रखवाले...)

ओ चक्र सुदर्शन वाले, 'मेरी लाज तू आ के बचाले'-२ ।।

हार रहे पाण्डव पुत्रों ने, मेरा ही दांव लगाया,
दुर्योधन ने धोखा देकर, जूए में आज हराया,
ये कैसा संकट आया, किस्मत मेरी आज है फूटी,
तुझ बिन कौन सम्भाले, ओ चक्र... ।। १ ।।

खींच रहा साड़ी का पल्लू, दुस्साशन अभिमानी,
लुटने वाली अस्मत मेरी, तुमको आज बचानी,
नैनों से बरसे पानी, लाज से मैं तो मर-मर जाऊँ,
अब तू चीर बढ़ा दे, ओ चक्र... ।। २ ।।

मैं हूँ उदास और चुप है सारे, बैठे हैं मोहे हारे,
मैं अबला हूँ, लाज की मारी, ओ मेरे बनवारी,
अब देर ना कर गिरधारी, छोड़ के सब कुछ जल्दी आजा,
आकर मोहे बचाले, ओ चक्र... ।। ३ ।।

करूण पुकार सुनी बहना की, झट तू चीर बढ़ाया,
कौरव थक कर चूर हो गये, लाज को तूने बचाया,
है अद्‌भुत तेरी माया, जब जब होती धर्म की हानी,
''हर्ष'' तू तुरन्त पधारे, ओ चक्र... ।। ४ ।।

(तर्ज : नफरत की दुनिया...)

किस्मत का मारा हूँ सांवरे,
प्यार की थोड़ी सी, झलक दिखा मेरे श्याम,
सब झूठे रिश्तों को छोड़ के,
तेरी भगती की, अलख जगा मेरे श्याम ।। टेर ।।

मेरी जिंदगी में श्याम, धोखे ही धोखे हैं,
बरबादियों के पल, आते ही रहते हैं,
अब हार के तेरी शरण मैं, लेने आया हूँ,
आज मुझे भी थाम... ।। १ ।।

सब जानकर भी तू, चुपचाप बैठा है,
कहदे कि तेरा ये, इन्साफ कैसा है,
अब आज ना जाऊं डालदे, मेरी झोली मैं,
भीख दया की श्याम... ।। २ ।।

अब तो सिवा तेरे, कोई चाह नहीं मुझको,
दुनिया की अब कुछ भी, परवाह नहीं मुझको,
अब चौखट पे तेरी ''हर्ष'' की, बीते रे कान्हा,
जीवन की ये शाम... ।। ३ ।।

(तर्ज : ऐ मेरे प्यारे वतन...)

ऐ मेरे खाटू के श्याम, ध्याऊँ मैं तुम्हें सुबह-शाम,
तुझको लाखों प्रणाम,
मैं तो तेरा दास हूँ, रखना तेरे पास तू, लेऊँ तेरा नाम ।।

अब तलक भटका हूँ मैं, और न भटका मुझे,
गिर के उठना चाहूँ मैं, चलना सिखला दे मुझे,
तुझसे इतनी विनती मेरी, आके गिरते को तू थाम,
तुझको लाखों प्रणाम ।। १ ।।

तेरे दर पे जो गया, तेरा बन करके रहा,
छोड़ के तुझको बता, अब भला जाऊं कहां,
तुझसे अच्छा इस जहां में, कोई ना लगता है श्याम,
तुझको लाखों प्रणाम ।। २ ।।

नित तेरा वंदन करुं, ऐसा ''हर्ष'' को वर तू दे,
हर घड़ी दर्शन करूं, मुझको ऐसा घर तू दे,
मेरे घर के सामने हो, तेरा मंदिर मेरे श्याम,
तुझको लाखों प्रणाम ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना...)

ओ जाने वाले सांवरे से जाके कहना,
दिन-रात तेरी याद में रोए दिवाना ।। टेर ।।

गिन गिन के तेरी आस में मैं दिन ये गुजारूँ,
पथरा गई है आँख तेरी राह मैं निहारूँ,
ये हाल मेरे दिल का तू जाके बताना ।। ओ जाने वाले... ।।

घुट घुट के तेरी याद मे ऐ सांवरे मैं रोऊं,
दिल में पड़े हैं छाले किसे जाके मैं दिखाऊँ,
जो दिल में लगी आग आके तू बुझाना ।। ओ जाने वाले... ।।

किस्मत में क्या लिखा नहीं ये प्यार तेरा पाये,
कब आयेगी वो शुभ घड़ी जो द्वार तू बुलाये,
गर मुझसे खता हो गई उसको भुलाना ।। ओ जाने वाले... ।।

चाह कर भी तेरे दरपे बाबा क्यूँ ना जा मैं पाऊँ,
कर दे जरा इशारा बाबा दौड़ के मैं आऊँ,
ऐ श्याम तेरे ''हर्ष'' को दरपे बुलाना ।। ओ जाने वाले... ।।

(तर्ज : कदे आँख फड़के कदे आवे हिचकी...)

मेरा नैण बरसे, लागी आंसू री झड़ी-२,
तेरे टाबरिये ने कान्हुड़ा सम्भाल तो ले,
आके आंख्या रा आँसुड़ाँ कान्हा थाम तो ले ।। टेर ।।

थारे संग प्रीत कान्हा, लागी बड़ी जोर की,
हिवड़े में म्हारे बसी, छवि चित चोर की,
थोड़ी पलक्यां उघाड़ म्हाने देख तो ले ।। १ ।।

जोर सूं तूं म्हाने बांध्यो, कांई प्रेम डोर सूं,
भगतां ने आंसु देकर, हांसे जोर जोर सूं,
प्रेम भगतां रो ताखड़ी में तोल तो ले ।। २ ।।

तू ही बता रोज रोज, रोणो चोखि बात है,
तेरे बिना ''हर्ष'' दिन, लागे काली रात है,
मैं बाट जोऊं आणे को तू नाम तो ले ।। ३ ।।

(राग रचयिता : राज कुमार जोशी)

कान्हुड़ा-म्हारी, सुणोला कद बाबा-२,
कोई भूल चूक हो थे माफ करज्यों,
थारे मनड़े ने थे साफ करज्यों ।। टेर ।।

सुण सुण रे धणिया, खड़्यां हां थारी आस लगायां,
थारे चरणा माही, पड़्यां हां म्हे तो शीश नवायां,
नैणा रा आँसू बरसे-२, सुणल्यो पुकारजी,... ।। १ ।।

म्हारो थां बिन बाबा, नहीं जी कोई एक सहारो,
भगतां रा आकर, थे ही तो सब कारज सारो,
कद सूं उडिके बाबा-२, टाबरिया बाट जी,... ।। २ ।।

म्हारी थाम आँगली, बाबा जी म्हाने धीर बँधाओ,
आँखडल्या तरसे, बाबाजी म्हाने दर्श दिखाओ,
''हर्ष'' पुराओ म्हारे-२, मनड़े री आस जी,... ।। ३ ।।

(तर्ज : ओहरे ताल मिले नदि के जल मे...)

दोहा : बालू माटी की धरती पर, देखे हमने अजब नजारे ।
कण कण में सब आन बसे हैं, इस धरती पर देव हमारे ।।
अपनी अपनी भूमि सबकी, अपनी अपनी महिमा है ।
कुदरत ने कर दिया यहां पर, देखो अजब करिश्मा है ।।

म्हारो श्याम बसे खाटू के मांही, सालासर में बजरंगी,
राणीसती राज करे जी, झुंझनू के माय ।। टेर ।।

गौरी सुत देव गजानन्द, देवां रा सिरमौर है, देवां रा सिरमौर है,
मरुधर में धाम बणायो, प्यारो रणथम्भौर है, प्यारो रणथम्भौर है,
ओ भक्तों रे, मरुधर में धाम बणायो, प्यारो रणथम्भौर है,
गणपत ने पूजे दुनिया, घर घर माय, म्हारो श्याम... ।। १ ।।

पर्वत पे साकम्बरी मां, गोरिया में जीण धाम, गोरिया में जीण धाम,
दो जांटी बालाजी को, प्यारो सो एक धाम , प्यारो सो एक धाम,
ओ भक्तों रे, दो जांटी बालाजी को, प्यारो सो एक धाम,
अंजनी मां को लाल बिराजे, मेहन्दीपुर माय, म्हारो श्याम... ।। २ ।।

(२)

रुणीचे रामदेव जी, पीरां का पीर है, पीरां का पीर है,
पुनरासर में बजरंगी, वीरां का वीर है, वीरां का वीर है,
ओ सुणज्यो रे, पुनरासर में बजरंगी, वीरा का वीर है,
करणी माता राज करे है, देश नोक-माय, म्हारो श्याम... ।। ३ ।।

गलता जी पुण्य तीर्थ है, पुष्कर में ब्रह्माधाम, पुस्कर में ब्रह्माधाम,
प्यारी राधा के सागे, जयपुर में राधेश्याम, जयपुर में राधेश्याम,
ओ कान्हा रे, प्यारी राधा के सागे, जयपुर में राधेश्याम,
घड़ी-घड़ी रास रचावे, बालू रेत-माय, म्हारो श्याम... ।। ४ ।।

साँवलियों सेठ साँवरो, मण्डपिया विराजे है, मण्डपिया विराजे है,
श्री नाथ को नाथद्वारा, मंदरियो साजे है, मंदरियो साजे है,
ओ भक्तो रे, श्री नाथ को नाथद्वारा, मंदरियो साजे है,
कुदरत को देख नजारो, कण-कण माय, म्हारो श्याम... ।। ५ ।।

धोरां री धरती माही, सतियां को राज है, सतियां को राज है,
खेमी-धोली-ढांढण-बरजी, राखे मां लाज है, राखे मां लाज है,
ओ मैया रे, खेमी-धोली-ढांढण-बरजी, राखे मां लाज है,
''हर्ष'' कहवे देव है सारा, राजस्थान माय, म्हारो श्याम... ।। ६ ।।

(तर्ज : सारे जहाँ की रक्षा श्री राम जी ...)

सारे जहाँ से अच्छा, उसका नसीब है,
जो खाटूवाले श्याम के, जितना करीब है ।। टेर ।।

श्यामजी से जोड़ लेता दिल का जो रिश्ता,
मुश्किल मे फिर वो शख्श कभी पड़ नहीं सकता,
दुनिया मे जिसका कोई मददगार नहीं है,
श्री श्याम के दर पे उसे इन्कार नहीं है,
भगतों को सदा देता है चरणों में ठिकाना,
हारे का साथी है ये ''जानता है जमाना''-३,
मन से जो इसका ध्यान धरे, ये उसका रकीब है-२,
इस लीले घोड़े वाले की माया अजीब है-३ ।। १ ।।

जिनके दिलों के तार इसके साथ जुड़ गये,
खाटू की ओर उनके कदम खुद ही मुड़ गये,
इससे मिलन की चाह में खोये से जो रहते,
जग की उन्हें परवाह नहीं वो चैन से सोते,

(२)

हाथों से दुखड़ों की लकीरें मेट देता है,
भगतों को अपने दिल में ''ये समेट लेता है''-३,
दरबार जो इकबर गया वो खुश नसीब है-२,
जो दरपे इसके जा न सका बदनसीब है-३, ।। २ ।।

भगतों के सारे बिगड़े हुए काम बनाये,
बेटों की रक्षा हेतु बाबा दौड़ के आये,
बिन बोले सारे ही दुखों को जानता है ये,
सेवक को अपने दिल का टुकड़ा मानता है ये,
जिसने भी बयां दरपे अपना हाल कर दिया,
उसको तो सांवरे ने 'मालामाल कर दिया'-३,
शहनशाहों का है शहनशाह, रूतबा अजीब है-२,
राजा भी 'हर्ष' श्याम के दर पे गरीब है-३ ।। ३ ।।

(तर्ज : वो दिल कहाँ से लाऊँ...)

कैसे मै तुझको पाऊं, मुझे वो हुनर बता दे,
भटके हुए को बाबा, जरा रास्ता दिखा दे ।। टेर ।।

आया मैं दर पे तेरे, दुनियां से हार कर के,
वर्षो से हूं मैं प्यासा, मुझको तू प्यार कर ले,
दिल ने तुझे पुकारा, मुझे बंदगी सिखा दे ।। १ ।।

मैने तुझसे दिल लगाया, क्या यही मेरी खता है,
तेरे द्वारे क्यूं मैं आया, क्या तुझे नही पता है,
जरा सिरपे हाथ रखदे, अपना मुझे बना ले ।। २ ।।

गिरता रहा हूं हरदम, अब मैं भी उठना चाहूं,
मुझे थाम लो कन्हैया, कहीं और गिर न जाऊं,
तेरे ''हर्ष'' को ओ कान्हा, चलना जरा सिखा दे ।। ३ ।।

(तर्ज : दुनिया चले ना श्रीराम...)

हमको तुम्हारा सहारा मिले,
इतना तो करदे गुजारा चले ।। टेर ।।

तूने ये चोचं दी, चुग्गा भी दे,
बच्चों पे बाबा, रहम कर दे,
तेरी दया से तेरे बच्चे पले ।। १ ।।

दाता मिटादे तू, पेट की अगन,
करता रहूँगा, तुम्हारा भजन,
तेरी दया से मेरा चूल्हा जले ।। २ ।।

तेरे भजन से, भोजन मिले,
रखना दया जो मेरा, चौका चले,
तेरी दया से सारी विपदा टले ।। ३ ।।

दीनों का नाथ, तू कहाता है,
दीनों को फिर, क्यूं रूलाता है,
तेरी दया से ‘‘हर्ष’’ फूले फले ।। ४ ।।

‘‘ जन्माष्टमी’’

(तर्ज : उठे तो बोले राम...)

ख़ुशियां की घड़ियां आई, थे बांटों आज बधाई-२,
यशुमति के घर में जनम लियो जी देखो कृष्ण कन्हाई ।।

भगतो रे चालो, थाल बजावां जी,
सगला मिलके झूंमा, नांचां और गावां जी,
गोकुल में मस्ती छाई, कोई बाजे रे शहनाई ।। यशुमति... ।।

आंगणिये माही, पलणो घलांवा जी,
दे दे करके झाला, घनश्याम झुलावां जी,
रूत नाचण की है आई, और नाचे लोग लुगाई ।। यशुमति... ।।

चांदी रा घुंघरू, पगल्यां पहरावां जी,
कोई सोने रा कंगन, हाथां पहरावां जी,
छोटी सो श्याम कन्हाई, निरखण चालो रे भाई ।। यशुमति... ।।

या जनम अष्टमी, सगला मनांवा जी,
चालो व्रत ने तोड़ां, ‘‘हर्ष’’ डट के खावां जी,
पापड़, फलहार, मिठाई, खाओ रे लोग लुगाई ।। यशुमति... ।।

(तर्ज : लीला रे म्हाने श्याम...)

भक्तों रे चालो श्याम की नगरीया-२,
हाथा माहीं निशान उठा, श्याम धणी को ध्यान लगा।। टेर ।।

रंग रंगीलो फागण आयो, श्याम धणी तनै आज बुलायो,
बेगो बेगों खाटू जा, श्याम धणी... ।। १ ।।

रंग अबीर से भरल्यो झोली, बाबा से जा खेलो होली,
सांवरे के जाके गुलाल लगा, श्याम धणी... ।। २ ।।

केशर की भर के पिचकारी, रंग दीजे म्हारो श्याम बिहारी,
मेले माही धूम मचा, श्याम धणी... ।। ३ ।।

श्याम धणी के पैदल चालों, पत राखे पत राखण हालो,
'हर्ष' ने भी सागे ले जा, श्याम धणी... ।। ४ ।।

(तर्ज : अफसाना लिख रही हूँ...)

टाबरिया तुझे पुकारे, मेरे श्याम आ जाओ,
भटके हुओं को थाम लो, और राह दिखा जाओ-२ ।। टेर ।।

पलकें बिछाये बैठे है, ''तेरे दरश को श्याम''-२,
नैनों की प्यास बुझा दे, वो रूप दिखा जाओ ।।

बंशी की धुन तो कान्हा, ''लगती बड़ी प्यारी''-२,
कानों में अमृत घोले, वो तान सुना जाओ ।।

आपस में बैर करते हैं, ''जो तेरे नाम पर''-२,
वे प्यार का मतलब जाने, वो सबक सिखा जाओ ।।

आपस की रंजिशो में, ''तुझको भुला बैठे''-२,
हर सांस से मोहन निकले, वो पाठ पढ़ा जाओ ।।

ये ''हर्ष'' सोचता है, ''कान्हा उसी का है''-२,
ऐ श्याम हो तुमतो सबके, ये बात बता जाओ ।।

‘‘श्री मद्भागवत गीता भजन’’

(तर्ज : ताऊ बांधले सामान...)

भगवत गीता की जिनके घर, चर्चा होती है-२,
घर में आते है घनश्याम, पल में किरपा होती है ।। टेर ।।

श्रीमद् भगवत का अपने घर, जो भी पाठ कराते,
अंधकार सब दूर हटे वो, घर रौशन हो जाते,
श्याम सुधा रस की घर में, जब बरखा होती है-२... ।। १ ।।

बड़े नसीबों वाले हैं वो, गीता पाठ जो करते,
ज्ञान की गंगा में वो बहते, जो भी इसको सुनते,
गीता पढ़ने से मन में, शीतलता होती है-२... ।। २ ।।

श्रीमद् भगवत गीता हमको, कर्म का पाठ पढ़ाती,
कर्म किये जा निष्कर्मी को, ये ही ज्ञान कराती,
‘‘हर्ष’’ हमें कर्मठ बनने की, शिक्षा देती है-२... ।। ३ ।।

(तर्ज : ताऊ बाँधले समान...)

छोटा छोटा हाथां से निशान चढ़ाऊँगा-२,
ओ मम्मी, करदे तू तैयार मैं तो खाटू जाऊँगा ।। टेर ।।

गुल्लक तोड़के पीसा काड्या, रेशमी कपड़ो ल्यायो,
छोटी सी इक डांडी लेकर, एक निशान बणायो,
रिगंस सू डैडी के सागे पैदल जाऊँगा-२ ।। १ ।।

भांत भांत का रंग मंगादे, भरस्युं मैं पिचकारी,
फागण के मेले में जाके, रंगस्यु श्याम बिहारी,
सांवरिये के गालां उपर रंग लगाऊगाँ-२ ।। २ ।।

चिंकी-पिंकी-चुन्नू-मुन्नू, सगला खाटू जावे,
मेरी भी मां करदे त्यारी, मेरो जी ललचावे,
यार भायला के सागे जा, मौज उड़ाऊगाँ-२ ।। ३ ।।

पाछो आकर करूँ पढ़ाई, चोखा नम्बर ल्याऊँ,
मेरिट लिस्ट में अबकी मम्मी, मेरो नाम लिखाऊँ,
‘‘हर्ष’’ सांवरे की किरपा सूं अव्वल आऊँगा-२ ।। ४ ।।

(तर्ज : मोरिया...)

दोहा : चिट्ठी को तो नाही भरोसो सेठ सांवरा म्हाने ।
म्हारे मन का भाव जाणियो आज लिखावां थाने ।।

डाकिया, लिखदे परवानो म्हारे श्याम ने,
ओ म्हाने थारे बिना, ओल्यूं आवे सेठ सांवरा,
लिखदे परवानो म्हारे श्याम ने ।। टेर ।।

पहल्यां तू लिखदे जय श्री श्यामजी,
म्हे तो चरणां माही, शीश झुकावां सेठ सांवरा, लिखदे...।।

हिवड़े बस्यो रे म्हारे सांवरो,
ओ म्हाने बाबा थारी, याद सतावे सेठ सांवरा, लिखदे...।।

लिखदे बाबा थे म्हाने देखल्यो,
ओ थारे भगतां सूं, कैयां रुठ्या सेठ सांवरा, लिखदे...।।

म्हारी बाबा सूं लिखदे विनती,
चिट्ठी पाछी दीज्यो, म्हाने भी थे सेठ सांवरा, लिखदे...।।

लिखदे रे म्हारो बुरो हाल है,
''हर्ष'' भगतां रा, कष्ट मिटाओ सेठ सांवरा, लिखदे...।।

(तर्ज : छोटी छोटी गईया...)

कान्हा : मैया मोहे लादे, छोटी सी दुल्हन-२,
ब्याह करा दे तेरो, छोटो सो ललन ।। टेर ।।

माँ : पाँच बरस को, मेरो तू ललन-२,
कहां से लाऊं बता, छोटी सी दुल्हन ।। १ ।।

कान्हा : छोटी सी लली माँ, रिझावे मेरो मन-२,
राधा है नाम, वृषभान के अंगन ।। २ ।।

माँ : गोरी गोरी राधिका, कारो तू ललन-२,
कैसे कराऊं तेरो, राधा से मिलन ।। ३ ।।

कान्हा : सेवा माँ करेगी वो, दबायेगी चरण-२,
नेग पठा दे मैया, करके जतन ।। ४ ।।

माँ : लेवे माँ बलइयां, होके रे मगन-२,
लागे नजरिया ना, किसी की ललन ।। ५ ।।

कान्हा : हार गयो जब वो, करके जतन-२,
रूठ गयो री बांको, मैया को ललन ।। ६ ।।

माँ : तेरे तो है ललना, खेलन के दिन-२,
हो जा बड़ो ''हर्ष'', ला दूंगी दुल्हन ।। ७ ।।

(तर्ज : मेरा हाथ पकड़ले रे)

मेरी आंख बरसती है, बाबा अब तक क्यूं नही आये,
मोटे-२ आँसू, गम के आँसू, नैन मेरे बरसाये रे ।। टेर ।।

भगतों को इतना, सताते नही है,
अपनो को ऐसे, रूलाते नहीं है,
जल्दी से आजा, धीर बंधाजा-२,
क्यूं इतना तरसाये रे ।। १ ।।

बिना देखे तुझको, नहीं चैन आये,
तेरी याद हमको, पल पल सताये,
श्याम सता ना, ऐसे रूला ना-२,
आँखे भर-भर आये रे ।। २ ।।

अगर मेरी अरजी, अब ना सुनोगे,
मेरे नैन यूं ही, बरसते रहेंगे,
''हर्ष'' तू आजा, आके हसाँ जा,
धीरज छूटा जाए रे ।। ३ ।।

''मोर पाँखुड़ी''
(तर्ज : दानी होकर क्यूं चुप बैठा...)

तू ने कौन सा पुण्य कमाया, श्याम शीश पर सोहे रे,
हे मोर पाँखुड़ी, भगतों को इर्ष्या होवे रे ।। टेर ।।

तेरा नसीबा बहुत बड़ा है, बाबा ने अपनाया,
सांवरिये के मन तू भाई, अपने सिरपे बिठाया,
कान्हुड़े के मुकुट में साजे, मस्तक उपर सोहे रे ।
हे मोर पाँखुड़ी... ।। १ ।।

हमसे कैसी भूल हुई जो, बाबा जी बिसराये,
श्याम चरण की धूल को तरसे, लेकिन छू भी ना पायें,
ऐसा कौन सा पाप हुआ ये, आँखे झर झर रोवे रे,
हे मोर पाँखुड़ी... ।। २ ।।

बाबा से तू करना सिफारिश, हमको भी अपना ले,
महर नजर हम पे हो जाये, चरणों में ही बिठा ले,
जनम जनम तक हे बड़भागन, ''हर्ष'' तेरा गुण गाये रे,
हे मोर पाँखुड़ी... ।। ३ ।।

(तर्ज : सारी-सारी रात तेरी याद सताये...)

खाटू वाले आजा, तेरी याद सताये,
नींद न आये हमें, बड़ा तरसाये रे, बड़ा तरसाये ।। टेर ।।

दिल को लगाया तोसे, नींद गवांई,
क्यूं नही आते ओ हरजाई-२,
प्यास जिया की बाबा, कौन बुझाये रे, कौन बुझाये ।। १ ।।

आँखे हमारी कान्हा, नीर बहाये,
दूजे जियरा आग लगाये-२
नैनों के मोती कान्हा, क्यूं बिसराये रे, क्यूं बिसराये ।। २ ।।

तेरे दिवाने बने, हम तो कन्हैया,
जाने कब हो, तुमको खबरिया-२,
''हर्ष'' को इतना काहे, तू तड़पाये रे, तू तड़पाये ।। ३ ।।

''रसखान''

(तर्ज : सच्चा है मेरे श्याम का दरबार देख लो...)

भावना में जब इक पठान खो गया,
वो सांवरे की किरपा से रसखान हो गया ।। टेर ।।

काबुल से एक शख्स हिन्दुस्तान आया था,
ख्वाबो में सजाके हसीं तस्वीर लाया था,
शहरे-नजातक लखनऊ वो बंदा आ गया,
इक पान की दुकान पे मेरा श्याम भा गया,
पूछा जो उसने बता है ये कौन शहजादा,
वो पान वाला कहने लगा ''क्या है इरादा''-३,
बोला वो शख्स ढूढ़ता था जिसको ख्वाबों में
ये श्याम तेरा बस गया है मेरी आँखों में-३ ।।

रहता है कहां मुझको बता मिलने जाऊँगा,
इस सांवरे के सजदे में सिर को झुकाऊँगा,
जाके इसे तू ढूढ़ ले मथुरा की गलियों में,
हँसता दिखेगा सांवरा फूलों में कलियों में,

(२)

लेकर के पता श्याम का वृदांवन चल पड़ा,
इक हाथ में तस्वीर दूजे ‘‘जूते को पकड़ा’’-३,
लोगों ने समझा था उसे पागल या दिवाना,
वो पूछ पूछ थक गया पाया ना ठिकाना-३ ।।

पत्थर की चोट खाई उसने फूल समझकर,
सब सहता रहा श्याम चरण धूल समझ कर,
दिल में यही अरमान था बस मिलके जाऊंगा,
देखे बिना हरगिज उसे वापस ना जाऊंगा,
इक सांवरे के भक्त ने उसको पता दिया,
बांके बिहारी लाल का ‘‘मंदिर दिखा दिया’’-३,
मंदिर की द्योढ़ी पे वो आखिर पहुँच गया था,
पंडो ने घुसने ना दिया दिल टूट गया था-३ ।।

(३)

होके निराश बंदा बगीचे में सो गया,
बांके बिहारी श्याम के सपनों में खो गया,
मिलने नहीं सका इसी का गम था हो रहा,
मंदिर में सिसकी भर के मेरा श्याम रो रहा,
नंगे ही पैरों चल पड़ा उस भक्त से मिलने,
उस बंदे के कानों में लगी बांसुरी बजने,
इक नन्हे से बालक ने जाके उसको उठाया,
ख्वाबों में बसी शख्शियत को सामने पाया,
आँखो से उसके आँसुओ की धार बह चली,
झट से गले लगाया और ‘‘बात ये कही’’-३,
जग में तू ‘‘हर्ष’’ इक नया मुकाम पायेगा,
रसखान के तू नाम से पहचाना जायेगा-३ ।
भावना में जब इक पठान खो गया,
वो सांवरे की किरपा से रसखान हो गया ।।

(तर्ज : मेरे नैना सावन भादो...)

काहे गोकुल छोड़ गया रे,
‘‘तुझ बिन मधुबन सूना’’-२ ।। टेर ।।

प्रीत पुरानी वो, यादें सुहानी वो,
ओ कान्हा तुझे, याद नहीं क्या,
सखियों के संग वादे, बचपन की वो यादें,
आजा रे ओ श्याम सलोने, अपनों को यूं सता ना... ।। १ ।।

नैना तरसते हैं, आँसू बरसते हैं,
तुझ बिन मोहन, ग्वालों के संग,
गऊऐं कोन चराये, माखन कोन चुराये,
छोड़ दिया है गूजरियों ने, माखन आज बिलोना... ।। २ ।।

बंशी बजा जा रे, तान सुना जा रे,
सखियों के संग, कुँज गलिन में,
कोन जो रास रचाये, ‘‘हर्ष’’ तू क्यूं ना आये,
जमना तट हो या पनघट हो, सूना है सारा जमाना... ।। ३ ।।

(तर्ज : ये पर्दा हटा दो...)

मैं आस लेकर आया, अरदाश लेकर आया-२,
मेरी आस पूरी करना मेरे श्याम धणी,
अजी अरदाश पूरी करना मेरे श्याम धणी ।। टेर ।।

गया नहीं है खाली तेरे दर से कोई बंदा,
मेहर तेरी हो जाये तो कट जाये यम का फंदा,
यम की तू फांस मिटाना, माया के फंद छुड़ाना-२,
मेरी आस पूरी करना मेरे श्याम... ।। १ ।।

देर भले हो सकती है अंधेर नहीं है बाबा,
आगे पीछे काम सभी के करते हो तुम दाता,
दातार तू कहाये, हारे का साथ निभाये-२,
मेरी आस पूरी करना मेरे श्याम...।। २ ।।

सेवक के मन की क्या बाबा खबर नही है तुझको,
देने में अब देर करो ना सबर नहीं है मुझको,
इस ‘‘हर्ष’’ की सुनके कान्हा, तुम दौड़े दौड़े आना-२,
मेरी आस पूरी करना मेरे श्याम... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आजा तुझको पुकारे मेरे गीत...)

मेरे छलिया SSSSमेरे श्याम रे SSSS,
कान्हा तुझको बुलाये ''तेरा दास रे''-२,
ओ खाटूवाले, ओ मेरे श्याम रे ।। टेरे ।।

सेवा न जानूं तेरी पूजा ना जानूं,
तेरे सिवा दर दूजा न जानूं,
दर पे बुला ले, प्रीत निभाले,
रखले तेरे पास रे ।। १ ।।

नेहा लगाया तोसे प्रीत लगाई,
आजा रे मेरे मीत कन्हाई,
क्यूं तड़पाये, काहे रुलाये,
छूटी जाये आस रे ।। २ ।।

तरसेगा कब तक बेटे का मनवा,
आयेगा कब तू मेरे अंगनवा,
दरश दिखा रे, ''हर्ष'' पुकारे,
मेरी ये हर सांस रे ।। ३ ।।

श्री श्याम कहानी

(तर्ज : सुनो हे राम कहानी...)

कहता है जग सारा, शीश का दानी,
श्याम कहानी, सुनो जी श्याम कहानी ।। टेर ।।

मां अहिलावति के प्यारे, भक्तों की आँख के तारे,
वो सूर्यवंश के दीपक, पाण्डव कुल के उजियारे,
निर्बल के साथी की-२, दुनिया दिवानी ।। श्याम .. ।।
शिव-शक्ति को खुश कीन्हा, बदले में ये वर लीन्हा,
हारे का साथ निभाऊं, बालक ने वचन ये दीन्हा,
तीन बाण पाये जिनका-२, कोई न सानी ।। श्याम .. ।।
मां की आज्ञा सिर धारी, कर लीले की असवारी,
चल पड़ा समर भूमी को, वो बर्बरीक बलकारी,
महाभारत मैं जाके देखूं-२, मन में ये ठानी ।। श्याम .. ।।
कान्हा ने खेल रचाया, धर वेश विप्र का आया,
बालक की परीक्षा लीन्ही, और शीश दान में पाया,
घर-घर में तेरी पूजा-२, होगी महादानी ।। श्याम .. ।।
नारायण की सब माया, खाटू में धाम बसाया,
हारे के रखवारे ने, दुनिया में नाम कमाया,
''हर्ष'' सुनाये गाथा-२, अपनी जुबानी ।। श्याम .. ।।

(तर्ज : जनम जनम का साथ है...)

श्याम धणी तेरे नाम से गुजारा हमारा,
रहे हमेशा हम भगतों के सिर पे हाथ तुम्हारा ।। टेर ।।

बिन माझी के नैया, चलती दम पे तेरे,
बिन बोले तू बाबा, हरता दुखड़े मेरे,
बीच भंवर अटके नैया तो, देता श्याम किनारा ।
श्याम... ।। १ ।।

स्वार्थ के संसार ने, कितना मुझे सताया,
शरण तुम्हारी जो पड़ा, तूने गले लगाया,
उतर गया प्यासे जीवन में, बनके जल की धारा ।
श्याम... ।। २ ।।

''हर्ष'' तेरे चरणों में, हरदम रहे ठिकाना,
भूल अगर हो जाये, दिल से उसे भुलाना,
तेरी किरपा बनी रहेगी, ये विश्वास हमारा ।
श्याम... ।। ३ ।।

(तर्ज : याद पिया की आने लगी...)

बंशी जो थामी हाथो मे, श्याम जिया लुभाने लगे,
हाय भीगी-भीगी रातो में ।। टेर ।।

मधुवन में हाय धूम मचे, सखियों के संग रास रचे,
मुरली वाला गिरधारी, राधा के संग खूब जंचे,
बोले पपीहा जो रातों मे... ।। १ ।।

होले होले बूंद पड़े, सखियों का मन आज जले,
करे आज क्या बेचारी, दिल पे किसका जोर चले,
सावन की बरसातों में... ।। २ ।।

यूं ना मोहन अंग लगा, ''हर्ष'' का जियरा घबराये,
ऐसे कलाई ना झटका, सिर से चुनरिया उड़ जाये,
वश में किया तेरी बातों ने... ।। ३ ।।

‘‘नव वर्ष’’

(तर्ज : जब कोई नहीं आता...)

जो बीत गया प्यारे, ना लौट के आयेगा,
नव वर्ष ही खुशियों के, पैगाम लायेगा ।। टेर ।।

बाबा तेरे बच्चो की, इतनी सी ख्वाइश है,
तू सामने हो हरदम, बस इतनी गुजारिश है,
हर पल हमको तेरे, नजदीक लायेगा ।। १ ।।

हर साल महीना दिन, सेवा में तेरी बीते,
सरकार रिझाकर हम, ह्रदय को तेरे जीते,
आने वाला हर पल, बाबा को रिझायेगा ।। २ ।।

नव वर्ष में मिलजुल के, गुणगान करें तेरा,
हे निर्बल के साथी, हम ध्यान धरे तेरा,
ये ‘‘हर्ष’’ तो जीवन भर, तेरे गीत गायेगा ।। ३ ।।

भजन हरियाणवी

(तर्ज : त्रिलोकी को नाथ जाट को बणग्यो हाली रे...)

क्यूं घबरावे माया श्याम की, अजब निराली रे,
भगतां की बगिया का बाबा, श्याम रूखाली रे ।। टेर ।।

प्रेम करेगा प्रेम मिलेगा, प्रेम की सगली माया रे,
प्रेम का भूखा सेठ सांवरा, साग विधुर घर खाया रे,
प्रेम मिल्या तो श्याम जाट का, बणग्या हाली रे ।। १ ।।

आँख मीच कर नानी ध्याई, भात भरण झट आया रे,
भीड़ पड़ी भगतां पर जद भी, आके काम बणाया रे,
श्याम धणी भगतां की हरदम, विपदा टाली रे ।। २ ।।

ध्यान मगन हो बैठ निगोड़ा, छोड़ जगत का फेरा रे,
बिन बोल्यां तेरा काम बणैगा, मिटजा संकट तेरा रे,
बंद पड़ी तकदीर यो खोले, बणकैं ताली रे ।। ३ ।।

दर आये का मान करै सै, सबकी आस पुरावे रे,
राजा रंक बराबर सारे, सांचा न्याय चुकावे रे,
‘‘हर्ष’’ बावला भर देगा तेरी, झोली खाली रे ।। ४ ।।

(तर्ज : ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े...)

ओ श्याम धणी के प्यारे लीले घोड़े,
मेरे सरकार को ला, मेरे दिलदार को ला,
रखले रे आज मेरी लाज तू ।। टेर ।।

मेरे बाबा को घोड़े, तुझपे ही नाज है,
लाना पड़ेगा मेरा श्याम तोहे आज है,
खाटू के बीच बैठा, सांवरिया सरकार है,
कहना ओ श्याम तेरी, भगतों को दरकार है,
लीला महान आजा, बनके तूफान आजा,
रखले रे आज मेरी... ।। १ ।।

जाके बाबा से कहना, 'हर्ष' को संभाल तू,
उनको बताना प्यारे, भगतों का हाल तू,
करदे हम भगतों पे, थोड़ा सा उपकार तू,
लेकर के आना मेरा, सांवरा सरकार तू,
लीला महान आजा, बनके तूफान आजा,
रखले रे आज मेरी... ।। २ ।।

(तर्ज : आपकी नजरों ने समझा...)

देख ले नजरें उठा कर, श्याम की तस्वीर को,
अपनी आँखो में बसाकर, खोल ले तकदीर को ।। टेर ।।

क्या कहूँ, कैसे कहूँ, श्याम की दरियादिली,
जिनके दिल में ये बसा, उनकी बस किस्मत खुली,
तोड़ दी इस सांवरे ने, कष्टों की जंजीर को ।
देख ले नजरें... ।। १ ।।

कर जरा विश्वास तू, श्याम से नेहा लगा,
हो गई जिसपे महर, कर दिया उसका भला,
एक पल में पा गया वो, श्याम की जागीर को ।
देख ले नजरें... ।। २ ।।

डूब कर गोता लगा, प्यार का सागर है ये,
गहराई में जो गये, प्रेम के मोती चुने,
''हर्ष'' तू भी आजमा ले, खुद तेरी तकदीर को ।
देख ले नजरें... ।। ३ ।।

''झूलनोत्सव पैरोडी''

(तर्ज : बन्ना रे...)

राधा ऐ, सावण महनों आयो-२,
कोई झूलणे की-२, रूत है आई म्हारी हिवड़े री कोर-२,

कान्हुड़ा, हिवड़ो घणो हर्षायो-२,
कोई छम छम-२, करतो नाचे म्हारे मनड़ो रो मोर-२,

(तर्ज : मोरिया...)

राधिका, झूलो घलायो हरियल बाग में-२,
आजा आजा ऐ-२, हिण्डोला हिण्डा प्राण पियारी,
झूलो घलायो हरियल बाग में-२,
सांवरा, होले झूलाये म्हारो जी डरे-२,
झोटा धीरे-धीरे-२, दीजे मन रा मीत सांवरा,
होले झुलाये म्हारो जी डरे-२,

(तर्ज : पल्लो लटके...)

सावण बरसे सुरंगो सावण बरसे-२,
कि हिण्डो हिण्डे राधा-श्याम, म्हारो हियो हरषे ।। टेर ।।

हाथां में ले हाथ सांवरो, गले में घाली बांथी,
खड़ी शरम सै लाल हुई रे धड़कण लागी छाती,
कि हिण्डो, हिण्डे राधा-श्याम म्हारो हियो हरषे ।। १ ।।

चांदी के पाटे बांधी जी, रेशम की इक डोरी,
होले होले श्याम झुलावे, झूले राधा गोरी,
कि हिण्डो, हिण्डे राधा-श्याम म्हारो हियो हरषे ।। २ ।।

(तर्ज : खड़ी रे नीम के नीचे...)

राधा-श्याम की जोड़ी लागे सोवणी,
कान्हुड़ो झुलावे झूलो, झांकी मन मोहणी ।। टेर ।।

बादल माही बिजली चमकी, राधाजी घबराई जी,
सेठ सांवरो थाम हाथ ने, झटपट अंग लगाई जी,
सरक गई राधा के सिर सूं ओढ़णी । राधा-श्याम... ।। १ ।।

इन्द्र देवता खुश होकर के, रिमझिम मेह बरसावे जी,
देवलोक से देवि देवता ''हर्ष'' पुष्प बरसावे जी,
आज मोरिये के संग नाचे मोरणी । राधा-श्याम... ।। २ ।।

(तर्ज : लाल मेरी पत राखियो...)

ओ श्याम मेरे मुझे दर पे बुलाले मेरे बाबा-२,
सेवक को, पायक को,
तेरे दरबार बुलाले, मेरे सरकार बुलाले,
अरे दातार बुलाले, मुझे इकबार बुलाले ।। टेर ।।

कितनी उम्मीद बाबा, तुझसे लगाई,
अपने भगत की, करलो सुनाई,
श्याम मेरे मेरी अरजी तू सुन मेरे बाबा ।। सेवक को... ।। १ ।।

लाखों की तूने बाबा, बिगड़ी बनाई,
तेरा भगत देवे, तुझको दुहाई,
श्याम मेरे मेरी बिगड़ी बना मेरे दाता ।। सेवक को... ।। २ ।।

काहे सताये बाबा, मुझको रुलाये,
'हर्ष' तुम्हारा बेटा, तुझको बुलाये,
श्याम मेरे तेरे बेटे की आस पुरादे ।। सेवक को... ।। ३ ।।

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में...)

देखा करो ना साँवरे, हमको यूँ प्यार से,
सेवक हुए रे बावरे, नजरों की मार से ।। टेर ।।

खँजर बनी है साँवरे, बाँकी अदा तेरी,
जी भर के देखा तो बता, कैसी खता मेरी,
घायल सा कर दिया मुझे, बस एक वार से ।। १ ।।

चितवन तुम्हारी क्या कहें, मस्ती बरस रही,
पाने को इक झलक तेरी, दुनिया तरस रही,
देखा जो पल में हो गये, हम बेकरार से ।। २ ।।

घुँघराले गेसूं यूं लगे, ज्यूं तितलियाँ उड़े,
मुस्काये जब तू साँवरा, तो बिजलियाँ गिरे,
रोशन हमारे दिल हुए, तेरे दीदार से ।। ३ ।।

दिल में हमारे प्यार का, सैलाब फट पड़े,
नजरों की मार से भगत, बेताब हो बड़े,
जब जब तू देखे 'हर्ष' को, थोड़ा खुमार से ।। ४ ।।

(तर्ज : कितनो बड़ो मेरो भाग्य है मैया...)

कदसूँ खड्या थारा दास ओ साँवरिया, कइयाँ देर करी,
दरशण दीज्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। टेर ।।

खाटू वाला साँवरा थारी, ओल्यूँ आवे भोत जी,
थां बिन थारे सेवकां रो, जीणो भी है मोत जी,
बेगा आओ श्याम जी, कटें नहीं दिन रैन,
इब तो देख्याँ ही पड़े, हिवड़े माही चैन ।। कदसूँ खड्या... ।।

थे तो म्हारा हो धणी और, म्हे हाँ थारा दास जी,
भगतां री ओ साँवरा थे, आज पुराओ आस जी,
चौखट पर अटक्या पड्या, बाबा म्हारा नैण,
बेगा आके बोलद्यो थे, मुण्डे सूँ दो बैण ।। कदसूँ खड़्या... ।।

लाखां के मन की करी थे, लखदातारी श्याम जी,
बड़ा बड़ा थे कारज सार्या, छोटो सो म्हारो काम जी,
'हर्ष' उडीके साँवरा, कदसूं थारी बाट,
भगतां स्यामी आणे में, थारे क्याँकी आँट ।। कदसूँ खड़्या...।।

(तर्ज : रखवाला प्रतिपाला मेरा लाल...)

नन्दलाला, किरपाला, मेरा गोवर्धन गोपाला,
पीत वसन कानों में कुण्डल, गल बैजन्ती माला रे माला ।।

इक माता की कोख से जन्मा, दूजी माँ ने पाला,
कारागृह के ताले खुल गये, बन गया नन्द का लाला रे लाला ।। १ ।।

गौरवरण वृषभान दुलारी, साँवरिया है काला,
इक मुरली की तान सुनाकर, अपने वश कर डाला रे डाला ।। २ ।।

इन्द्रदेव का कोप मिटाया, नख पे गिरिवर धारा,
गोवर्धन गिरिराज कहाया, वो गोकुल का ग्वाला रे ग्वाला ।। ३ ।।

सखा सुदामा दर पे आया, द्वारपाल ने टाला,
तन्दुल खाये कंठ लगाये, आके दीन दयाला दयाला ।। ४ ।।

युग युग रूप बदलता आया, चार भुजाओं वाला,
'हर्ष' कहे आकर भगतों की, विपदा को है टाला रे टाला ।। ५ ।।

(तर्ज : लुट रहा लुट रहा...)

राधे राधे काम मेरा बनवा दे,
साँवले सलोने से मिलवा दे ।। टेर ।।

राधे प्यारी श्याम बिहारी, बात तेरी ना टाले है,
जहाँ पड़े है नजर तुम्हारी, वही नजर वो डाले है,
डाल नजर मुझ पर थोड़ी, काम मेरा भी पटवा दे ।। १ ।।

सुन करके आवाज तुम्हारी, दौड़ा दौड़ा आयेगा,
जी भरके देखूँगा उसको, काम मेरा बन जायेगा,
मुरझाई बगिया मेरी, आज जरा तू खिलवा दे ।। २ ।।

वृंदावन का पत्ता-पत्ता, नाम तुम्हारा जापे है,
सुन्दर श्याम के पहले राधा, नाम तुम्हारा साजे है,
राधे श्याम का 'हर्ष' मुझे, दर्श जरा तू करवा दे ।। ३ ।।

(तर्ज : चलते-चलते यूँ ही कोई मिल...)

जपते-जपते, यूँ ही बीते जिन्दगानी,
तेरा नाम जपते-जपते, तेरा नाम जपते जपते ।। टेर ।।

तुम एक बार मोहन, ''सेवक को आ सम्भालो''-२,
''ये जुबां थकी नहीं है-२, तेरा नाम रटते-रटते,
यूँ ही बीते... ।। १ ।।

तू नजर कहीं जो आये, सजदे में सिर झुकाऊँ-२,
मेरी साँस चल रही है-२, तेरी आह भरते-भरते-२,
यूँ ही बीते... ।। २ ।।

तेरा इन्तजार करके, ये दिवाना रो रहा है-२,
मेरी धीरज छूटा जाये-२, तेरी राह तकते-तकते-२,
यूँ ही बीते... ।। ३ ।।

अब आखिरी तमन्ना, तेरा 'हर्ष' कह रहा है-२,
होठों पर बस मेरे हो-२, तेरा नाम मरते-मरते-२,
यूँ ही बीते... ।। ४ ।।

(तर्ज : ओ यारा वे...)

ओ कान्हा रेSSS आजा रे-२,
मुझे कुछ हो रहा है, कहाँ तू सो रहा है,
याद में तेरी कबसे-२, मेरा दिल रो रहा है ।। ओ कान्हा रे...
लाख बुलाया तुझको, मोहन लेकिन तू ना आया-२,
आखिर तेरे दर्शन को ये दिल मेरा भर आया-२,
कभी मुस्काना तेरा, हमें तड़पाना तेरा,
नैनों से नैन मिलाके, कभी इतराना तेरा,
बहुत याद आ रहा है-२, बड़ा तरसा रहा है, ओ कान्हा रे... ।।
सुनी आँखे पल पल कान्हाँ, तेरी राह निहारे-२,
इन नैनों की प्यास बुझाने, जल्दी से तू आ रे-२,
चाँद का टुकड़ा जैसे, तेरा ये मुखड़ा जैसे,
सँवरना ऐसे तेरा, सजा हो बनड़ा जैसे,
बहुत याद आ रहा है-२, सितम सा ढ़ा रहा है, ओ कान्हा रे... ।।
आज अगर तुम ना आओगे, होगी लोग हँसाई-२,
'हर्ष' जमाने भर में होगी, आज तेरी रुसवाई-२,
तेरा चोरी से आना, तेरा माखन चुराना,
कदम के नीचे कान्हा, तेरा बंशी बजाना,
बहुत याद आ रहा है-२, सताये जा रहा है, ओ कान्हा रे... ।।

।। झूला भजन ।।

(तर्ज : छलिये का वेश बनाया...)

कान्हा थामे है, राधा की बैंया,
झूला झूले रे राधा कन्हैया,
झूमे धरती गगन, चूमे देखो कदम,
राधारानी के ये पुरवैया ।। टेर ।।
आज गोकुल में मस्ती है छाई,
झूला झूलन की बेला है आई,
तान छेड़े है बंशी बजैया ।। १ ।।
बान्धी चाँदी के पाटे में डोरी,
बैठी झूले के आसन पे गोरी,
होले होले झुलावे कन्हैया ।। २ ।।
आज सावन के झूले सजे हैं,
कान्हा राधा संग रास रचे हैं,
रास घलवाये रास रचैया ।। ३ ।।
'हर्ष' सावन की बरसे बदरिया,
देखो राधा की भीगे चुनरिया,
लेवे लेवे रे सखियाँ बलैया ।। ४ ।।

(तर्ज : पान खाये सैंया हमारो...)

श्याम तेरा जलवा निराला,
साँवली सी सूरत तेरे होठ लाल-लाल,
टेढ़ी मेढ़ी तिरछी अदायें,
तिरछी अदाओं ने किया है कमाल ।। टेर ।।

भोले से मुख पे, लटके देखो,
घुँघराले गेसू की उलझी सी लटकन-२,
ओऽऽऽ इनके बदन पे, सज रही देखो,
केशरिया रंग की ये ''प्यारी सी अचकन''-२, श्याम तेरा...

तीखी निगाहें, सुरमई आँखे,
कर गया जादू सलोना सा मुखड़ा-२,
ओऽऽऽ मोर मुकुट पे, हीरा दमके,
हमको यूं लागे है, ''चन्दा का टुकड़ा''-२, श्याम तेरा...

'हर्ष' हमारे होश उड़ाये,
कान्हा ये तेरी प्यारी सी चितवन-२,
ओऽऽऽ गजरों की शोभा, वरणी न जाये,
महक उठा ज्यूं, ''फूलों से उपवन''-२, श्याम तेरा...

(तर्ज : उठे तो बोले राम...)

जुगल जोड़ी प्यारी, जुगल जोड़ी प्यारी,
श्री राधा जी के संग विराजे, साँवलियो गिरधारी ।। टेर ।।

कान्हुड़ो कालो, राधा तो गोरी जी,
बनड़ी सी लागे है, गूजर की छोरी जी,
निरख जावाँ वारी, निरख जावाँ वारी, श्री राधाजी के.... ।।

कान्हुड़ो चन्दा, राधा चकोरी जी,
म्हारो मनड़ो मोह लियो, या सुन्दर जोड़ी जी,
जुलम कर्‌यो भारी, जुलम कर्‌यो भारी, श्री राधाजी के.... ।।

कान्हुड़ो ठाकुर, ठकुराणी राधा जी,
आधे में कान्हुड़ो, आधे में राधा जी,
द्यो लूण राई वारी, द्यो लूण राई वारी, श्री राधाजी के.... ।।

कान्हुड़ो चंचल, राधा है भोली जी,
नैणा में 'हर्ष' के, मिश्री सी घोली जी,
जावाँ म्हें बलिहारी, जावाँ म्हें बलिहारी, श्री राधाजी के.... ।।

(तर्ज : रिमझिम के गीत सावन गाए...)

कर दे रे श्याम कृपा करदे, करदे, मैं तरसूं दर्शन को ।।

युग बीते, तू ना आया, तेरे वादे को तूने भुलाया,
ये ना सोचा, ये ना जाना, अपने बेटे को कितना रूलाया,
आजा रे, श्याम मेरे आजा,आजा, मैं तरसूं दर्शन को ।। १ ।।

मेरी साँसे, सूनी आँखे, बस चौखट पे ठहरी है, जा के,
सोये सपने, सोये अरमां, कान्हा कौन जगाये इन्हें, आ के,
धड़के रे, आज जियरा धड़के, धड़के, मैं तरसूं दर्शन को ।। २ ।।

दिल टूटा, तू क्यूँ रूठा, मोहे अपना बनाके, तूने लूटा,
'हर्ष' आओ, ना तड़पाओ, तेरे बेटे का धीरज है छूटा,
दे दे रे, श्याम दर्शन दे दे, दे दे, मैं तरसूं दर्शन को ।। ३ ।।

(तर्ज : चल अकेला चल अकेला...)

कर भरोसा कर भरोसा कर भरोसा,
मेरे खाटू वाले श्याम धणी का कर भरोसा ।। टेर ।।

पुकारा नाम गज ने श्याम दौड़ा दौड़ा आया, आऽऽऽऽऽ
भरोसा था तभी नरसी की हुण्डी को भुनाया, आऽऽऽऽऽ
है देव दयालू करमा के घर, खाया जाके परोसा ।। १ ।।

भरोसा कर लिया जिसने, उसी ने श्याम पाया है, आऽऽऽऽऽ
भगत का साथ आकर के, सदा इसने निभाया है, आऽऽऽऽऽ
जो श्याम शरण में आया उसको, हरदम पाला पोसा ।। २ ।।

दयालू साँवरे सा इस जहाँ में है नहीं दूजा, आऽऽऽऽऽ
तू करके देखले इक बार मेरे श्याम की पूजा, आऽऽऽऽऽ
ये 'हर्ष' कहे तू श्याम का सेवक, बनके रहे हमेशा ।। ३ ।।

(तर्ज : आज पुरानी राहों में...)

श्याम तुम्हारे चरणों का, दास पुराना आया है,
नैनों से ढ़लते आँसू, ले नजराना आया है ।। टेर ।।

लाख बुलाने पर ऐ मोहन, निर्धन के घर आ न सका,
दीन गरीब ये तेरा सेवक, किरपा तेरी पा न सका,
क्या भूल गया, बस ये कहदे,
कोई याद बहाना आया है ।। १ ।।

प्रेमीजन के घर में तुमको, अक्सर ही जाते देखा,
लिखने वाले मेरी कैसी, लिख डाली किस्मत रेखा,
विरहा की घड़ी, काटे ना कटी,
वो याद जमाना आया है ।। २ ।।

ड्योढ़ी पर इक ओर सुदामा, न्योता लेकर आया है,
तन्दुल की सौगात नहीं पर, भाव भरा दिल लाया है,
क्या भूल हुई, ऐ ‘हर्ष’ बता,
तेरे द्वार दिवाना आया है ।। ३ ।।

(तर्ज : दुनिया बनाने वाले...)

ओ रे सलोने कान्हा, कैसी तुम्हारी ये माया,
तेरा भेद ना कोई पाया ।। टेर ।।

इन्द्र का गर्व तूने, दूर भगाया,
ब्रह्मा के मोह को, भंग कराया,
त्रिलोकी खुद तेरे दर्शन को आया-२,
तेरे वैभव का कोई पार न पाया,
ऐसा तू वैभवशाली, गोकुल में माटी खाया ।। १ ।।

सात दिनों तक तूने, गिरिवर को धारा,
जाने कितने ही तूने, असुरों को मारा,
कालिया नाग तूने पल में पछाड़ा-२,
कोई नहीं है बल में सानी तुम्हारा,
गोकुल में तू बलशाली, ग्वालों से पिटता आया ।। २ ।।

(२)

गोकुल की गोपी तेरे, नाज उठाये,
उनके ही संग कान्हा, रास रचाये,
बंशी की धुन पे, गुजरिया है वारी-२,
तेरी दिवानी सारी गोकुल की नारी,
ऐसा तू प्रेम दिवाना, चोरी से माखन खाया ।। ३ ।।

तीखी निगाहें तेरी, तिरछी अदायें,
इक पल में सबको, अपना बनाये,
तेरी झलक हम पाने को आतुर-२,
तू है कन्हैया सारी दुनिया का ठाकुर,
सृष्टि का दाता 'हर्ष', गोकुल में गऊएँ चराया ।। ४ ।।

कोई पूछ ले जो मुझसे कैसा है साँवरा ।
वो देख ले सँवर के बैठा है साँवरा ।।

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय ।।
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे ।
भक्त आरती गावे, जय-जय कार करे ।। ॐ जय ।।
जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे।। ॐ जय ।।
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत 'आलूसिंह' स्वामी, मनवाछिंत फल पावे ।। ॐ जय ।।
जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।